विषय सूची

1. अंकों की उत्पत्ति

अंक या संख्या का शब्द एवं क्रिया से घनिष्ट संबंध है। (0) शून्य निराकार ब्रह्म या अनन्त का प्रतीक है। शून्य से सृष्टि की उत्पत्ति हुई है एवं शून्य में ही सब कुछ विलीन हो जाता है। यह शून्य सूक्ष्म से सूक्ष्मतर एवं वृहद से वृहदाकार है। हम जब भी अपनी दृष्टि चारों ओर घुमाएंगे तो हमें सब कुछ गोल ही गोल दिखाई देता है। यह गोल ही विश्व है। आकाश, पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि सभी कुछ गोलाकार हैं। हमारे शरीर में स्थित विभिन्न द्वार भी गोल ही हैं। इसी लिए शून्य की शक्ति सबसे बड़ी है और इस शून्य को हमारे ऋषि–मुनियों ने खोजा, जिसे आज पूरा विश्व मानता है। हम आज कंप्यूटर के युग में पहुँच गये हैं और इस कंप्यूटर का आधार भी हमारा शून्य ही है, जिसे कंप्यूटर की भाषा में डॉट [DOT] कहा जाता है।

शून्य से ही सृष्टि की उत्पत्ति हुई और सृष्टि एक कहलायी अर्थात इस सृष्टि को संचालित करने वाली कोई एक शक्ति है, जो अदृश्य है एवं विधिपूर्वक इस सृष्टि का संचालन कर रही है। उसे हमने ब्रह्म की संज्ञा प्रदान की । अतः ब्रह्म एक है एवं उसे पुकारने के नाम अनेक हैं। मानव ने जब आँखें खोलीं तो उसे सूर्य एवं चन्द्र दो तारे आकाश में दिखाई दिये। अतः प्रकाशित ग्रह दो ही हैं, तीसरा नहीं है। जो नियमित मनुष्य का मार्ग प्रदर्शन करने की क्षमता रखता हो। सूर्य नित्य दिन को उदय होता है। अतः उसे प्रथम स्थान प्राप्त हुआ और एक संख्या का प्रतिनिधित्व मिला। अंक एक के स्वामी सूर्य का आत्मा से संबंध है। यह व्यक्ति या समष्टि की आत्म शक्ति का ज्ञान कराता है।

चन्द्रमा ने रात बनायी और दो की संख्या चन्द्रमा की हुई। चन्द्र का भौतिक सुखों से संबंध है। यह मानव को मन की विचार शक्ति प्रदान करता है। सूर्य को पुरुष ग्रह के रूप में स्वीकार किया गया। जिस प्रकार पुरुष एक है एवं द्वितीय नारी है। नारी के दो रूप प्रत्यक्ष्य हैं। एक कन्या रूप, दूसरा पत्नी रूप। दोनों जगह उसकी अलग पहचान है। चन्द्र को स्त्री ग्रह माना गया और चन्द्र की कलाओं की तरह ही नारी की कलाएं हैं। जिस तरह चन्द्र सत्ताईस दिन में सभी नक्षत्रों का भोग करता है उसी तरह नारी भी सत्ताईस दिन के पश्चात शुद्ध होती है।

जब मानव ने आकाश पृथ्वी एवं जल अथवा समुद्र को देखा तो उसे ब्रह्म की शक्ति का ज्ञान हुआ और तीन की संख्या प्रचलन में आयी। इसी लिए तीन के अंक को विस्तार का अंक माना गया और इसका स्वामित्व गुरु को प्रदान किया गया। गुरू का आत्मा से संबंध है। यह सृष्टि के फेलाव तथा आत्मा के प्रसार व विस्तार के ज्ञान का बोध कराता है। हमारे तीन ही देव हैं जो त्रिशक्ति के अधिष्ठाता हैं। इनमें तीन गुण समाये हुए हैं। सतोगुणी ब्रह्मा, रजोगुणी विष्णु एवं तमोगुणी शिव। इनकी तीन शक्तियाँ उत्पत्ति, पालन एवं संहार हैं। अथवा इच्छा ब्राह्मी शक्ति, क्रिया वैष्णवी शक्ति एवं गौरी शक्ति ज्ञान है। यही चन्द्र, सूर्य एवं अग्नि हैं। बचपन जवानी और बुढ़ापा भी यही है। बचपन में शरीर चन्द्र कलाओं की तरह विकसित होता है। जवानी में सूर्य की तरह प्रकाशित एवं बृद्धावस्था में अग्नि की ओर उन्मुख होता है। शरीर में तीन ही प्रमुख नाड़ी इड़ा पिंगला सुषुम्ना हैं। मनुष्य के तीन ही कर्म हैं संचित, प्रारब्ध एवं आगामी।

जब उसने चारों ओर नजर घुमायी तो उसे चार दिशाएं दिखाई दीं, जिससे चार की संख्या उदित हुई। यही चारों दिशाएं हमारे चारों वेदों का, चारों उप वेदों का, चारों तरफ के आदमियों का, अर्थात चारों वर्णो का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसे राहू या हर्षल ग्रह के नाम किया गया, जो परिवर्तन, आक्रामकता का द्योतक है। मानव पर जब भी विपत्ति आती है चारों ओर से ही आती है। हर्षल का भौतिक सुखों से संबंध है। यह भौतिक जगत में शरीर को जीवनी शक्ति प्रदान करता है। मनुष्य की जाग्रत आदि चार अवस्थाएं इससे प्रकट होती हैं। चारों धर्म, चारों तीर्थ इसी संख्या में समाहित हैं। देह चार प्रकार की होती है उद्भिद वृक्ष, स्वेदज कृमि कीट, अण्डज सर्प मछली पक्षी एवं जरायुज मनुष्य। अन्नमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय यही हमारे चार कोष हैं जो मानव शरीर में स्थित हैं।

इसके बाद मानव जीवन ने अपनी मूलभूत आवश्यकताओं में पाँच तत्वों को पहचाना आकाश, वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी इनके गुणों को शब्द, स्पर्श रूप, रस एवं गंध को जाना। उसने इनके अलग–अलग पाँच देव निरूपित किये और पाँच के अंक की पहचान हुई। देव विद्या, बुद्धि एवं वाणी के दाता हैं। अतः पाँच की संख्या का आधिपत्य युवराज बुध को प्रदान किया गया। बुध का संबंध बौद्धिक सुखों से है। यह बुद्धि एवं विवेक का ज्ञान कराता है। पाँच की संख्या हमारी पंच शक्ति, पंच रत्न, सम्मोहनादि पंच वाण, पंच कामदेव, पंच कला, पंच मकार, पंच भूत, पंच ऋचा पंच प्राणों आदि का सृजन करती है।

तत्पश्चात मानव रस में लीन हुआ और छह रसायनों – मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त एवं कषाय का ज्ञान प्राप्त किया। यही हमारे छह दर्शन – शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिष अथवा वेदान्त, सांख्य, मीमांसा, वैशेसिक, न्याय एवं तर्क हैं। हमारे अम्नाय भी छह ही हैं पूर्वाम्नाय, दक्षिणाम्नाय, पश्चिम्नाय, उत्तराम्नाय, उर्ध्वाम्नाय एवं अधाम्नाय हैं। वसन्तादि छह ऋतुएं, छह आमोदादि गुण, छह कोष, छह डाकिनी, छह मार्ग, षट्कोण यंत्र एवं छह आधर हैं। छह की संख्या शुक्र ग्रह को प्राप्त हुई। शुक्राचार्य मृतसंजीवनी विद्या से ले कर तंत्र मंत्र एवं चौंसठ कलाओं के जानकार थे, जो शुक्र ग्रह के प्रभाव में दर्शित होता है। शुक्र बौद्धिक सुख प्रदान करता है। इसका मानव की भावना एवं संवेदनाओं पर सीधा असर होता है। समग्र ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान और रूप इन्ही छह गुणों की समष्टि को भग कहते हैं। शरीर की छह अवस्थाएं भूख, प्यास, शोक, मोह, जरा–वृद्धावस्था और मृत्यु हैं। पिता के शुक्र से स्नायु अस्थि मज्जा माता के रक्त से चमड़ी मांस रक्त कुल छह का योग शरीर में रहता है।

जब उसने निरन्तर आकाश मण्डल को निहारा तो उसे सप्त ऋषियों के दर्शन हुए, सप्त नदियों को देखा, नदियों की सप्त धाराओं को देखा, संगीत के सात स्वरों को पहचाना और सात के अंक का आविष्कार हुआ। यही हमारे उच्च श्रेणी के सप्त लोक हैं तथा नरक के भी सप्त द्वार हैं। अंक सात का अधिष्ठाता केतु या नेपच्यून ग्रह को माना गया। इसीलिए कुछ ग्रन्थों में केतु को मोक्ष का प्रतीक माना गया है। नेपच्यून बौद्धिक सुख प्रदान करता है। यह मनुष्य को कल्पना शक्ति प्रदान करता है। सात की संख्या हमारे सात लोक, सात पर्वत, सात द्वीप, सात पाताल, सात समुद्र, सात ग्रह, सात राजा, सप्त ऋषि, सप्त समिधा, अग्नि की सप्त जिव्हा, सूर्य रथ के सात घोड़े, सात रंग एवं सप्त धातुओं का प्रतिनिधित्व करती है।

इन सबकी रक्षा हेतु मानव ने अष्ट भैरव, अष्ट सिद्धि, अष्ट पीठ आदि की उपासना की। यही आठ शनि प्रभावित अंक कहलाया, जो सबको या तो कष्ट देता है या कष्ट से मुक्ति देता है। शनि का संबंध भौतिक सुखों से है। शनि के पास शरीर को क्षय करने वाली शक्तियाँ रहतीं हैं। हमारे आठ ही वसु (सर्प), अष्ट माताएं, अष्ट नाड़ी एवं मर्म, अष्ट गंध इत्यादि तथा अष्ट पाश – घृणा, लज्जा, भय, शोक, जुगुप्सा, कुल, शील एवं जाति हैं। इन अष्ट पाशों में जीव बंधा हुआ है और जो इनसे मुक्त है वह सदाशिव है।

इसके बाद मानव ने विभिन्न रूपों में नौ देवियों, नौ रत्नों, नौ निधियों, नौ रसों, नौ प्राण, नौ दूतियों एवं नौ कुमारियों को देखा और नवात्मक सभी वर्ग तथा मण्डल इस नौ के अंक से संचालित होते हैं। यह नौ का अंक स्वतंत्र अंक कहलाया और इसका अधिष्ठाता मंगल ग्रह बना। जो ग्रह मण्डल का सेनापति है। मंगल का आत्मा से संबंध है। यह स्वतंत्र भावना का ज्ञान कराता है। हम किसी भी संख्या को कहीं तक ले जाएं उसका कुल योग नौ से अधिक नहीं हो सकता है। वैसे हमारी जितनी भी गणना या ज्यामितीय सूत्र हैं वे सब नौ के अंक पर ही विराम लेते हैं। उदाहरणार्थ कुछ ज्यामितीय के सिद्धांत प्रस्तुत हैं:

सत युग प्रमाण	1728000 = 9
त्रेता युग प्रमाण	1296000 = 9
द्वापर युग प्रमाण	864000 = 9
कलि युग प्रमाण	432000 = 9
नक्षत्र मास	1809 = 9
एक वर्ष में दिन	360 = 9
भचक्र में अंश	360 = 9
चन्द्र नक्षत्र	27 = 9
नक्षत्र चरण	108 = 9
ग्रह	9 = 9
एक महायुग के सौर मानव वर्ष	4320000 = 9
एक कल्प में सूर्य के भगण	4320000000 = 9
एक कल्प में चन्द्र के भगण	57753333000 = 9

हम मंत्र जपने की माला का प्रयोग करते हैं। जो 27, 54 या 108 दाने की रहती है। इनका योग भी 9 ही होता है। मनुष्य दिन–रात में कुल 21600 सांसे लेता है, जिसका योग 9 होता है। हमारे शरीर में 72000 हजार नाड़ियां मानी गयी हैं, इनका योग 9 होता है। 18 पुराण एवं 108 उपनिषदों का योग भी 9 होता है।

तंत्र में एक सिद्धान्त दिया गया है कि त्रिगुणात्मक सृष्टि, अर्थात यह सृष्टि तीन से गुणित मानी गई है। अतः नौ अंक के बाद तीन एवं छह अंको का विवेचनः–

युगीय सावन दिन 1830 = 3

62 चन्द्र मासों के दिन	1830 = 3
95 वर्षों में सावन दिन	34770 = 3
1178 चन्द्र मासों में दिन	34770 = 3
तिथि	1830 = 3
क्षय तिथि	30 = 3
वृद्ध नक्षत्र	21 = 3
मास	12 = 3
एक मास में दिन	30 = 3
एक राशि में अंश	30 = 3
राशियाँ	12 = 3
विपल या सेकंड	60 = 6
पल या मिनट	60 = 6
घटी	60 = 6
घंटे	24 = 6
विकला	60 = 6
कला	60 = 6

अंक ज्योतिष की प्रमाणिकता हेतु भारतवर्ष की कुछ घटनाओं का विवेचन :–

BHARAT	BHARATVARSHA	INDIA
2 5 12 1 4 = 6	2 5 1 2 14 6 12 35 1 = 6	15 411= 3

ब्रह्म या शिव के अंक का नामांक भी 6 ही होता है, जिसे इस सृष्टि का नियामक माना गया है।

BRAHMA	SHIV
2 2 15 4 1 = 6	3 516 = 6

भारत देश का नामांक 6 होता है। अंक 6 के 3 एवं 9 मित्र अंक हैं। भारत एक लम्बी

गुलामी के बाद दिनांक 15.8.1947 को स्वतंत्र हुआ। 15 का मूलांक 6 हुआ और संयुक्तांक या भाग्यांक 15.8.1947 का सम्पूर्ण योग 8 होता है। भाग्यांक 8 के 1 एवं 4 मित्र हैं। अतः हम यहाँ भारत पर स्वतंत्रता के पश्चात मूलांक 6 एवं मूलांक 6 के मित्र अंक 3, 9 तथा भाग्यांक 8 एवं 8 के मित्र अंक 1, 4 के प्रभाव का विस्तृत वर्णन कर रहे हैं।

अंक मित्रता सारिणी

ग्रह	अंक	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	1	4, 8	2, 3, 7, 9	5, 6
चन्द्र	2	7, 9	1, 3, 4, 6	5, 8
गुरू	3	6, 9	1, 2, 5, 7	4, 8
हर्षल	4	1, 8	2, 6, 7, 9	3, 5
बुध	5	3, 9	1, 6, 7, 8	2, 4
शुक्र	6	3, 9	2, 4, 5, 7	1, 8
नेपच्यून	7	2, 6	3, 4, 5, 8	1, 9
शनि	8	1, 4	2, 5, 7, 9	3, 6
मंगल	9	3, 6	2, 4, 5, 8	1, 7

मूलांक 6 के प्रभाव से घटित घटनाएं

मूलांक	तारीख	घटनाक्रम
6	6.4.1920	गांधी जी की प्रसिद्ध डांडी यात्रा।
6	15.8.1947	भारत द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति।
6	15.8.1947	पं. जवाहरलाल नेहरू प्रधानमंत्री बने।
6	24.1.1950	डॉ. राजेन्द्रप्रसाद राष्ट्रपति चुने गये।
6	15.12.1950	सरदार वल्लभाई पटेल का देहावसान्।
6	15.9.1953	श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित संयुक्तराष्ट्र महासभा के आठवें सत्रकी सभापति बनीं।
6	24.10.1954	केन्द्रीय खाद्यमंत्री रफी अहमद किदवई का निधन।

6	15.8.1955	गोवा पुलिस ने 28 सत्याग्रहियों की गोली मार कर हत्या की।
6	6.2.1965	पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री सरदार प्रतापसिंह की गोली मार कर हत्या।
6	6.9.1965	भारत – पाक युद्ध आरम्भ।
6	24.1.1966	श्रीमती इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बनीं।
6	15.3.1967	राजस्थान में राष्ट्रपति शासन लागू। इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली।
6	15.4.1967	राजस्थान में राष्ट्रपति शासन समाप्त। मोहनलाल सुखाड़िया सरकार ने शपथ ली।
6	24.8.1969	व्ही.व्ही. गिरी राष्ट्रपति बने।
6	24.8.1974	फखरूद्दीन अली अहमद राष्ट्रपति बने।
6	24.1.1977	मोरारजी देसाई ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली
6	24.3.1977	मोरारजी देसाई का प्रधानमंत्री बने।
6	6.6.1977	राशन का गेहूं 65 रूपये क्विंटल मंहगा।
6	24.7.1977	पटना उच्चन्यायालय ने लालूयादव की जमानत अर्जी ठुकराई
6	6.4.1980	भारतीय जनतापार्टी का गठन
6	15.4.1980	छैः और कॉमर्शियल बैंकों का राष्ट्रीयकरण
6	15.11.1982	आचार्य विनोबाभावे का निधन
6	24.7.1985	पंजाब समझौता
6	15.8.1985	असम समझौता
6	6.7.1986	जगजीवनराम का निधन
6	24.8.1991	मोरारजी देसाई को भारतरत्न
6	24.12.1991	काठमांडू से नई दिल्ली आरही इडियन एयरलाईंस की एयरबस 300 का 189 यात्रियों सहित उड़ान अपहरण विमान को लाहौर ले जाया गया।
6	24.4.1993	पंचायती राज अधिनियम पारित
6	24.4.1993	दिल्ली से श्रीनगर जा रहा इंडियन एयरलाईंस का बोइंग 737 विमान 141 यात्रियों ओर चालकदल के 6 सदस्यों सहित अपहरण के बाद अमृतसर ले जाया गया अपहर्ता विमान को काबुल ले जाना चाहते थे।

6	24.5.1994	पंचायती राज अधिनियम लागू
6	24.12.1995	हरियाणा में डबबाली अग्निकांड में 400 बच्चे मरे।
6	24.3.1997	जगदीश शरण वर्मा सर्वोच्च न्यायालय के 27 वें मुख्य न्यायाधीश बने
6	6.6.1997	राशन का गेहूं 65रूपये क्विंटल मंहगा।
6	24.7.1997	पटना उच्चन्यायालय ने लालू यादव की जमानत अर्जी ठुकराई
6	6.1.1999	पाकिस्तानी क्रिकेट टीम को खेलने न देने हेतु शिव सेनिकों द्वारा पिच खोदी।
6	15.1.1999	फिल्मकार बर्तालुसी को सिनेमा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सम्मानित।
6	24.1.1999	उड़ीसा में मिशनरियों को जिंदा जलाने की घटना, 49 लोग गिरफ्तार।
6	6.3.1999	चेन्नई हवाई अड्डे पर एयर फ्रांस का मालवाही जहाज दुर्घटना ग्रस्त।
6	6.4.1999	केन्द्रीय मन्त्री मण्डल से अन्नाद्रमुक के दो मन्त्रीयों का इस्तीफा।
6	6.5.1999	मॉडल जेसीका लाल के हत्यारे मनु शर्मा द्वारा आत्म समर्पण।
6	15.5.1999	भाजपा और साजादलो द्वारा राष्टीय जनतांत्रिक गठबंधन बनाया।
6	24.5.1999	गुरु हनुमान का निधन।
6	6.6.1999	कारगिल में घुसपेटियो पर हवाई हमले शुरु।
6	6.7.1999	सेना ने चार प्रमुख चोटियो पर कब्जा किया।
6	24.12.1999	काठमांडू से नई दिल्ली अपहरण कर पाकिस्तानी उग्रवादियों ने कांधार तालिवान ले जाया गया।

मित्रांक 3 के प्रभाव से घटित घटनाएं

3	30.1.1948	महात्मा गांधी की हत्या।
3	21.6.1948	सी.राजगोपालाचारी प्रथम एवं अंतिम भारतीय गवर्नर बने।
3	21.10.1954	भारत और फ्रांस ने फ्रांसीसी बस्तियों को 1 नबम्बर 1954 से भारत को हस्तांतरित करने के समझौते पर हस्ताक्षर किये।
3	3.12.1956	नीलम संजीव रेड्डी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित।

3	21.10.1967	डॉ. राममनोहर लोहिया का 57 वर्ष की आयु में निधन।
3	3.5.1969	राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन का निधन।
3	3.12.1971	भारत–पाक युद्ध आरम्भ।
3	21.1.1977	आपातकाल समाप्त
3	3.6.1977	केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में चार महिलाए जयंती नटराजन,चौधरी रत्नमाला डी सव्वानूर रेणुका ओर कमला सिंन्हा शामिल।
3	21.7.1977	नीलम संजीब रेडडी राष्ट्रपति निर्वाचित
3	3.10.1977	श्रीमती गांधी गिरफ्तार
3	30.1.1980	मदर टेरेसा को भारत रत्न अवार्ड
3	30.6.1981	भारतीय संचार उपग्रह एपिल अंतरिक्ष में प्रक्षेपित
3	21.11.1981	भास्कर 2 अंतरिक्ष में प्रक्षेपित
3	30.8.1983	इंन्सेट 1 बी अमेरिकी अंतरिक्ष शटल के द्वारा अंतरिक्ष में प्रक्षेपित
3	21.8.1987	डॉ. शंकरदयाल शर्मा उपराष्ट्रपति बने
3	12.6.1990	इंसेट–1टी का सफल प्रक्षेपण
3	21.5.1991	राजीवगांधी की हत्या
3	21.6.1991	पी.व्ही.नरसिंहराव प्रधानमंत्री बने
3.	21.9.1995	देवप्रतिमाओं द्वारा दूध पीने की राष्ट्रव्यापी घटना
3	3.5.1996	चंन्द्रास्वामी तिहाड़ जेल भेजे गए
3	21.4.1996	आवास मामले में श्रीमती शीला कौल का हिमाचल के राज्यपाल से इस्तीफा
3	30.11.1996	सुखोई 30 विमान सौदे पर हस्ताक्षर
3	30.1.1997	पांचवे वेतन आयोग ने अपनी रिपोर्ट बित्तमंत्री को सौंपी
3	30.3.1997	कांग्रेस ने एच.डी.देवगौडा के नेतृत्व वाली सरकार से समर्थन वापस लिया
3	21.4.1997	इन्द्रकुमार गुजराल के नेतृत्व में संयुक्त मोर्चा सरकार ने शपथ ली
3	3.6.1997	केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में चार महिलाए जयंती नटराजन, रेणुका चौधरी रत्नमाला डी सव्वानूर अैर कमला सिंन्हा शामिल।
3	21.1.1999	बाल ठाकरे द्वारा पाकिस्तार से क्रिकेट बिरोध एक साल तक स्थगित किया।

3	30.1.1999	पं. रविशंकर एवं गोपीनाथ बोरदोलोई को भारत रत्न।
3	12.2.1999	बिहार में राबड़ी देवी मंत्रिमंडल बर्खास्त, राष्ट्पति शासन लागू।
3	21.2.1999	भारत व पाक ने आतंकवाद की निंदा की ।
3	30.3.1999	चमोली में भूकम्प के झटके।
3	3.4.1999	इनसैट दो ई का सफल प्रक्षेपण।
3	12.4.1999	अन्नाद्रमुक द्वारा सरकार से समर्थन वापस।
3	3.5.1999	तैरहवी लोक सभा के चुनाव सितम्बर अक्टुबर में कराने की घोषणा।
3	21.5.1999	शरद पवार संगमा तारिक अनवर ने अलग मोर्चा बनाया।
3.	30.5.1999	पाकिस्तान सैनिको द्वारा कारगिल युद्ध शुरु।
3	21.7.1999	समता पार्टी व लोक शक्ति का जनता दल मे विलय।

मित्रांक 9 के प्रभाव से घटित घटनाएं

9	9.12.1946	भारतीय संविधान सभा का उद्घाटन।
9	27.5.1964	जवाहर लाल नेहरू का निधन।
9	27.5.1964	गुलजारी लाल नंदा प्रधानमंत्री कार्यवाहक बने।
9	9.6.1964	लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री बने।
9	9.6.1964	लालबहादुर शास्त्री ने प्रधानमंत्री की शपथ ली।
9	9.11.1966	ग्रहमंत्री गुलजारी लाल नंदा का इस्तीफा।
9	27.8.1969	चंढीगढ़ मुद्दे पर अपने उपवास के 74 वें दिन दर्शनसिंह फेसूमान का निधन।
9	27.3.1970	पंजाब में प्रकाशसिंह बादल के नेतृत्व में अकाली जनसंघ सरकार बनी।
9	27.11.1970	अपने कार्यकाल से एक वर्ष पहले चौथी लोकसभा भंग।
9	9.8.1971	बीस वर्षीय भारत–रूस शांति संधि।
9	9.4.1972	शिरोमणि अकाली दल गठित।
9	18.5.1974	भारत द्वारा पोखरन में आणविक बम का परीक्षण।
9	18.1.1977	प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने लोकसभा को भंग कर मार्च में नये चुनाव की घोषणा।

9	18.7.1980	भारत द्वारा स्वप्रक्षेपण वाहन से रोहिणी उपग्रह को अंतरिक्ष में प्रस्थापित करना
9	9.6.1981	उपग्रह रोहिणी–2 अंतरिक्ष में भस्म
9	18.12.1988	राजीवगांधी 34 वर्ष बाद चीन जाने वाले पहले प्रधानमंत्री बने
9	27.3.1993	इडियन एयरलाईन्स की हैदराबाद, लखनऊ, दिल्ली, उडान आई सी 439 का हरिसिंह ने अपहरण किया विमान अमृतसर के राजा सांसी हवाई अडडे पर उतरा
9	9.5.1994	पांचवे वेतन आयोग की घोषणा
9	18.1.1996	आंध्र प्रदेश के पूर्व प्रधानमंत्री एन टी रामाराव का निधन
9	27.1.1996	पृथ्वी का सफल परिक्षण
9	27121996	महाश्वेतादेवी को 1996 का ज्ञानपीठ पुरस्कार
9	27.4.1997	सीबीआई ने बिहार के चारा घोटाले में राज्य के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव पर मुकदमा चलाने की घोषणा की
9	9.1.1999	नौवीं पंचवर्षीय योजना के मसौदे के मंत्रिमंडल ने अंतिम मंजूरी दी।
9	18.1.1999	अमर्त्य सेन को भारत रत्न देने की घोषणा।
9	18.1.1999	अरुणाचल के मुख्यमंत्री गेगांग अपंग विश्वास मत हारे।
9	18.2.1999	सुप्रीम कोर्ट ने नर्मदा बांध का निर्माण करने की इजाजत दी।
9	9.3.1999	बिहार में रावड़ी देवी दोबारा सत्ता में।
9	18.3.1999	जहानावाद में उग्रवादियो द्वारा 35 लोगों की हत्या।
9	27.3.1999	लेखक व रंगकर्मी गिरीश कर्नाड को ज्ञान पीठ पुरुस्कार।
9	9.4.1999	अन्नाद्रमुक भाजपा समन्वय समिति से अलग हुई।
9	27.4.1999	जुखिया रेल्वे क्रासिंग पर अवध असम एक्सप्रेस दुर्घटना ग्रस्त।
9	9.7.1999	वटालिक पर भारत का कब्जा।

भाग्यांक 8 का प्रभाव

मूलांक	भाग्यांक	तारीख	घटनाक्रम
8		8.8.1940	कांग्रेस द्वारा भारत छोडो प्रस्ताव पारित
	8	15.8.1947	भारत द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति
	8	30.1.1948	महात्मागांधी की हत्या

8		26.1.1950	भारतीय संविधान लागू होना और भारत का गणतंत्र बनाना
	8	9.8.1971	बीस वर्षीय भारत रूस शांति संधि
	8	18.5.1974	भारत द्वारा पोखरन में आणविक बम का परीक्षण
8		26.6.1975	भारत द्वारा आर्यभट्ट अंतरिक्ष में छोड़ना
	8	25.6.1975	आपातस्थिति की घोषणा
8		26.7.1977	नीलमसंजीब रेड्डी का राष्ट्रपति चुना जाना
8		17.11.1982	नवें एशियाई खेल नई दिल्ली में शुरू
8		17.5.1983	रोहिणी उपग्रह एलएलबी 3 के साथ अंतरिक्ष में प्रक्षेपित

भाग्यांक 8 के मित्रांक 1 व 4 का प्रभाव

मित्रांक	दिनांक	घटनाक्रम
1	19.3.1920	प्रथम असहयोग आंदोलन का सूत्रपात
1	28.5.1956	फ्रांसीसी बस्तियों का भारत को हस्तांतरण
4	9.8.1971	बीस वर्षीय भारत रूस शांति संधि
4	31.5.1980	भारत द्वारा दूसरा उपग्रह रोहिणी–2 अंतरिक्ष में प्रक्षेपित
1	10.5.1982	इंसेट–1बी उपग्रह छोडा गया भारत ने इसे कक्षा में स्थापित किया
4	31.10.1984	श्रीमती इंदिरागांधी की हत्या
1	10.5.1995	सुप्रीमकोर्ट द्वारासमान नागरिक संहिता तैयार करने के निर्देश
4	13.5.1998	भारत द्वारा पोखरन में पांच परमाणु बमों का परीक्षण
4	6.5.1920	गांधी जी की प्रसिद्ध डांडी मार्च यात्रा
1	2.7.1972	भारत पाक शिमला समझौता
1	11.2.1977	राष्ट्रपति फखरूद्दीन अली अहमद का निधन
1	30.6.1981	भारतीय संचार उपग्रह एपिल अंतरिक्ष में प्रक्षेपित
1	15.8.1985	असम समझौता
4	20.2.1987	मिजोरम व अरूणाचल भारतीय संघ के क्रमशः 23वें 24वें राज्य बने।
1	12.6.1990	इंसेट–1 टी का सफल परीक्षण
1	21.5.1991	राजीवगांधी की हत्या
4	5.11.1997	भारत रत्न मदर टैरेसा का निधन

2. अंको की रहस्यमयी शक्ति

हम संसार में भिन्न भिन्न वस्तुएँ देखते हैं जिनके रूप अनेक हैं। दो या अनेक रंगों के मिलने से कुछ नये रंग बन जाते हैं। जैसे पीला और लाल मिलाने से नारंगी रंग बन जाता है। नीला और पीला मिलाने से हरा। इस प्रकार सैकड़ों, हजारों रंग बन सकते हैं। परन्तु इनके मूल में तो वही सात रंग हैं जो हमें इन्द्र धनुष में दिखाई देते हैं। इन सात रंगों को सूर्य के प्रकाश में प्रिज्म द्वारा देखा जा सकता है। वैसे सूर्य की किरण शुद्ध उज्जवल बिना रंग के प्रतीत होती हैं। इन सात रंगों के मूल में भी एक ही रंग रह जाता है जो कि सफेद अथवा रंग रहित शुद्ध प्रकाश है।

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश तत्व संसार में दिखाई देने वाली प्रत्येक वस्तु में रहता है। इन तत्वों का मिश्रण भिन्न भिन्न अनुपात और भिन्न भिन्न प्रकार से होता है। किसी में कोई तत्व कम है तो किसी में अधिक। यह सच है कि समस्त जगत् केवल पांच तत्वों से बना है। यह पांचो तत्व आकाश से उत्पन्न हुए हैं। आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई है। आकाश का गुण 'शब्द' वायु का 'स्पर्श' अग्नि का 'तेज' (रूप), जल का 'रस' और पृथ्वी का गुण 'गन्ध' है। जैसे संसार के सभी पदार्थो के मूल में आकाश तत्व है उसी प्रकार, हम यह कह सकते हैं कि संसार के सभी पदार्थो का मूल गुण 'शब्द' है। इसी कारण शब्द को 'शब्द ब्रह्म' की संज्ञा प्रदान की गई है अर्थात् परम प्रभु परमेश्वर का प्रतीक माना गया है।

सभी शब्द ब्रह्म के रूप हैं। लेकिन भिन्न भिन्न शब्दों का गुण और प्रभाव भिन्न भिन्न है। प्रत्येक शब्द को अंक या संख्या में परिवर्तित कर उसकी माप की जा सकती है। कोई शब्द 7000 बार आवृत्ति करने पर पूर्णता को प्राप्त होता है तो अन्य शब्द 17000 बार आवृत्ति करने पर पूर्ण होता है। संख्या एवं शब्द के आपसी सम्बन्ध से हमारे ऋषि महर्षि पूर्ण परिचित थे। इसी कारण सूर्य के मंत्र का जप 7000, चन्द्रमा का 11000, मंगल का 10000, बुध का 9000, बृहस्पति का 19000, शुक्र का 16000, शनि का 23000, राहु का 18000 और केतु का 17000 जप निर्धारित किया गया है। किसी देवता के मंत्र में 5 अक्षर होते हैं तो किसी के मंत्र में 9 या 22 आदि। अतः 'शब्द' एवं संख्या में घनिष्ट वैज्ञानिक संबंध है।

संख्या और क्रिया का घन्ष्ठि संबंध है। शून्य (0) संख्या, निष्क्रिय, निराकार, निर्विकार 'ब्रह्म' का द्योतक है और '1' पूर्ण ब्रह्म की उस स्थिति का द्योतक है, जब वह अद्वैत रूप से रहता है। कहने का अभिप्राय यह कि 'शब्द' और संख्या (अंक) में संबंध होने के कारण समस्त पदार्थो के मूल में जैसे 'शब्द' है वैसे ही 'अंक' भी। शब्द के मूल आकाश को 'शून्य' कहते हैं और अंक के मूल को भी 'शून्य'। शून्य से ही शब्द और अंक का प्रादुर्भाव होता है। यदि 'अंक' (संख्या) का किसी वस्तु या क्रिया से संबंध नहीं होता तब हमारे शास्त्र 108 मणियों की माला बनाने का विधान नहीं करते। प्रत्येक संख्या का एक महत्व है। 25 मणियों की माला पर जप करने से मोक्ष, 30 की माला से धन सिद्धि, 27 की माला से स्वार्थ सिद्धि, 54 से सर्वकामनाप्राप्ति और 108 से सर्व प्रकार की सिद्धियाँ हो सकती हैं। किन्तु अभिचार कर्म में 15 मणियों की माला प्रशस्त है।

108 की संख्या का क्या रहस्य है ? सूर्य राशि भ्रमण में जब एक पूरा चक्र लगा लेता है तो एक वृत्त पूरा करता है। एक वृत्त में 360 अंश होते हैं। इस प्रकार सूर्य की एक प्रदक्षिणा के अंशों की यदि कला बनाई जावें तो 360 गुणा 60 बराबर 21600 कला बनेंगी। सूर्य छः मास उत्तर अयन में रहता है और छः मास दक्षिण अयन में। इस हिसाब से 21600 को दो भागों में विभक्त करने से 10800 संख्या प्राप्त हुई ।

अब हम दूसरे प्रकार से विचार करते हैं। प्रत्येक दिन में सूर्यादय से लेकर अगले सूर्योदय तक काल का परिमाण 60 घड़ी माना है। 1 घड़ी के 60 पल और 1 पल के 60 विपल। इस प्रकार एक अहोरात्र अर्थात 60 घड़ी में गुणा 60 पल फिर गुणा 60 विपल बराबर 216000 विपल हुए। इसके आधे दिन में 108000 और इतने ही रात्रि में।

जैसे आधुनिक युग में वैज्ञानिक प्रणाली के अनुसार रुपये, पैसे, तोल, माप, आदि एक ही दशमलव के आधार पर हैं, वैसे ही हमारे प्राचीन ऋषियों ने 'काल' और 'संख्या' का समन्वय किया था। इसी के समीकरण और सामंजस्य स्वरूप 108000 की संख्या उपलब्ध हुई और दशमलव की प्रणाली के अनुसार बिन्दु छोड़ देने से 108 की संख्या प्राप्त हुई। हमारे प्राचीन ऋषियों ने 'शब्द' काल, संख्या आदि सभी का इस प्रकार सामंजस्य कर दिया था कि प्रत्येक नाम का, नाम के अक्षरों का संख्या पिंड बनाने से उसके सब गुण उस संख्या से प्रकट हो जाते थे। इसी आधार पर जय पराजय चक्र आगे दिये गये हैं। ऋणी और धनी कौन किसका कर्जदार है, अंक विद्या, मंत्र विद्या, आदि से संबंध रखता है, क्योंकि देना पावना संख्या में ही होता है। इस संबंध में तंत्रसार को देखें।

आजकल वैज्ञानिक प्रत्येक खाद्य पदार्थ को 'कैलोरी' में परिवर्तित कर यह बतलाते हैं कि किस भोजन में कितना शक्ति वर्धक पदार्थ है। इसी प्रकार किसी नाम को संख्या में परिवर्तित करके यह बताया जाता है कि किस नाम का व्यक्ति किससे अधिक शक्तिशाली होगा। प्रत्येक व्यक्ति का नाम ही उसकी पहचान है। विद्वानों के मत से मनुष्य जब सोया रहता है तब भी उसके चैतन्य की एक कला जगी हुई रहती है। जो उसे सावधान या सतर्क रखती है। यदि बहुत से मनुष्य एक ही स्थान पर सोये हुए हों तो प्रायः जिसका नाम लेकर आवाज दी जाती है वही जग जाता है। नरपति जय–चर्चा नामक ग्रंथ में लिखा है कि मनुष्य के उसी नाम का विचार करना चाहिये जिससे उसे आवाज दी जावे और वह सोते से जग जावे। 'नाम' और नाम की प्रतीक 'संख्या' अनादिकाल से ही फलादेश में उपयुक्त होते रहे हैं।

जिस प्रकार टेलीविजन को जिस चैनल या संख्या पर स्थिर कर देने से उसी 'संख्या' पर प्रवाहित कार्यक्रम दिखाई देने लगते हैं और शब्द सुनाई पड़ते हैं। उसी प्रकार 'संख्या' विशेष और उस संख्या के प्रतीक 'वस्तु' या व्यक्ति में आकर्षण होता है।

नवीन अनुसंधानों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि बहुत प्रकार के कीड़े अपने सजातीय कीड़ो को सन्देश या संवाद भेज सकते हैं। इसका कारण यह है कि जिस प्रकार एक खास चैनल पर टेलीविजन से कार्यक्रम आने लगते हैं उसी प्रकार यह कीड़े भी जो संवाद प्रेषित करते हैं उनको उनके सजातीय कीड़े ग्रहण कर लेते हैं। भिन्न भिन्न प्रकार के कीड़ो को एक बड़े बगीचे में अलग अलग कोनों पर छोड़ा गया और वह एक ही केन्द्र स्थल पर जाकर मिल गए। एक खास प्रकार की मक्खी के झुँण्ड को दो स्थानों पर परस्पर एक दूसरे से कई मील दूर छोड़ कर देखा गया कि वे एक ही स्थान पर आकर मिल जाते हैं।

जंगल में दाना डाल दीजिए पक्षी आजावेंगे। चीनी फैला दीजिए चींटियाँ इकट्ठी हो जावेंगी। मरा हुआ जानवर डाल दीजिये, गृद्ध और चील आकाश को आच्छादित कर देंगे। जंगल में कहीं रात्रि में बकरा या पाड़ा बाँध दीजिये तो शेर उसका शिकार करने हेतु आ जाएगा। बकरे की खुशबू से चिड़ियां नहीं आतीं और चीनी पर शेर नहीं आता। इसी प्रकार 2 द्योतक की संख्या या वस्तु की और उसके सहधर्मी आकृष्ट होते हैं। 1 द्योतक संख्या या वस्तु या व्यक्ति की और 1 के सहधर्मी आकृष्ट होंगे। अन्य वर्ग के नहीं। यह परस्पर आकर्षण का सिद्धान्त है। यह सामान्य नियम है।

इसी प्रकार अंक ज्यौतिष को जानने वाले यह जानते हैं कि '1' मूल अंक वाले व्यक्ति को '1' मूल अंक शुभ जावेगा और उसकी विशेष मित्रता भी '1' मूल अंक वाले व्यक्ति से होगी तथा '2' मूल अंक वाले व्यक्ति को '2' मूल अंक की संख्या शुभ जावेगी और उसकी विशेष मित्रता भी '2' मूल अंक वाले व्यक्ति से होगी।

अंक विद्या का पूरी तरह प्रकाशन करना संभव नहीं है। भगवत् गीता में 18 अध्याय ही क्यों हैं ? महाभारत में 18 पर्व ही क्यों हैं ? 18 पुराणों की संख्या का वैज्ञानिक आधार क्या है ? इस '18' की योग संख्या 1+8 = 9 है, यह क्यों ? हमारे ऋषि मुनि दिव्य ज्ञान के कारण जो पद चिन्ह छोड़ गये हैं, हम तो केवल उनका अनुशरण ही कर सकते हैं। श्रीमद् भागवत में 12 स्कन्ध ही क्यों हैं ? दशम स्कन्ध इतना बड़ा हो गया कि उसे 'पूर्वार्ध' और 'उत्तरार्ध' इन दो खंड़ो में विभाजित करना पड़ा। विभाजन न करते हुए 13 स्कन्ध क्यों नहीं किए 12 ही क्यों रखे ? रामायण का 9 दिनों में पारायण और भागवत का सप्ताह (7 दिन में पारायण) क्यों ? गायत्री में 24 अक्षर ही क्यों हैं ? विवाह के समय सप्तपदी ही क्यों होती है। गणेश की चतुर्थी, दुर्गा की अष्टमी, सूर्य की सप्तमी, विष्णु की एकादशी तथा रूद्र की प्रदोष व्यापिनी त्रयोदशी ही क्यों है ? इत्यादि ऐसे अनेक अंक विद्या संबंधी वैज्ञानिक विषय हैं जिनका विवेचन करना यहाँ संभव नहीं है। अंक विद्या का रहस्य इतना गंभीर है कि इसमें जितना अधिक नीचे उतरेंगे उतने ही बहुमूल्य रत्न हाथ लगेंगे। यदि आप इसके नियमों का अध्ययन कर, अपने स्वयं के जीवन की घटनाओं से यह नतीजा निकाल सकें कि कौन से दिन और दिनांक आप को 'शुभ' या 'अशुभ' जाते हैं तो केवल इस ज्ञान से आप अपने को बहुत लाभ पहुँचा सकते हैं।

अंक शक्ति

प्रत्येक अंक में एक निश्चित शक्ति विद्यमान रहती है। जो कि वस्तुओं के आपसी गूढ़ संबंध एवं प्रकृति के गूढ़ सिद्धान्तों पर आधारित है। इसका पता मानव को तब चला जब मानव ने अंकों को एक क्रम 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 प्रदान किया तथा इन अंको के द्वारा चाहे गए प्रतीक को अभिव्यक्त किया। नीचे 0 से 9 तक के अंकों में छुपी हुई शक्ति का वर्णन दे रहे हैं।

0 (शून्य) –

यह अनंत का प्रतीक है। यह सूक्ष्म से सूक्ष्म है एवं बृहद से बृहदाकार है। इसमें अनंत असीम अस्तित्व छिपा है जो सभी वस्तुओं का उद्गम स्त्रोत है। इस अनंत ब्रह्मांड में समस्त

आकाश मण्डल के सितारे, प्रकाश पुंज, सम्पूर्ण सौर मंडल, आकाश गंगा, सार्व भौमिकता, विश्व प्रजनन शक्ति, ग्रहों की परिक्रमा, परिक्रमा पथ आदि हैं। इसी में सम्पूर्ण विश्व की शक्ति निहित है। आप कहीं से भी चलना प्रारंभ करें पूरे विश्व या पृथ्वी का चक्कर लगा लें, लौटकर फिर वहीं आ जाएँगे जहाँ से चले थे। अतः शून्य में ही सब कुछ छिपा होने से इसे अनंत की शक्ति प्राप्त है।

अंक–1

एक के अंक का प्रयोग सकारात्मक एवं सक्रिय सिद्धांत के प्रतीक रूप में होता है। अंक एक शब्द में भी प्रयुक्त होता है जो अनंत तथा अव्यक्त को प्रकट करता है। यह अहं का प्रतिनिधि है। आत्म स्वीकारोक्ति, सकारात्मकता, पृथकतावाद, आत्मा, आत्मत्व, आत्म निर्भरता, श्रेष्ठता गरिमा तथा प्रशासन का प्रतीक है। धार्मिक दृष्टिकोण से ग्रहों के स्वामी सूर्य को भगवान माना गया है। अतः ईश्वर का भी प्रतीक है। वैज्ञानिक एवं दार्शनिक रूप में यह संश्लेषण तथा वस्तुओं में मूल भूत अखंडता को दर्शाता है। व्यक्ति जीवन की ईकाई है, अतः भौतिक दृष्टि से मनुष्य का प्रतीक है। यह शून्य से उदित है और सूर्य ग्रह का प्रतीक अंक है।

अंक–2

दो का अंक विपरीतता का प्रतीक है। इससे प्रमाण एवं पुष्टि होती है। इसमें द्विगुण हैं, जैसे एक और एक का जोड़ दो अथवा दो में से एक घटाना। अतः जहाँ इस अंक में एक ओर क्रियाशीलता है तो वहीं दूसरी ओर निष्क्रियता भी है। एक ओर यह पुल्लिंग सूचक है वहीं दूसरी और स्त्रीलिंग द्योतक है। एक और सफलता तो दूसरी और असफलता, जीत या हार, लाभ या हानि, सकारात्मक या नकारात्मक, पूर्णमासी या अमावस्या दौनों स्थितियाँ प्रदान करता है। यह चन्द्रमा का प्रतीक है।

अंक–3

अंक तीन त्रि–आयामी है। यह सृष्टि भी त्रि–गुणात्मक है। जीवन के त्रिगुण पदार्थ, बुद्धि, बल व चेतना का प्रतीक है। इसमें सृजन, पालन व संहार के ब्रह्मा–विष्णु–महेश के गुण समाहित हैं। इससे परिवार में माता–पिता तथा शिशु तीनों का बोध होता है। आत्मा, शरीर एवं मन का प्रतीक है। यह विस्तार का अंक है। सृष्टि त्रि–गुणात्मक होने से तीन का गुणा किसी भी अंक में करते जाएँ संख्या का अन्त नहीं आएगा। यह गुरू ग्रह का प्रतीक है।

अंक–4

चार का अंक वास्तविकता एवं स्थायित्व का संकेत देता है। यह अंक भौतिक जगत का द्योतक है तथा वर्गाकार एवं घनाकार है। इससे भौतिक अवस्था भौतिक नियम, तर्क, कारण एवं विज्ञान का आभास होता है। यह अनुभूतियों, अनुभव एवं ज्ञान के रूप में पहचान स्थापित करता है। इससे विभाजन, अलग–अलग होना योजनायें बनाना तथा वर्गीकरण करना है। यहाँ स्वास्तिक, विधि चक्र, तथा संख्याओं का क्रम एवं योग है। यह चेतना, बुद्धि विवेक अध्यात्मिकता एवं भौतिकता के अन्तर की पहचान स्थापित करता है। इसका प्रतिनिधि ग्रह हर्षल या राहु है।

अंक–5

पाँच का अंक विस्तार का प्रतिनिधित्व करता है। यह वस्तुओं के आपसी संबंध, सूझ–बूझ की क्षमता एवं निर्णय का प्रतीक है। यह बुद्धि विवेक विचार शक्ति देता है। यह न्याय तथा खेतों में बुआई, कटाई एवं फसल, खाद्यान्न का प्रतीक है। भौतिक जगत में यह स्वयं के पुर्नउत्पादन, पितृत्व, परितोष एवं दण्ड का प्रतीक है। अतः यह अंक एक रूप में अनार के बीज की तरह गुण वाला है। यह बुध का प्रतीक है।

अंक–6

छह का अंक आपसी सहयोग का प्रतीक है। यह विवाह, दाम्पत्य सुख को एक कड़ी में जोड़ने व आपसी प्रेम संबंधो का संकेत देता है। आपसी व्यवहार, क्रिया, आपसी सन्तुलन बनाता है। यहाँ भौतिक जगत, भौतिक सुख, एवं आध्यात्मिक जगत, आध्यात्मिक सुख का द्योतक है। यह मनुष्य की मानसिक एवं शारीरिक क्षमता को प्रकट करता है। देवीय क्षमता, मनोविज्ञान भी मीमांसा, समागम तथा सहानुभूति को दर्शाता है। इससें परा मनौविज्ञान, दूर संवेदिता (Telepathy) एवं मानसिक तुलना का प्रतिनिधि है। सहयोग, शांति, सन्तुलन, एवं सन्तुष्टि प्रदान करता है। सौन्दर्य तथा सत्य दर्शाता है। उद्देश्य प्राप्ति, समागम तथा पारस्परिक संबंधो का प्रतीक है। यह स्त्री, पुरुष के नैसर्गिक संबंधो को दर्शाता है। यह शुक्र का प्रतीक है।

अंक–7

सात का अंक पूर्णता का परिचायक है। यह समय अन्तराल, स्थान एवं दूरी को दर्शाता है। इससे मनुष्य की क्षीणता, वृद्धावस्था, मृत्यु, सहनशीलता, स्थिरता, अमरत्व दृष्टिगोचर होता है। यह सप्तद्वीप, सप्तयुग एवं सप्ताह के सात दिनों का प्रतीक है। इससे

सात प्रतिज्ञाओं, मनुष्य की सिद्धांत परिपक्वता, ध्वनि के विभिन्न रूप एवं रंगों का बोध कराता है। मानव की पूर्णता, विकास का क्रम, बुद्धि, मन का सन्तुलन तथा विश्राम का द्योतक है। यह नेपच्यून या केतु का प्रतीक है।

अंक–8

आठ का अंक विघटन का अंक है। यह चक्रीय विकास के सिद्धान्तो व प्राकृतिक वस्तुओं के आध्यात्मिकी करण के झुकाव का प्रतीक है। क्रिया, प्रतिक्रिया जोड़ –तोड़, विघटन, अलगाव, विखराव, अराजकता, विभाजन का प्रतीक है। यह जीवन की अन्तः प्रेरणा, बुद्धि विकास, अविष्कार एवं अनुसंधान देता है। इससे सनकी स्वभाव मार्ग से हट जाता है, गल्तीयाँ करना एवं मानसिक विच्छेद होने का प्रतीक है। इसका प्रतिनिधि ग्रह शनि है।

अंक–9

अंक नौ पुर्नउत्पादन देता है। इससे पुर्नजन्म, अध्यात्म, इन्द्रियों का विस्तार, विकास, पूर्वाभास व समुद्री यात्रा को दर्शाता है। स्वप्न, बिना घटित घटनायें वायु मण्डल की ध्वनियों को सुनने का द्योतक है। इससे पुर्नरचना, कम्पन, लय, तरंग प्रकाशन, धनुष विद्या, युद्ध कौशल, ज्योतिष के रहस्यों का उद्‌घाटन, विचार तरंगे, दिव्य दर्शन, प्रेत आत्मा, बादल, दुर्बोध तथा रहस्य प्रकट होता है। यह मंगल का प्रतीक है।

संक्षेप में इन अंको के प्रभाव को निम्नानुसार याद कर सकते हैं।

अंक–1

यह अंक स्वतंत्र व्यक्तित्व का धनी है। इससे संभावित अंह का बोध, आत्म निर्भरता, प्रतिज्ञा, दृढ़ इच्छा शक्ति एवं विशिष्ट व्यक्तित्व दृष्टि गोचर होता है। इसका प्रतिनिधि सूर्य ग्रह है।

अंक–2

अंक दो का संबंध मन से है। यह मानसिक आकर्षण, हृदय की भावना, सहानुभूति, संदेह, घृणा एवं दुविधा दर्शाता है। इसका प्रतिनिधित्व चन्द्र को मिला है।

अंक–3

तीन का अंक विस्तार वादी है। इससे बढ़ोत्तरी, बुद्धि विकास क्षमता, धन वृद्धि एवं सफलता मिलती है। इस अंक का स्वामित्व बृहस्पति या गुरू ग्रह को मिला है।

अंक–4

इस अंक से मनुष्य की हैसियत, भौतिक सुख संपदा, सम्पत्ति, कब्जा, उपलब्धि एवं श्रेय प्राप्त होता है। इसका प्रतिनिधि हर्षल या राहु ग्रह है।

अंक–5

इस अंक द्वारा वाणिज्य, व्यवसाय, रोजगार, फसल, खाद्यान्न, तर्कशक्ति, वाकपटुता, कारण और निवारण, नैतिक स्थिति तथा यात्रा का बोध होता है। बुध ग्रह इसका प्रतिनिधत्व करता है।

अंक–6

छह का अंक वैवाहिक जीवन, प्रेम एवं प्रेम–विवाह, आपसी संबंध, सहयोग, सहानुभूति, संगीत, कला, अभिनय एवं नृत्य का परिचायक है। इसका प्रतिनिधित्व शुक्र को मिला है।

अंक –7

सात का अंक आपसी ताल मेल, साझेदारी, समझौता, अनुबंध, शान्ति, आपसी सामंजस्य एवं कटुता को जन्म देता है। इस अंक का प्रतिनिधित्व नेपच्यून या केतु ग्रह को मिला है।

अंक–8

शनि का अंक होने से इस अंक से क्षीणता, शारीरिक मानसिक एवं आर्थिक कमजोरी, क्षति, हानि, पूर्ननिर्माण, मृत्यु, दुःख, लुप्त हो जाना या बहिर्गमन हो जाता है। इसका स्वामित्व शनि का है जो यम का रूप है।

अंक–9

यह अन्तिम ईकाई अंक होने से संघर्ष, युद्ध, क्रोध, ऊर्जा, साहस एवं तीव्रता देता है। इससे विभक्ति, रोष एवं उत्सुकता प्रकट होती है। इसका प्रतिनिधि मंगल ग्रह है जो युद्ध का देवता है।

ग्रहों का प्रभाव मानव जीवन पर हमेशा से रहा है। इस प्रभाव को प्रसिद्ध नाटककार शेक्सपियर ने अपने कॉमेडी नाटक ''एज यू लाइक इट'' (As You Like it) में ग्रहों की चाल के अनुसार मनुष्य जीवन पर प्रत्येक ग्रह के पड़ने वाले प्रभाव को सात वर्गों में निम्नानुसार विभाजित किया है।

1– 4 वर्ष बाल्यकाल–परिवर्तन शीलता– चन्द्र ग्रह का प्रभाव, अंक 2

4 –12 वर्ष अध्ययन – ज्ञान – बुध ग्रह का प्रभाव, अंक 5

12–22 वर्ष प्रणय संबंध – प्रेम, विवाह – शुक्र ग्रह का प्रभाव, अंक 6

22–41 वर्ष महत्वाकांक्षा–बल–ओज– सूर्य ग्रह का प्रभाव, अंक 1

41–56 वर्ष एकाग्रता–तीव्रता– मंगल ग्रह का प्रभाव, अंक 9

56–68 वर्ष प्रौढ़ता–इच्छा पूर्ति– बृहस्पति ग्रह का प्रभाव, अंक 3

68–98 वर्ष ह्रास–झक्की स्वभाव– शनि ग्रह का प्रभाव, अंक 8

अंको के रंग एवं संगीत के स्वर

इन्द्र धनुष के सातों रंग अंको में समाहित हैं। इसी प्रकार संगीत के सात स्वर हैं, जो निम्न तालिका में दिये हैं।

अंक	संगीत स्वर	अंग्रेजी	रंग	स्वामी ग्रह
6	स	A	नीला	शुक्र
3	रे	B	बैंगनी	गुरू
1 या 4	ग	C	नारंगी	सूर्य या राहु
8	म	D	जंबुकी नील	शनि
5	प	E	पीला	बुध
2 या 7	ध	F	हरा	चन्द्र या केतु
9	नी	G	लाल	मंगल

शुक्र ग्रह संगीत, कला, काव्य तथा मन की कोमल भावनाओं पर अधिकार रखता है। अतः इसे संगीत का प्रथम स्वर 'स' एवं नीला रंग प्राप्त हुआ है। इसका नीला रंग औषधि की भाँति कार्य करता है। नीला रंग एवं 'स' का स्वर का शान्ति का प्रतीक है। यह स्नायु तंत्र को नियंत्रित करता है। उद्वेग, क्रोध को शान्त करता है। सभी संगीत वाद्यों में 'स' स्वर का प्रयोग लय बद्धता के लिये किया जाता है।

बृहस्पति ग्रह आशावादी है। गुरू का कार्य विस्तार है। एक गुरू के जितने अधिक शिष्य होंगे उसका विस्तार उतना ही अधिक होगा। श्वेत प्रकाश चाँदी की महीन पर्त से निकलने वाला रंग बैंगनी है। यह रंग शक्तिपूर्ण एवं आशावाद का प्रतीक है। संगीत के द्वितीय स्वर रे (मार्ग दर्शक) के रूप में इसका प्रयोग होता है।

सूर्य ग्रह जीवन को संचालित करता है। इसका रंग सुनहरी किरणों के रूप में समस्त जीवों को सुहावना लगता है। प्रातः बेला में सूर्य की किरणें सुनहरी ही दिखाई देती हैं। इसीलिये धूप का रंग पीला कहा जाता है। संगीत का तृतीय स्वर 'ग' शक्ति एवं बल प्रदान करता है।

शनि का रंग जंबुकी नील है। अर्थात गहरा नीला रंग। शनि विषाद का प्रतीक है। जब कोई दार्शनिक गहरे विचार में खो जाता है, तब उसके मन मष्तिष्क में विषाद उत्पन्न होता है। जो कि जंबुकी नील रंग का प्रतीक है। इसका मुख्य तत्व है निरंतर प्रयत्नशीलता। इसमें समुद्र की गहराई छिपी है। संगीत के चतुर्थ स्वर 'म' जो कि विषाद को प्रकट करता है, उससे इसका गहरा संबंध है।

बुध का संबंध पीले रंग से बताया गया है। यह रंग सबसे अधिक प्रकाश देने वाला रंग है। बुध मष्तिष्क की क्रियाशीलता, बुद्धि–विवेक, वाकपटुता का प्रतीक है। प्रकाश में ही हम सभी वस्तुओं को सही रूप में देख सकते हैं। बुध ग्रह सबसे अधिक प्रकाशवान ग्रह है। इसीलिये हमेशा सभी को जाग्रत रखता है अर्थात मष्तिष्क की चेतना को जगाए रखता है। संगीत का पाँचवा स्वर 'प' भी सबको जगाने की सामर्थ्य रखता है। जैसे घर में छोटा बालक भी पा.... पा.....पा...... करके सबको जगाए रखता है।

चन्द्र का संबंध हरे रंग से है। आपने देखा होगा कि चाँदी के सिक्के कुछ समय में हरे रंग के दागों से पट जाते हैं। इसी प्रकार तालाब के किनारे जल में हरे रंग की काई छा जाती है। चन्द्र रस या चन्द्र किरणों से पृथ्वी पर हरियाली छा जाती है। जो हरियाली हमारे मन को प्रशन्नता देती है। वैसी ही प्रशन्नता चन्द्र किरणों को देखने पर भी मिलती है। संगीत का छटा स्वर ध धातु का प्रतीक है और सभी रस रसायनों पर चन्द्र का अधिकार है।

मंगल का रंग लाल है। मंगल ग्रह संघर्ष, चोट, रक्त, घाव, मृत्यु, हत्या आदि से संबंधित है। इसके रूप में पेनी, नुकीली, चमकती वस्तुएँ आती हैं। जो कि आँखो में चुभ जाती हैं। इसी तरह लाल रंग खतरे की और इंगित करता है। जोकि मंगल का प्रतीक है।

संगीत का अन्तिम स्वर 'नी' भी संगीत की अन्तिम तीव्रता या चुभन को दर्शाता है।

नीचे प्रत्येक अंक की मित्र शत्रु सारिणी दे रहे हैं। जो सर्वत्र उपयोगी है।

अंक मित्रता सारिणी

ग्रह	अंक	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	1	4, 8	2, 3, 7, 9	5, 6
चन्द्र	2	7, 9	1, 3, 4, 6	5, 8
गुरू	3	6, 9	1, 2, 5, 7	4, 8
हर्षल	4	1, 8	2, 6, 7, 9	3, 5
बुध	5	3, 9	1, 6, 7, 8	2, 4
शुक्र	6	3, 9	2, 4, 5, 7	1, 8
नेपच्यून	7	2, 6	3, 4, 5, 8	1, 9
शनि	8	1, 4	2, 5, 7, 9	3, 6
मंगल	9	3, 6	2, 4, 5, 8	1, 7

सेफेरियल के मत से अंक मित्र सारिणी

अंक Numbers Number	अंक स्वामी Number Lord	स्पन्दन अंक Vibrates To Numbers	आकर्षित अंक Attracts To with Numbers	विपरीत अंक Disagrees Numbers	सम अंक Passive To
1	सूर्य	9	4, 8	6, 7	2, 3, 5
2	चन्द्र	8	7, 9	5	1, 3, 4, 6
3	गुरू	7	5, 6, 9	4, 8	1, 2
4	हर्षल	6	1, 8	3, 5	2, 7, 9
5	बुध	5	3, 9	2, 4	1, 6, 7, 8
6	शुक्र	4	3, 9	1, 8	2, 5, 7
7	नेपच्यून	3	2, 6	1, 9	4, 5, 8
8	शनि	2	1, 4	3, 9	5, 7, 9
9	मंगल	1	2, 3, 6	7	4, 5, 8

सेफेरियल के मतानुसार अंक 1 रविवार को, अंक 2 सोमवार को, अंक 3 गुरुवार को, अंक 4 रविवार को, अंक 5 बुधवार को, अंक 6 शुक्रवार को, अंक 7 सोमवार को, अंक 8 शनिवार को, एवं अंक 9 मंगलवार को अधिक शुभ फल प्रदान करते हैं।

कीरो के मतानुसार अंक मित्र एवं वार सारिणी

अंक	अंक स्वामी	मित्र अंक	शुभ वार
1	सूर्य	2, 4, 7	रविवार, सोमवार
2	चन्द्र	1, 4, 7	रविवार, सोमवार, शुक्रवार
3	गुरू	6, 9	गुरूवार, शुक्रवार, मंगलवार
4	हर्षल	1, 2, 7, 8	रविवार, सोमवार
5	बुध	6	बुधवार, शुक्रवार
6	शुक्र	3, 9	शुक्रवार, मंगलवार, गुरूवार
7	नेपच्यून	1, 2, 4	रविवार, सोमवार
8	शनि	4	शनिवार, रविवार, सोमवार
9	मंगल	3, 6	मंगलवार, गुरूवार, शुक्रवार

3. मूल अंक बनाना

यहाँ आपको मूल अंक अर्थात मूलांक बनाना बता रहे हैं। यह जन्म की तारीख से बनाया जाता है। यदि किसी की जन्म तारीख न हो तो यह जन्म तिथि से भी बनाया जा सकता है। मान लो किसी व्यक्ति की जन्म तारीख एक है, तो उसका मूलांक 1 होगा। इसी प्रकार 2 का 2, 3 का 3, 4 का 4, 5 का 5, 6 का 6, 7 का 7, 8 का 8 एवं 9 जन्म तारीख का मूल अंक 9 रहेगा। तारीख 10 का 1+0 = 1 होगा तथा इसी तरह 11 का 1+1 = 2, 12 का 1+2 = 3, 13 का 1+3 = 4, 14 का 1+4 =5, 15 का 6, 16 का 7, 17 का 8, 18 का 9, 19 का 10 अर्थात् 1, 20 का 2, 21 का 3, 22 का 4, 23 का 5, 24 का 6, 25 का 7, 26 का 8, 27 का 9, 28 का 10 अर्थात् 1, 29 का 11 अर्थात् 2, 30 का 3, 31 का 4 मूलांक बनेगा।

जन्मतिथि से मूलांक बनाने की विधि यह है कि एक महीने में 30 तिथियाँ होती हैं और मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से शुरू होता है। पूर्णमासी के बाद की प्रतिपदा की संख्या 16, द्वितीया की 17, तृतीया की 18 होती है। इसी प्रकार अमावस्या की तिथि संख्या 30 होगी। शुक्लपक्ष की प्रतिपदा की संख्या 1 से चलकर पूर्णमासी तक 15 तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से अमावस्या तक 16 से लेकर 30 तक होती है। वैसे आजकल अंग्रेजी तारीख सर्वत्र प्रचलित है और पूरी जन्मतिथि मालूम हो तो अंग्रेजी तारीख भी निकाली जा सकती है। परन्तु यदि कभी अंग्रेजी तरीख न मिले और तिथि मालूम हो जाये तो तिथि का मूल अंक बनाकर फल कथन किया जा सकता है।

किसी भी संख्या का मूल अंक जानने का आसान तरीका यह है कि उस संख्या में 9 का भाग दीजिये, जो शेष बचे वही मूल अंक होगा। 0 शून्य बचे तो 9 मूल अंक होगा। नीचे 1 से 9 तक के मूलांकों के बाबत विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की जा रही है।

मूलांक 1 सूर्य

किसी भी वर्ष या महीने की 1, 10, 19 और 28 तारीख को जन्म लेने वाले व्यक्ति या जातक का मूलांक 1 होता है। ऐसे जातक सूर्य ग्रह से प्रभावित होते हैं। इन पर सूर्य का प्रभाव विशेष रूप से देखा गया है। यह स्थिर विचारधारा के व्यक्ति रहते हैं एवं अपने निश्चय पर दृढ़ रहते हैं। जीवन में जब भी यह किसी को वचन इत्यादि देते हैं तो उन्हे पूर्ण

निभाने की कोशिश करते हैं। इनकी इच्छा शक्ति दृढ़ होती है तथा जो भी कार्य या विचार अपने मन में बना लेते हैं, उनका पालन करने की निरन्तर कोशिश करते हैं। प्रेम संबंध या मित्रता के संबंध स्थाई और लम्बे समय तक मधुर बने रहते हैं। जब कभी किसी कारणवश इनका किसी से विवाद या शत्रुता हो जाती है तो ऐसी परिस्थिति में इनका शत्रु या विभाजित व्यक्ति से मन मुटाव दीर्घ काल तक बना रहता है।

इनकी मानसिक स्थिति स्वतन्त्र विचार धारा की होने से पराधीन रहकर कार्य करने में असुविधा महसुस करते हैं। किसी के अनुशासन में कार्य करने की अपेक्षा यह स्वतंत्र रूप से कार्य करना अधिक पसंद करते हैं। निष्पक्ष कोशिश एवं महत्वकांक्षा रहती है कि यह जो भी कार्य करें निष्पक्ष एवं स्वतंत्र हो, उस कार्य में किसी बाहरी व्यक्ति का बीच में हस्तक्षेप इनको मंजूर नहीं होता है। मूलांक 1 का स्वामी सूर्य ग्रह होने के कारण सूर्य से संबंधित गुण कमोवेश मात्रा में इनके अन्दर मोजूद रहती है। जिसके प्रभाव से यह दुसरों का उपकार एवं उपचार निरन्तर करते रहते हैं। सामाजिक क्षेत्र में यह सूर्य के समान ही प्रकाशित होना पसंद करते हैं। सामाजिक संगठनो में मुखिया एवं निरन्तर उच्च पद पाने की इनकी चाहत बनी रहती है। जिसे यह अपनी मेहनत एवं लगन से प्राप्त कर लेते हैं।

मूलांक 1 के अन्दर जन्म लेने वाले व्यक्ति महत्वाकांक्षी होते हैं। उन्हे किसी भी प्रकार का प्रतिबंध अपने ऊपर पसंद नहीं आता। वे जो भी कार्य, धंधा या व्यवसाय अपनाते हैं उसमें सदैव उन्नति के शिखर पर अपने परिश्रम से पहुँचते हैं। अपने क्षेत्र एवं व्यवसाय में हमेशा प्रमुख की भूमिका अदा करने के आकांक्षी होते हैं। यह विभागी प्रमुख होने के साथ साथ सत्ता सम्पन्न होते हैं एवं अपने अधिनस्थ व्यक्तियों से मान सम्मान प्राप्त करना जानते हैं। चूंकि इनमें नेतृत्व करने का गुण सर्वोपरि रहता है, इसलिये यह गुण जन्म से मृत्यु तक इनमें बना रहता है। जीवन की प्रारंम्भिक अवस्था में भी यह गुण दिखलाई देता है। यह धैर्यवान होते हैं एवं धैर्य का साथ कभी नहीं छोड़ते। यह अपने अध्ययन में कमी नहीं आने देते एवं अच्छी सूझ बूझ के साथ अपनत्व भाव रखते हुए स्वतन्त्रता पूर्वक कार्य करते रहते हैं तथा अपने कार्य में किसी पर निर्भर नहीं रहते। यह भावुकता में दुसरों पर विश्वास कर कभी कभी धोखा भी खा जाते हैं।

मूलांक 1 वाले व्यक्तियों के लिए किसी भी मास की 1, 10, 19 और 28 तारीख विशेष महत्वपूर्ण होती है। इन तारीखों में इनके कई कार्य बनते हैं। इनको रविवार एवं सोमवार का दिन महत्वपूर्ण रहता है। यदि इन्ही वारों में उपरोक्त तारीख भी आ जाती है तब यह इनके लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए उपयुक्त रहती है। इनके लिए जनवरी, अप्रेल, जुलाई एवं अक्टुबर का मास विशेष प्रभावशाली रहता है।

इनके जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष– 1, 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73 मूलांक के प्रभाव

से तथा 8, 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71, 80, एवं 13, 22, 31, 40, 49, 67, 76 मित्रांक के प्रभाव से हैं। इन वर्षो में सभी महत्वपूर्ण घटनाएं घटित होने के योग रहते हैं।

मूलांक 1 के प्रभाववश इस्वी सन् जिनका योग 1, 4, 8, होता है इनके लिए विशेष घटनाक्रम वाले होते हैं। जोकि मूलांक 1 के प्रभाव से 2008, 2017, 2026, 2035, 2044, 2053, 2062, 2071, 2080, मित्रांक 4 के प्रभाव से 2002, 2011, 2020, 2029, 2038, 2047, 2056, 20.65, 2074 एवं मित्रांक 8 के प्रभाव से 2006, 2015, 2024, 2033, 2042, 2051, 2060, 2069, 2078 हैं।

मूलांक 1 वाले व्यक्तियों की अंक 4 एवं अंक 8 से मित्रता रहती है। अतः इनके जीवन में 1, 4, 8 के अंक विशेष घटना क्रम वाले होते हैं। अंक 2, 3, 7, 9 सम रहते हैं तथा 5 एवं 6 के अंक शत्रु होते हैं। उपरोक्त मित्र शत्रु एवं सम अंक से संबंधित दिन, तारीख, मास, वर्ष का भी प्रभाव इन पर आता है।

कीरो के मतानुसार इनके शुभ अंक 1, 2, 4 तथा 7 हैं। जिनका जन्म 21 मार्च से 28 अप्रेल के मध्य होता है उनमें भी अंक 1 के सभी गुण विद्यमान रहते हैं। क्योंकि इस अवधि में सूर्य का मेष राशि में प्रवेश होता है और इस काल में सूर्य पूर्णतः उच्च भाव में पूर्णतः सर्व शक्तिमान होता है। जिनका जन्म 21 जुलाई से 28 अगस्त के मध्य होता है वह भी 1 या सूर्य के प्रभाव में होते हैं। क्योंकि इस समय सूर्य अपनी राशि सिंह में रहता है। मेष एवं सिंह दोनो ही अग्नि तत्व की राशियां हैं। इस कारण इनका स्वभाव सिंहवत होता है। सिंहवत होने से यह अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करते हैं। इनको अधिकांशतः अपने कार्यो में सफलता प्राप्त होती है तथा समाज में प्रतिष्ठा मिलती है। यह व्यर्थ के आडम्बर, तड़क भड़क से दूर रहते हैं। इनका क्रोध क्षणिक होता है। चाटुकारता, दिवानगी, ओछापन, खुदगर्जी पसंद नहीं होती। सत्य के मार्ग पर यह चलते हैं तथा इनके विचारों में मौलिकता, नई सूझ बूझ, तीव्र कल्पना शक्ति होती है। सिंह में या मेढ़ा में जितनी ताकत होती है उतनी ही ताकत से यह अपने कार्य में लगे रहते हैं। दूसरों की मदद करना इनके स्वभाव में रहता है। ऐसे व्यक्ति विपरीत लिंग की ओर सदैव आकर्षित रहते हैं और कई बार चोट भी खाते हैं। परिर्वतन इनका विशेष गुण है। व्यापार हो या नौकरी, समाज सेवा या राजनिति, धार्मिक क्षेत्र हो या पारिवारिक इनमें यह सदैव परिवर्तन के अनुयायी रहते हैं। इस कारण इनके स्वभाव को तथा आचरण को समझना थोड़ा कठिन होता है। एक ही मार्ग, एक ही लक्ष्य इनको पसंद नहीं आता। ऐसे व्यक्ति गुप्त शत्रुओं से कभी कभी घात खाते रहते हैं।

कीरो के मत से इनकी मित्रता अंक 1, 2, 4 तथा 7 अंक वालों से रहती है। जिनका जन्म 21 मार्च से 28 अप्रेल के मध्य तथा 21 जुलाई से 28 अगस्त के मध्य होता है उनसे भी इनके संबंध मधुर बनते हैं। इनके लिए रविवार एवं सोमवार के दिन सभी कार्यों के लिए

शुभ रहते हैं। अंक 1 के अन्तर्गत जन्मे व्यक्तियों के लिए अधिक भाग्यशाली रंग सुनहरी, पीला और तांबई या सुनहरा तांबई रंग हैं। इनका श्रेष्ठ रत्न पुखराज, पीतरत्न, पीला हीरा तथा इनके रंगों के अन्य रत्न हैं। भारतीय मत से इनका प्रभावशाली रत्न माणिक है।

सेफेरियल के मतानुसार मूलांक एक के व्यक्तियों को नौ का अंक स्पन्दित करता है। चार एवं आठ के अंक आकर्षित करते हैं तथा 6 एवं 7 के अंक विपरीत रहते हैं। जबकि 2, 3 एवं 5 के अंक मध्यम फल देते हैं। इन्हे रविवार का दिन विशेष लाभप्रद रहता है।

मूलांक 2 चन्द्रमा

वर्ष के किसी भी मास की तारीख 2, 11, 20 और 29 तारीख को जन्म लेने वाले जातक का अंक ज्योतिष के आधार पर मूलांक दो होता है। मूलांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। ऐसे जातकों पर चन्द्र का विशेष प्रभाव देखा गया है। चन्द्र के प्रभाववश ऐसे जातक कल्पनाशील, कलाप्रिय एवं स्नेहशील स्वभाव के होते हैं। इनकी कल्पनाशक्ति उच्च कोटि की होती है, लेकिन शारीरिक शक्ति इनकी बहुत अच्छी नहीं होती। इनमें बुद्धि चातुर्य काफी अच्छा रहता है एवं बुद्धि विवेक के कार्यो में ये दूसरों से बाजी मार ले जाते हैं। जिस प्रकार से इनके मूलांक स्वामी चन्द्रमा का रूप एकसा नहीं रहता समयानुसार घटता–बढ़ता रहता है, उसी तरह इनके जीवन में भी काफी उतार चढाव आते हैं तथा एक विचार या योजना पर दृढ़ नहीं रह पाते।

इनकी योजनाओं में बदलाव होता रहता है एवं एक योजना को छोड़कर दूसरी को प्रारम्भ करने की प्रवृत्ति इनके अन्दर पाई जाती है। धीरज एवं अध्यवसाय की इनमें कमी रहती है। इससे इनके कई कार्य समय पर पूर्ण नहीं होते। आत्म विश्वास की मात्रा इनके अन्दर कम रहेगी एवं स्वयं अपने ऊपर पूर्ण भरोषा नहीं रख पाते, जिससे कभी–कभी इनको निराशा का सामना करना पड़ता है। थोड़ी–सी निराशा से उदासीन हो जाते हैं और बहुधा असफल रहते हैं। यह लोग अपनी भावुकता पर काबू पा लें तो जीवन में सफल हो सकते हैं।

इनकी सामाजिक स्थिति उत्तम दर्जे की रहेगी एवं मानसिक रूप से जिसे यह अपना लेंगे वैसे ही लाभ इनको प्राप्त होंगे। जनता के मध्य एक लोकप्रिय व्यक्ति रहेंगे, तथा स्वयं की मेहनत से अपनी सामाजिक स्थिति निर्मित करेंगे। इनको अवस्थानुसार नेत्र, उदर, एवं मूत्र संबंधी रोगों का सामना करना पड़ सकता है, मानसिक तनाव तथा शीतरोग भी परेशान करेंगे। जल से उत्पन्न रोग कफ, सर्दी–जुकाम, सिरदर्द की शिकायतें भी यदाकदा होंगी।

मूलांक 2 के जातकों में यद्यपि चारित्रिक विपरीतता रहती है। फिर भी इनमें सहजता पूर्ण स्पन्दन विद्यमान रहता है। इनमें सूर्य के स्त्रियोचित गुण विद्यमान रहते हैं। जिससे वे अच्छे मित्र बन सकते हैं। ऐसे जातक प्रकृति से शिष्ट, कल्पनाशील, कलात्मक प्रवृत्ति के और रोमांटिक होते हैं। ये अन्वेषक प्रवृत्ति के होते हैं, किन्तु अपने विचारों को उतनी दृढ़ता के साथ क्रियान्वित नहीं कर पाते, जितनी कि एक अंक वाले करते हैं। इनके गुण शारीरिक की अपेक्षा बौद्धिक रूप में अधिक दिखलाई पड़ते हैं और यह अंक 1 के व्यक्तियों की अपेक्षा शारीरिक रूप में कमजोर होते हैं।

अंक 2 वाले व्यक्तियों को जिन प्रमुख कमियों से बचना चाहिए वह हैं अपने विचारों एवं योजनाओं के प्रति उद्विग्नता अस्थिरता निरन्तरता का अभाव एवं आत्म विश्वास की कमी। ये व्यक्ति अत्यधिक सवेंदनशील होते हैं और यदि इनको सुख और सुविधा पूर्ण वातावरण न मिले तो बहुत जल्दी निराश व हताश हो जाते हैं। यह रजोगुण प्रधान व्यक्ति, परलोक सिधार की इच्छा रखने वाले, व्यवहार कुशल माया का सम्पूर्ण भोग करने वाले, निरन्तर उन्नति की और अग्रषर नवीन कार्यों, क्रिया कलापों का अनुसंधान करने वाले, मानसिक शक्ति एवं विचार शक्ति प्रधान, ऐश्वर्य सम्पन्न कीर्तिवान अपरिचित व्यक्ति को अपना बनाने वाले, आकर्षक व्यक्तित्व के धनी, मधुर भाषी होते हैं। इनकी बुद्धि अद्भुत होती है। किसी व्यक्ति के मन में क्या है यह क्यों आया है, इसका भान इनको आसानी से हो जाता है और युक्ति संगत जबाव देने में सक्षम होते हैं।

इनके अन्दर छिपे स्त्रियोचित गुण को इनकी बातचीत के लहजे, चाल–चलन, हाव भाव, बनाव श्रृंगार, खाने पीने उठने बैठने एवं रहन सहन से समझा जा सकता है। यह घर से बाहर रहना अधिक पसंद करते हैं एवं निरन्तर कल्पना लोक में विचरण करते रहते हैं। सौर्न्दय प्रेमी होने से जहाँ सुन्दरता देखते हैं वहीं ठहर जाते हैं। भ्रमण, स्वस्थ मनोरंजन यात्रा बागवानी तैरना, कलात्मक चीजे बनाने का भरपूर शौक होता है। इनकी ओर आकर्षित होकर अपरिचित व्यक्ति भी इनके मित्र बन जाते हैं।

मूलांक 2 वाले व्यक्तियों के लिए किसी भी मास की 2, 11, 20 और 29 तारीख विशेष महत्वपूर्ण रहती है। इन तारीखों में इनके बहुत से कार्य बनते हैं। इनको सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार के दिन महत्वपूर्ण रहते हैं। यदि इन्ही वारों में उपरोक्त तारीख भी आ जाती है तब यह इनके लिए महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए उपयुक्त रहती है। इनके लिए फरवरी, अप्रेल, अगस्त और नवम्बर के मास विशेष प्रभाव शाली रहते हैं तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त एवं 21 अप्रेल से 21 मई तक का समय अनुकूल रहता है।

इनके जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष– 2, 11,20, 29, 38, 47, 56, 65, 74, मूलांक के प्रभाव से तथा 7, 16, 25, 34,43, 52, 61, 70 एवं 9, 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72, 81 मित्रांक

के प्रभाव से हैं। इन वर्षो में सभी महत्वपूर्ण घटनाएं घटित होने के योग रहते हैं।

मूलांक 2 के प्रभाववश इस्वी सन् जिनका योग 2, 7, 9 होता है। इनके लिए विशेष घटनाक्रम वाले होते हैं। जोकि मूलांक 2 के प्रभाव से 2009, 2018, 2027, 2036, 2045, 2054, 2063, 2072, 2081 मित्रांक 7 के प्रभाव से 2005, 2014, 2023, 2032, 2041, 2050, 2059, 2068, 2077 एवं मित्रांक 9 के प्रभाव से 2007, 2016, 2025, 2034, 2043, 2052, 2061, 2070, 2079 है।

मूलांक 2 वाले व्यक्तियों की अंक 7 एवं अंक 9 से मित्रता रहती है। अतः इनके जीवन में 2, 7, 9 के अंक विशेष घटनाक्रम वाले रहते हैं। अंक 1, 3, 4, 6 सम रहते हैं तथा 5 एवं 8 के अंक इनके शत्रु होते हैं। उपरोक्त मित्र शत्रु एवं सम अंक से संबंधित दिन, तारीख, मास, वर्ष का भी प्रभाव इन पर आता है।

कीरो के मतानुसार इनके शुभ अंक 1, 2, 4 एवं 7 हैं। जिनका जन्म 20 जून से 27 जुलाई के मध्य हुआ है। वह इनके अच्छे मित्र हो सकते हैं, क्योंकि इस समय में सूर्य कर्क राशि में रहता है। 21 अप्रेल से 21 मई तक सूर्य वृष राशि में रहता है, जो चन्द्रमा की उच्च राशि होने से इस काल में जन्म लिए व्यक्तियों से भी इनकी अच्छी मित्रता होती है। इन व्यक्तियों के लिए सप्ताह के रविवार, सोमवार, और शुक्रवार के दिन लाभदायक हैं। शुक्रवार इसलिए लाभदायक है कि वृष राशि जो चन्द्र की उच्च राशि है उसका स्वामी है। इसके अतिरिक्त इनके लिए अपने अंक से मेल खाते अंक वाले दिन अर्थात महीने की 2, 11, 20, 29 तारीखें और इनके बाद 1, 4, 7 अंकों से परस्पर विनिमयशील तिथियां जैसे महीने की 1, 4, 7, 10, 13, 16, 19, 22, 25, 28 और 31 तारीखें अधिक लाभप्रद सिद्ध होती हैं।

इनके भाग्यवर्द्धक रंग हैं, हरा रंग और उसके हल्के से लेकर गहरे तक सभी शेड, क्रीम कलर और सफेद रंग। जहाँ तक सम्भव हो इन्हें गहरे रंगों, जैसे– काले, बैगनी और गहरे लाल रंग से बचना चहिए। इनके लाभप्रद रत्न हैं मोती, चन्द्र रत्न, पीला हरित रत्न, यदि संभव हो तो इन्हें शरीर से छूता हुआ हरितमणि धारण करना चाहिए।

सेफेरियल के मतानुसार मूलांक दो के व्यक्तियों को 8 का अंक स्पन्दित करता है। 7 एवं 9 के अंक आकर्षित करते हैं तथा 5 का अंक विपरीत रहता है। जबकि 1, 3 4 एवं 6 के अंक मध्यम फल देते हैं। इन्हे सोमवार का दिन विशेष लाभप्रद रहता है।

मूलांक 3 गुरू

मूलांक 3 का स्वामी गुरु या बृहस्पति है। जो व्यक्ति 3, 12, 21 या 30 तारीख को

पैदा हुए हों उनका मूल अंक 3 होता है। पाश्चात्य मत के अनुसार 19 फरवरी से 21 मार्च तक और 21 नवम्बर से 21 दिसम्बर तक के बीच के समय में तथा भारतीय मत से 15 दिसम्बर से 13 जनवरी तथा 14 मार्च से 12 अप्रैल के बीच जिनका जन्म होता है, उन पर बृहस्पति का प्रभाव रहता है। जो व्यक्ति इस काल में उपरोक्त तारीखों को पैदा होते हैं उन पर बृहस्पति का विशेष प्रभाव रहता है या पड़ता है।

3 अंक वाले व्यक्ति अनुशासन में कठोर होते हैं। फौज या किसी सरकारी विभाग में अध्यक्ष हों तो अपने अधीन काम करने वाले कर्मचारियों से बहुत सख्ती से काम लेते हैं। काम में ढील या शिथिलता बर्दाश्त नहीं करते और इतनी सख्ती से काम लेते हैं कि अधिनस्थ व्यक्ति ही इनके शत्रु हो जाते हैं। यह लोग बहुत महत्वाकांक्षी और शासन करके हुकूमत करने की इच्छा रखने वाले होते हैं।

ऐसे जातक महत्वाकांक्षी होते हैं, और दूसरों पर शासन करने की इनकी सहज इच्छा रहती है। गुरू ग्रह के प्रभाववश इनकी विचारधारा धार्मिक रहेगी तथा विद्या, अध्ययन, अध्यापन, बौद्धिक स्तर के कार्य तथा धर्म–कर्म के क्षेत्र में इनको अच्छी उपलब्धियाँ एवं ख्याति प्राप्त होती है।

मानसिक रूप से ये काफी संतुलित एवं विकसित व्यक्ति होंगे तथा किसी भी विषय को समझने की इनमें विशेष क्षमता रहेगी। तर्क एवं ज्ञान शक्ति इनकी अच्छी रहेगी। यह मन से किसी का भी अहित नहीं करेंगे और दूसरों की भलाई करने में भी अपना समय देते रहेंगे। दान–पुण्य के कार्य भी ये काफी करते हैं। सामाजिक स्थिति इनकी काफी अच्छी रहेगी। समाज में ये अग्रणी एवं मुखिया पद का निर्वहन करना अधिक पसन्द करेंगे। दूसरों को सच्ची सलाह देना अपना धर्म समझेंगे।

ऐसे जातक स्वभाव से शान्त, कोमल हृदय, मृदुवाणी एवं सत्यवक्ता होते हैं। सत्य के मार्ग पर चलते हुये कष्टों को भी सहन करेंगे एवं अन्त में विजयश्री को प्राप्त करेंगे। स्वास्थ्य इनका साधारणतः अनुकूल ही रहता है। लेकिन कभी–कभी मदाग्नि, जठराग्नि, उदर विकार इत्यादि रोगों का सामना करना पड़ता है।

अंक 3 के अन्तर्गत जन्मे जातक भी अंक 1 के अन्तर्गत जन्मे जातको की भांति ही निश्चित ही महत्वाकांक्षी होते है। ये कभी भी अधिनस्थ रहकर प्रसन्न नही रहते इनका मुख्य उद्देश्य उन्नती करके विश्व में नाम कमाना ओर दूसरों पर नियंत्रण तथा आधिपत्य जमाना होता है। ऐसे जातक अपने अधिनस्थों से अपने आदेशों का पालन कराने के अद्भुत

क्षमता रखते है। ये सभी बातों में अनुशासन और व्यवस्था रखना पंसद करते हैं ये लोग स्वयं भी शीघ्रता से आदेशों का पालन करते हैं और चाहते है कि इनके आदेशों का भी तुरंत पालन हो।

इस अंक के जातक जो भी कार्य क्षेत्र चुने अथवा रोजगार व्यवसाय अपनाए उसमें उच्च शिखर पर पहुँचते है। सेना या जल सेना ,सरकारी नौकरी अध्यन अध्यापन धार्मिक कृत्य और सामान्य जीवन में विशेष सफल रहते है। विश्वसनीयता वाले वाले एवं उत्तरदायित्व के पदों पर इनकी पूरी धाक जमती है। क्योंकि अपने कर्त्तव्य पालन के प्रति ये लोग बहुत अधिक निष्ठा वान होते है।

ऐसे जातको में कुछ कमजोरिया भी होती है। इन लोगों में तानाशाही प्रवृत्ति बढ़ जाती है और स्वयं कानून बनाने लग जाते हैं और उन कानूनों का पालन कराने के लिए अड़ जाते हैं। इनका प्रयास यही रहता है कि इनके विचारों को ही क्रियात्मक रूप प्रदान किया जाए। इसी कारण से ये झगड़ालु प्रकृति के ना होते हुए भी आसानी से अपने शत्रु बना लेते हैं। ये जातक बड़े स्वाभिमानी किस्म के होते है। इसलिए किसी का भी किसी भी तरह का एहसान लेने से कतराते हैं। ये पूर्ण रूप से स्वतंत्र होते है। और जरा से भी प्रतिबंध से क्रोधित हो जाते हैं।

19 फरवरी से 21 मार्च तक तथा 21 नवम्बर से 21 दिसम्बर तक के सायन सौर मास का समय तथा 3, 12, 21 और 30 तारीख, बृहस्पति, शुक्रवार तथा मंगलवार का दिन शुभ तथा महत्वपूर्ण है। कोई शुभ काम, नया काम, इन तारीखों व महीनों में गुरूवार के दिन आरम्भ करें तो सफलता की काफी आशा रहती है। इनके अच्छे वर्ष हैं 3, 12, 21, 30, 39, 48, 57 तथा 66वाँ। जो व्यक्ति 3,12, 21 या 30 तारीख को पैदा हुए हों उनका मूल अंक 3 होता है। पाश्चात्य मत के अनुसार 19 फरवरी से 21 मार्च तक और 21 नवम्बर से 21 दिसम्बर तक के बीच के समय में तथा भारतीय मत से 15 दिसम्बर से 13 जनवरी तथा 14 मार्च से 12 अप्रैल के बीच जिनका जन्म हुआ हो उन पर बृहस्पति का प्रभाव रहता है। जो व्यक्ति इस काल में उपरोक्त तारीखों को पैदा होते हैं उन पर बृहस्पति का विशेष प्रभाव रहता है या पड़ता है।

3 मूल अंक की 6 तथा 9 अंक के साथ मित्रता तथा अनुकूलता है। इस कारण जिन व्यक्तियों की जन्म तारीख का मूल अंक 6 या 9 बनता हो, उनके साथ 3 अंक वाले की मित्रता ठीक रहती है। साझेदारी या विवाह भी सफल रहते हैं और 6 तथा 9 अंकों के शुभ तथा महत्वपूर्ण वर्ष, मास, दिन तथा तारीखें भी आमतौर पर अच्छी रहती हैं। किसी व्यक्ति

की यदि वह तारीखें खराब जाती हों तो उसे अपने शुभ व महत्वपूर्ण कार्य इन तारीखों, दिनों व मासों में नहीं करने चाहिए। यदि किसी व्यक्ति को 6 व 9 मूल अंक के शुभ वर्ष, मास या दिन खराब गए हैं तो आगे भी उनके खराब ही जाने की आशंका रहती है और यदि यह वर्ष, मास, दिन व तारीखें शुभ गई हों तो भविष्य में भी इनके शुभ व अनुकूल ही रहने की सम्भावना है।

3 मूल अंक वाले व्यक्तियों को चमकीला गुलाबी रंग या हल्का जामुनी रंग विशेष शुभ तथा अनुकूल रहता है। स्त्रियाँ इन रंगों की पोशाक पहने और पुरूष वर्ग कमरे का फर्नीचर, परदे, दीवारों का रंग इन रंगों का रखें तो ठीक रहता है।

मूलांक 3 के प्रभाववश इस्वी सन् जिनका योग 3, 6, 9 होता है इनके लिए विशेष घटनाक्रम वाले होते हैं। जोकि मूलांक 3 के प्रभाव से 2001, 2010, 2019, 2028, 2037, 2046, 2055, 2064, 2073 मित्रांक 6 के प्रभाव से 2004, 2013, 2022, 2031, 2040, 2049, 2058, 2067, 2076 एवं मित्रांक 9 के प्रभाव से 2007, 2016, 2025, 2034, 2043, 2052, 2061, 2070, 2079 हैं।

मूलांक 3 वाले व्यक्तियों की अंक 6 एवं अंक 9 से मित्रता रहती है। अतः इनके जीवन में 3, 6, 9, के अंक विशेष घटनाक्रम वाले होते है। अंक 1, 2, 5, 7, सम रहते है। तथा 4 एवं 8 के अंक शत्रु होते है। उपरोक्त मित्र शत्रु एवं सम अंक से संबंधित दिन, तारीख, मास, वर्ष का भी प्रभाव इन पर आता है।

कीरो के मतानुसार अंक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है। अतः इनको 3 , 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 और 30 तारीख सौभाग्यशाली रहती है। इन्हे बृहस्पतिवार, शुक्रवार, मंगलवार शुभ रहता है। इनमें भी बृहस्पतिवार अधिक महत्वपूर्ण रहता है। ये दिन तब और अधिक प्रभावी हो जाते हैं, यदि 3 के अंक की तिथि अर्थात माह की 3, 12, 21 और 30 तारीख हो। इसके उपरान्त सौभाग्यपूर्ण समय के परस्पर विनिमय होने वाले अंक 6 और 9 अर्थात माह की 6, 9, 15, 18, 24 एवं 27 तारीख हो। भाग्यशाली रंगों की दृष्टि से इन्हें चमकीला गुलाबी, बैंगनी, हल्का जामुनी आदि रंग का या इनके ही धागे के कपड़े पहनने चाहिए। इन्ही रंगों को कमरे में भी प्रयुक्त करना चाहिए। नीला, गहरा लाल और गुलाबी रंग भी इनके लिए लाभदायक है, किन्तु बहुत अधिक नहीं। इनका भाग्यदायक रत्न बिल्लौर या नीलमणि है। इसे इन्हें अवश्य ही सदैव धारण किए रहना चाहिए और इस प्रकार पहनना चाहिए कि यह इनके शरीर को स्पर्श करता रहे।

सेफेरियल के मतानुसार मूलांक 3 के व्यक्तियों को 7 का अंक स्पन्दित करता है। 5, 6 एवं 9 के अंक आकर्षित करते हैं तथा 4, एवं 8 के अंक विपरीत रहते हैं। जबकि 1 एवं 2 के अंक मध्यम फल देते हैं। इन्हे बृहस्पतिवार का दिन विशेष लाभप्रद रहता है।

मूलांक 4 राहु या हर्षल

4 अंक का मूल अधिष्ठाता हर्षल नामक ग्रह है। भारतीय मत से राहु ग्रह है। राहु या हर्षल का प्रभाव है सहसा प्रगति, विस्फोट, आश्चर्यजनक कार्य, असंभावित घटनायें आदि। जिन व्यक्तियों की जन्म तारीख 4, 13, 22, 31 होती है उनका मूल अंक 4 होता है। 4 मूल अंक वाले व्यक्ति संघर्षरत रहते हैं। आम धारणा से उनकी राय प्रायः नहीं मिलती और उनके विचार जमाने से काफी आगे, अलग ही होते हैं। अपने विरोध करने की आदत के कारण ऐसे व्यक्तियों के शत्रु भी बहुत बन जाते हैं। अक्सर यह व्यक्ति सुधारक, पुरानी प्रथाओं के विरोधी, नई–नई बातों और प्रथाओं के पोषक होते हैं। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक किसी भी क्षेत्र में हों, यह लोग पुरानी प्रथा को हटाकर नई स्थापित करना पसन्द करते हैं। दूसरों के साथ मित्रता जल्दी स्थापित नहीं करते परन्तु 1, 2, 7 तथा 8 मूल अंक वालों के साथ सहानुभूति या सौहार्द बहुधा हो जाता है। धन संग्रह करना पसन्द नहीं होता। मौज करना और खुश रहना इनका स्वभाव होता है। यदि ये व्यक्ति अपनी संघर्ष करने की प्रवृत्ति पर काबू पाकर सहनशील तथा सहिष्णु बन सकें और शत्रुता कम पैदा करें तो अधिक सफल हो सकते हैं।

ऐसे जातकों के जीवन में कई असंभावित घटनायें भी घटती हैं। एकाध घटनायें ऐसी भी घटित होती हैं जो इनका केरियर बदल देती हैं। ये एक संघर्षशील व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं तथा इनकी विचार धारा भी आम धारणा से प्रायः अलग रहती है। जमाने से ये काफी आगे की सोच रखते हैं तथा अपना विरोध प्रगट करने की आदत के कारण स्वयं अपने आलोचक तैयार करते हैं। पुरानी प्रथाओं, रीतियों के विरोधी होते हैं तथा उनमें सुधार करने की पूरी कोशिश करते हैं। ये अपने कार्यक्षेत्र में पुरानी प्रथाओं को नवीन रूप में ढालने की भी कोशिश करते हैं। अपने जीवन में ये धन संग्रह अधिक नहीं कर पाते लेकिन नाम, यश अधिक प्राप्त करते हैं। समाज में आमूल–चूल परिवर्तन देखना इनका स्वभाव रहता है। यदि ये अपनी संघर्ष करने की प्रवृत्ति पर अंकुश रखकर सहनशील तथा सहिष्णु बन सकें और शत्रुता कम पैदा करें तो अपने जीवन में अधिक सफलता अर्जित कर सकते हैं।

इनकी विचार धारा सुधार वाली होने से ये समाज में अच्छी ख्याति प्राप्त करते हैं। लेकिन यह ख्याति स्थिर नहीं रहती कभी तो उच्चता के शिखर पर होगी और कभी मन्द। अतः इनको निरन्तर कार्य में लगे रहना पड़ेगा और नये–नये परिवर्तन, अविष्कारों द्वारा

अपना नाम रोशन करते रहना होगा। स्वास्थ्य इनका साधारणतः उत्तम रहता है, लेकिन कभी–कभी अत्यधिक श्रम एवं मानसिक थकान के कारण सिरदर्द, गर्मी से उत्पन्न रोग, मानसिक तनाव आदि का सामना करना पड़ता है।

अंक 4 के जातक विशिष्ट चरित्र वाले होते हैं। ये हर बात को विपरीत पक्ष से ही देखते हैं। किसी भी प्रकार के वाद–विवाद में ये विपक्ष में रहते हैं। यद्यपि ये झगड़ालू प्रवृत्ति के नहीं होते, किन्तु फिर भी विरोधी बनाते हैं और कुछ तो ऐसे शत्रु बन जाते हैं जो चोरी छिपे इनका लगातार विरोध करते रहते हैं। इनके सामने कोई भी विचार रखा जाये, ये उसके प्रति अपनी प्रकृति अनुसार स्वाभाविक रूप से अलग नजरिया अपनाते हैं। इनकी प्रकृति ऐसी रहती है कि ये कायदे–कानूनों के विरुद्ध विद्रोह करते रहते हैं। यदि इनका बस चले तो ये सभी व्यवस्थाओं को उलट पलट दें यहां तक कि समाज और सरकार तक को। ये व्यक्ति संवैधानिक प्रीुत्व के विरुद्ध रहते हैं और पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में अपने नये नियम और कानून बनाते हैं। इनका विशेष झुकाव सामाजिक समस्या तथा सभी प्रकार के सुधारों की ओर रहता है एवं ये व्यक्ति अपने विचारों में बहुत ही व्यावहारिक तथा लीक से हटकर चलने वाले होते हैं।

अंक 4 जातकों में मुख्य दोष है कि ये तनावयुक्त और संवेदनशील होते हैं और शीघ्र ही इनकी भावनाओं को ठेस पहुंचती है। अपने आप को ये अकेला महसूस करते हैं और तब तक अपने आप को हताश एवं निराश महसूस करते हैं, तब तक कि सफलता प्राप्त नहीं कर लेते। अक्सर ये बहुत कम मित्र बनाते हैं लेकिन इन चन्द मित्रों के प्रति बेहद ईमानदार और निष्ठावान् बने रहते हैं। किन्तु किसी भी कार्य में या किसी विचार विमर्श में ये अपने को झुका एवं दबा महसूस करते हैं।

21 जून से 31 अगस्त तक के समय में हर्षल का विशेष प्रभाव रहता है और जिनका जन्म उपरोक्त तारीखों और इस समय में हुआ हो उन पर हर्षल का विशेष प्रभाव रहता है। इन जातकों को रविवार, सोमवार तथा शनिवार शुभ होते हैं और 4, 13, 22 तथा 31 तारीखें शुभ होती हैं। 21 जून से 31 अगस्त तक का समय भी अच्छा रहता है। इन जातकों को नये काम की शुरूआत और अपने महत्वपूर्ण कार्य इन्ही तारीखों में अगर रविवार, सोमवार या शनिवार भी पड़ता हो तो और भी अधिक शुभ रहता है और यदि 21 जून से 31 अगस्त के बीच का समय है तो विशेष प्रभावशाली रहता है। धूप–छांह का रंग, नीला, खाकी, भूरा रंग वस्त्रों, कमरे, फर्नीचर व परदों के लिये विशेष अनुकूल रहता है।

जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष 4, 13, 22, 31, 40, 49, 58 और 67वाँ वर्ष महत्वपूर्ण रहता है। 1, 10, 19, 28, 37, 46, 55 तथा 64वॉ वर्ष भी महत्वपूर्ण रहता है। पिछले

अनुभव से यदि 2 तथा 7 मूल अंक की संख्यायें, तारीख, वर्ष आदि भी यदि महत्वपूर्ण रहे हों तो आगे भी इन अंकों के वर्ष शुभ जायेंगे।

मूलांक 4 के प्रभाववश, इस्वी, सन् जिनका योग 4, 1, 8, होता है इनके लिए विशेष घटनाक्रम वाले होते हैं। जोकि मूलांक 4 के प्रभाव से 2002, 2011, 2020, 2029, 2038, 2047, 2056, 20.65, 2074 मित्रांक 1 के प्रभाव से 2008, 2017, 2026, 2035, 2044, 2053, 2062, 2071, 2080 एवं 2006, 2015, 2024, 2033, 2042, 2051, 2060, 2069, 2078 हैं।

मूलांक 4 वाले व्यक्तियों कि अंक 1 एवं अंक 8 से मित्रता रहती है। अतः इनके जीवन में 1, 4, 8, के अंक विशेष घटनाक्रम वाले होते है। अंक 2, 6, 7, 9, सम रहते है। तथा 3 एवं 5 के अंक शत्रु होते है। उपरोक्त मित्र शत्रु एवं सम अंक से संबंधित दिन, तारीख, मास, वर्ष का भी प्रभाव इन पर आता है।

कीरो के मत से किसी भी महीने की 4, 13, 22 और 31 तारीख को जन्मे व्यक्ति आसानी से किसी को मित्र नहीं बनाते। इन व्यक्तियों का खिचाव 1, 2, 7 और 8 के अंक वाले व्यक्तियों की ओर अधिक रहता है। 21 जून से 31 अगस्त के बीच जन्मे व्यक्तियों से इनके अच्छे संबंध स्थापित होते हैं। सप्ताह के लाभप्रद दिन हैं शनिवार, रविवार और सोमवार तथा इनका अपना अंक भी इसी दिन पड़ता हो जैसे कि महीने की 4, 13, 22 और 31 तारीखें तथा मेल खाने वाले अंक 1, 2, 7 अर्थात महीने की 2, 7, 10, 11, 16, 19, 20, 25, 28 और 29 तारीखें हों तो और भी अधिक लाभदायक सिद्ध होते हैं।

इनके भाग्यशाली रंग हैं– मिले–जुले रंग, विद्युतीय रंग, चमकता नीला आदि। लेकिन इन सबमें ग्रे रंग सर्वोत्तम है। इनका भाग्यप्रद रत्न है– नीलम, वह चाहे गहरा या हल्का कैसा भी हो।

सेफेरियल के मतानुसार मूलांक 4 के व्यक्तियों को 6 का अंक स्पन्दित करता है। 1 एवं 8 के अंक आकर्षित करते हैं तथा 3 एवं 5 के अंक विपरीत रहते हैं। जबकि 2, 7 एवं 9 के अंक मध्यम फल देते हैं। इन्हे रविवार का दिन विशेष लाभप्रद रहता है।

मूलांक 5 बुध

इस अंक का स्वामी बुध ग्रह है। 5, 14 या 23 तारीख को जन्म लेने वाले व्यक्तियों का मूल अंक 5 होता है। 22 मई से 21 जून तक और 24 अगस्त से 23 सितम्बर तक प्रतिवर्ष सूर्य सायन मिथुन तथा कन्या राशियों में रहता है तथा भारतीय मत से 15 जून से 15 जुलाई तक एवं 17 सितंबर से 16 अक्टूबर तक सूर्य मिथुन तथा कन्या राशि में रहता है और यह राशियाँ बुध की राशियाँ हैं। इस कारण इस समय में उत्पन्न व्यक्तियों पर बुध का

विशेष प्रभाव रहता है।

इन तारीखों और समय में जन्मे जातक मिलनसार होते हैं और वे शीघ्र मैत्री भाव करते हैं। 5, 14, 23 तारीखों में पैदा हुए व्यक्तियों से इनकी घनिष्ठता हो जाती है। यह लोग व्यापार की ओर ज्यादा आकृष्ट होते हैं। खासकर शीघ्र लाभ वाले व्यापार की ओर। यह लोग बहुत जल्दबाज होते हैं। फुर्तीले भी होते हैं और हर काम जल्दी से निपटाना पसन्द करते हैं। ज्यादा देर तक किसी बात पर चिन्ता, शोक या पश्चाताप नहीं करते और किसी की बुराई या आघात को शीघ्र भूल जाते हैं। क्षमा कर देते हैं और अपने काम में लग जाते हैं। इनके मिजाज में जल्दबाजी, चिड़चिड़ापन, शीघ्र क्रोध आने की प्रवृत्ति होती है। यह लोग अपनी दिमागी ताकत से बहुत अधिक खर्च करने के कारण स्नायु मण्डल की कमजोरी के शिकार हो जाते हैं। ज्यादा अवस्था पर मूर्छा आदि की शिकायत रहती है।

मूलांक पाँच के प्रभाववश ऐसे जातक रोजगार के क्षेत्र में सर्विस की अपेक्षा व्यापार के मार्ग की ओर अधिक आकृष्ट होते हैं। यदि ये सर्विस का मार्ग चुनते हैं तो ऐसा रोजगार इनको अधिक पसन्द आयेगा जहाँ लेन–देन, लेखा, यांत्रिकी, वाणिज्य, इत्यादि का कार्य होता हो। कम्पनी, फैक्ट्री, उच्च व्यापार जगत इनको रास आयेगा।

बुध ग्रह के प्रभाव से इनके अन्दर वाकपटुता, तर्कशक्ति अच्छी रहती है एवं सामने वाले व्यक्ति को ये अपनी बातों से प्रभावित करने में समर्थ रहते हैं। ये हर कार्य को जल्दी समाप्त करना पसन्द करेंगे एवं ऐसे रोजगार की ओर उन्मुख होंगे जिसमें शीघ्र सफलता कम मेहनत तथा अधिक लाभ पर प्राप्त होती रहे। ये थोड़े जल्दबाज एवं फुर्तीले भी होते हैं। जल्दबाजी के चक्कर में ये कभी–कभी हानियों का भी सामना करते हैं।

इनकी मानसिक स्थिति चंचल होने से इनको शीघ्र क्रोध आ जाता है एवं कभी–कभी चिड़चिड़ाहट भी आ जाती है। यह अधिकांशतः बुद्धि जनित कार्यो में रूचि लेते हैं। इस कारण इनकी दिमागी ताकत अधिक खर्च होने से अधिक आयु में इनको स्नायुवेग द्वारा उत्पन्न रोगों का भी सामना करना पड़ सकता है। मूलांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से कमोवेश बुध के गुण–अवगुण इनके अन्दर आयेंगे। विद्याध्यन लेखन–पठन की ओर इनकी विशेष रूचि रहती है।

ऐसे जातक शीघ्र ही अपने मित्र बना लेते हैं तथा किसी भी अंक के व्यक्ति से इनकी पटरी आसानी से बैठ जाती है। किन्तु उनके अपने अंक के अर्न्तगत अर्थात 5, 14, 23 तारीखों में पैदा हुए व्यक्ति इनके परम मित्र सिद्ध होते हैं। इस अंक के व्यक्तियों का बौद्धिकता के प्रति झुकाव रहता है एवं विलक्षण तार्किक बुद्धि होने के कारण इनको प्रभावित

कर पाना कठिन होता है। ये जातक सदा तनाव में रहते हैं और उत्तेजना बनाए रखते हैं। एक बार जो इनका मित्र बन जाता है, वह आजीवन मित्रता निभाता है। विचारों और निर्णय लेने में ये व्यक्ति निपुण होते हैं और संवेग से प्रेरित होकर आचरण करते हैं। ऐसे व्यक्ति परिश्रमपूर्ण कार्यो से बचते हैं और स्वभावतः शीघ्रता से धन कमा लेने के स्त्रोत ढूंढने के यत्न करते हैं। धनोपार्जन के नए रास्ते और तरीके इन्हें खोजने आते हैं। ये जन्म से ही जुआरी होते हैं, अर्थात व्यापार में जोखिम लेने में पीछे नहीं हटते। स्टाक एक्सचेंज के कार्य, व्यापार में दिलचस्पी रखते हैं तथा जिस कार्य की जिम्मेदारी ये अपने ऊपर लेते हैं, उसमें कोई भी जोखिम उठाने को तत्पर रहते हैं।

इस अंक के व्यक्तियों में चारित्रिक लचक गजब की होती है। किसी कठिनाई या मुसीबत भरी झंझट से ये बहुत जल्दी उबर जाते हैं। अधिक समय तक कोई भी कष्ट इन्हें सालता नहीं रहता। अपने जन्म के ग्रह के समान ही ये व्यक्ति चंचल स्वभाव के होते हैं, अतः इनके चरित्र पर भाग्य अपना कोई स्थायी घाव नहीं छोड़ता। यदि ये स्वभाव से भले हैं तो वैसे ही रहते हैं और यदि स्वभाव से बुरे हैं तो बुरे बने रहते हैं और इन पर किसी प्रकार की शिक्षा का कोई असर नहीं होता।

ऐसे जातको की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि ये व्यक्ति मानसिक शक्ति का इतना अधिक प्रयोग करते हैं कि मानसिक संतुलन कभी कभी खो बैठते हैं। किसी भी मानसिक तनाव की स्थिति में ये चिड़चिड़ा जाते हैं। इन्हे शीघ्र ही गुस्सा आ जाता है और आसानी से किसी बात को पचा नहीं पाते।

मूलांक 5 के प्रभाववश इस्वी सन् जिनका योग 5, 3, 9, होता है इनके लिए विशेष घटनाक्रम वाले होते हैं। जोकि मूलांक 5 के प्रभाव से 2003, 2012, 2021, 2030, 2039, 2048, 2057, 2066, 2075 मित्रांक 3 के प्रभाव से 2001, 2010, 2019, 2028, 2037, 2046, 2055, 2064, 2073 एवं मित्रांक 9 के प्रभाव से 2007, 2016, 2025, 2034, 2043, 2052, 2061, 2070, 2079 हैं।

मूलांक 5 वाले व्यक्तियों की अंक 3 एवं अंक 9 से मित्रता रहती है। अतः इनके जीवन में 5, 3, 9, के अंक विशेष घटनाक्रम वाले होते हैं। अंक 1, 6, 7, 8, सम रहते हैं, तथा 2 एवं 4 के अंक शत्रु होते हैं। उपरोक्त मित्र शत्रु एवं सम अंक से संबंधित दिन, तारीख, मास, वर्ष का भी प्रभाव इन पर आता है।

इनके लिए हल्का खाकी, सफेद चमकीला उज्वल रंग विशेष अनुकूल रहता है। वैसे किसी भी रंग का हल्का शेड इनको माफिक रहता है। गहरा रंग प्रयोग में नहीं लाना चाहिए। वस्त्र, फर्नीचर, कमरों के रंग, परदे आदि इनको इन्ही रंगों के प्रयोग करने चाहिए। बुधवार, बृहस्पतिवार तथा शुक्रवार विशेष शुभ होते हैं। नये तथा महत्वपूर्ण कार्यो को आरम्भ

यदि यह लोग इन दिनों में करें तो सफल होंगे। इन दिनों में यदि 5, 14, या 23 तारीख भी हो तो और भी अच्छी है और यदि समय 21 मई से 23 जून या 21 अगस्त से 24 सितम्बर के बीच का हो तो विशेष अनुकूल होगा।

इनके जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष 5, 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68 तथा 77 वाँ वर्ष विशेष योग कारक रहता है। ज्योतिष के अनुसार बुध अपना पूर्ण प्रभाव 23 वे वर्ष में दिखाता है। भारतीय मत से इन्हे पन्ना सोने की अंगूठी में बुधवार के दिन कनिष्ठा अंगुलि में त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करना चाहिए।

कीरो के मतानुसार इन व्यक्तियों को अपनी योजनाओं को उन्हीं दिनों में कार्य रूप देना चाहिए जो दिन इनके अपने अंक के अन्तर्गत पड़ते हैं अर्थात् किसी महीने की 5, 14, और 23 तारीखें या फिर 5 के अंक की अवधि में, जो कि 21 मई से 20–27 जून और 21 अगस्त से 20–27 सितम्बर के मध्य मानी गई है, इन्हें क्रियाशील होना चाहिए। इन व्यक्तियों के भाग्यशाली दिवस हैं बुध एवं शुक्र और यदि इन दिनों में इनका अपना अंक भी पड़ता हो तो उसका प्रभाव और भी बढ़ जाता है।

इनके लिए ग्रे रंग के सभी शेड्स, सफेद और चमकीले रंग भाग्यशाली हैं। जिस प्रकार से किसी भी अंक के व्यक्तियों से इनकी मैत्री जल्दी हो जाती है वैसे ही ये कोई भी रंग पहन सकते हैं, फिर भी इनके लिए हल्के रंग के वस्त्रादि पहनना और गहरे रंग कभी कभार ही पहनना बेहतर रहेगा।

इनका लाभदायक रत्न है हीरा यह सभी चमकीले और दमदमाती वस्तुएं। इन्हें प्लैटिनम या चांदी के आभूषण पहनने चाहिए और यदि सम्भव हो तो प्लैटिनम में जड़ा हीरा इस प्रकार पहनें कि वह इनके शरीर को स्पर्श करता हो।

सेफेरियल के मतानुसार मूलांक 5 के व्यक्तियों का 5 का अंक स्पन्दित करता है। 3 एवं 9 के अंक आकर्षित करते हैं तथा 2 एवं 4 के अंक विपरीत रहते हैं। जबकि 1, 6, 7, एवं 8 के अंक सम रहते हैं। इन्हे बुधवार का दिन विशेष लाभप्रद रहता है।

मूलांक 6 शुक्र

इस अंक का स्वामी शुक्र है। जिन व्यक्तियों का जन्म 6, 15, 24 तारीखों में से किसी भी एक तारीख को हुआ हो, उनका मूल अंक 6 होता है। 20 अप्रैल से 24 मई तक तथा

21 सितम्बर से 24 अक्टूबर तक सूर्य सायन वृष तथा सायन तुला राशियों में रहता है। निरयन मत से यह 13 मई से 14 जून तथा 17 अक्टूबर से 13 नवंबर तक का समय होता है। यह राशियां शुक्र की राशियां हैं। इस कारण इस समय में पैदा होने वाले व्यक्तियों पर शुक्र का प्रभाव विशेष रूप से रहता है।

इन व्यक्तियों में आकर्षण शक्ति तथा मिलनसारी बहुत अधिक होती है और इस कारण ये लोग बहुधा बहुत लोकप्रिय होते हैं। इनके साथ रहने वाले लोग इन्हे काफी प्रेम करते, श्रद्धा रखते और मान देते हैं। सुन्दरता की ओर ये ज्यादा आकृष्ट होते हैं। सुन्दर व्यक्ति, कला, चित्रकला, सुन्दर वस्त्र, संगीत, साहित्य की ओर इनकी रूचि अधिक रहती है। अतिथियों का विशेष सत्कार करना, हर चीज को ढंग से सजाना, वस्त्र, कपड़े फर्नीचर, परदे आदि सुन्दर सजाकर रखना इन्हें पसन्द आता है। स्वभाव से हठी होते हैं, अपनी बात चाहे सही हो या गलत मनवाना, उस पर अड़े रहना इनका स्वभाव होता है। ईर्ष्या की मात्रा अधिक होने के कारण किसी की प्रतिद्वन्दता भी सहन नहीं कर पाते। यह लोग दूसरों को बहुत जल्दी मित्र बना लेते हैं तथा अपनी आकर्षण शक्ति के प्रभाव से शीघ्र सबसे घुल मिल जाते हैं।

मूलांक छह के प्रभाववश इनके अन्दर आकर्षण शक्ति तथा मिलन सारिता अधिक रहती है। इस गुण के कारण यह लोक प्रियता प्राप्त करते हैं। सुन्दरता, सुन्दर वस्तुओं की ओर आकृष्ट होना इनकी सहज प्रवृत्ति होती है। विपरीत सेक्स के प्रति इनका आकर्षण रहता है एवं सुन्दर नर–नारियों से संबंध बनाना, वार्तालाप करना इनकी प्रकृति में होता है।

विभिन्न कलाओं के क्षेत्र में इनकी अभिरूचि होती है एवं कला के क्षेत्र को ये अपना रोजगार–व्यापार भी बना सकते हैं। संगीत–साहित्य, ललितकला, चित्रकला इत्यादि में रूचि रखते हैं। सुन्दर वस्त्र धारण करना एवं सुसज्जित मकान में रहना इनको अच्छा लगता है। अतिथियों का आदर सत्कार करने में इनको गर्व महसूस होता है। घर या ऑफिस में सभी वस्तुऐं ढंग से सजावट के साथ रखना, सुरूचिपूर्ण फर्नीचर, परदे इत्यादि रखना इनको रास आता है।

स्वभाव में इनके थोड़ा हठीपन रहता है एवं इनकी हमेशा यही कोशिश रहती है कि इनकी बात को सामने वाला मान जाया करे। किसी बात पर अड़े रहना तथा ईर्ष्या की मात्रा इनके अन्दर अधिक रहती है। ये कार्यक्षेत्र में किसी की प्रतिद्वन्दिता को आसानी से सहन नहीं कर पाते। जिसके कारण कभी–कभी मानसिक तनाव एवं आत्मग्लानि का भी इनको सामना करना पड़ता है। ये दूसरों को अपना बना लेने की कला में पारंगत होते हैं एवं शीघ्र

मित्र बनाने की कला इनके अन्दर अधिक मात्रा में होने से इनके मित्रों की संख्या अधिक रहती है।

इन जातकों को हल्का नीला या आसमानी या गहरा नीला रंग शुभ होता है। हल्का गुलाबी भी ठीक है, परन्तु काला, गहरा लाला ककरेजी आदि रंग प्रयोग में नहीं लाने चाहिए। मंगलवार बृहस्पतिवार तथा शुक्रवार के दिन शुभ होते हैं। 6,15 तथा 24 तारीखें शुभ हैं। यदि सौर मास भी उपरोक्त 20 अप्रेल से 24 मई या 24 सितम्बर से 24 अक्टूबर का हो अथवा निरयन मास उपरोक्त हों तो और भी अच्छा है और यदि इन्ही तारीखों में मंगलवार, बृहस्पतिवार तथा शुक्रवार हो तो विशेष शुभ है।

नवीन कार्य का आरम्भ तथा महत्वपूर्ण कार्य इन व्यक्तियों को इन्ही दिनों, तारीखों व मासों में करने चाहिए। 6 मूल अंक वालों की 3 तथा 9 मूल अंक वालों से मित्रता रहती है। इस कारण 3, 12, 21, 30 तथा 9, 18, व 27 तारीखें भी अनुकूल होती हैं। गत जीवन के अनुभव से यह तारीखें ठीक नहीं रहती हों तो भविष्य में भी इन अंकों की तारीखें, वार व वर्ष अच्छे नहीं जायेंगे। ऐसा समझना चाहिये।

इस अंक के जातकों को इनकी आयु के 6, 15, 24, 33, 42, 51, 60 व 69 वर्ष महत्वपूर्ण वर्ष हैं। जीवन की शुभ अशुभ सभी महत्वपूर्ण घटनायें इन्ही वर्षों में घटित होनी चाहिये। वैसे 3 व 9 अंक के वर्ष भी 6 मूल अंक वाले व्यक्ति को महत्वपूर्ण जाते हैं।

मूलांक 6 के प्रभाववश इस्वी सन् जिनका योग 6, 3, 9 होता है इनके लिए विशेष घटनाक्रम वाले होते हैं। जोकि मूलांक 6 के प्रभाव से 2004, 2013, 2022, 2031, 2040, 2049, 2058, 2067, 2076 मित्रांक 6 के प्रभाव से 2001, 2010, 2019, 2028, 2037, 2046, 2055, 2064, 2073 एवं मित्रांक 9 के प्रभाव से 2007, 2016, 2025, 2034, 2043, 2052, 2061, 2070, 2079 हैं।

मूलांक 6 वाले व्यक्तियों की अंक 3 एवं अंक 9 से मित्रता रहती है। अतः इनके जीवन में 3, 6, 9, के अंक विशेष घटनाक्रम वाले होते हैं। अंक 2, 4, 5, 7, सम रहते हैं तथा 1 एवं 8 के अंक शत्रु होते हैं। उपरोक्त मित्र शत्रु एवं सम अंक से संबंधित दिन, तारीख, मास, वर्ष का भी प्रभाव इन पर आता है। भारतीय मत से इन्हे हीरा या ओपल अथवा झरकिन शुक्रवार को त्वचा से स्पर्श करता हुआ धारण करना चाहिए।

कीरो के मत से 6 के जातक अंक 5 के व्यक्तियों को अन्य किसी अंक के व्यक्ति की अपेक्षा अधिक मित्र बनाने की क्षमता रखते हैं। विशेष रूप से तब जब वे व्यक्ति 3, 6 और 9 के अंक की श्रंखला में पैदा हुए हों। इनके लिए सप्ताह के महत्वपूर्ण दिन हैं, मंगल,

बृहस्पति एवं शुक्र और इन दिनों में यदि अंक 3, 6 और 9 हो तो और भी अच्छा रहता है। महीने की 3, 6, 9, 12, 18, 24, 27 या तीस तारीखें भी अच्छी होती हैं। इस अंक के व्यक्तियों को अपने ही अंक के अन्तर्गत पड़ने वाली तिथियों में अपनी योजनाओं को कार्यरूप देना चाहिए। वे तिथियां हैं– किसी भी महीने की 6, 15, 24 तारीखें या फिर अंक 6 की अवधि जो 20 अप्रेल से 20–27 मई और 21 सितम्बर से 20–27 अक्तूबर के मध्य की मानी गई है। इनको नीला रंग हल्का या गहरा सभी प्रकार का, लाभ देगा। गुलाबी रंग के सभी शेड्स इनके लिए लाभदायक हैं। किंतु इन्हे काला और गहरा जामुनी रंग पहनने से बचना चाहिए।

इनका भाग्यप्रद रत्न फिरोजा है और जहां तक सम्भव हो इन्हें फिरोजे की अंगूठी पहननी चाहिए। जिसमें फिरोजा इनकी अंगुली को स्पर्श करता रहे। अंक 6 के व्यक्तियों के लिये पन्ना अतिरिक्त लाभदायक सिद्ध होगा।

सेफेरियल के मतानुसार मूलांक 6 के व्यक्तियों को 4 का अंक स्पन्दित करता है। 3 एवं 9 के अंक आकर्षित करते हैं तथा 1 एवं 8 के अंक विपरीत रहते हैं। जबकि 2, 5, एवं 7 के अंक सम रहते हैं। इन्हे शुक्रवार का दिन विशेष लाभप्रद रहता है।

मूलांक 7 नेपच्यून या केतु

मूल अंक 7 का स्वामी नेपच्यून ग्रह है। इसका भारतीय नाम वरूण है तथा केतु के रूप में भी जाना जाता है। 7, 16 और 25 तारीखों में जन्मे व्यक्तियों का मूल अंक 7 होता है। नेपच्यून जल प्रधान ग्रह है, और चन्द्रमा भी जल प्रधान ग्रह है। इस कारण 2 और 7 अंक में मित्रता है। 7 अंक वालों को 2, 11, 20 और 29 तारीखों में पैदा हुए व्यक्तियें के साथ अच्छी मित्रता निभ जाती है। 7 अंक वाले व्यक्ति कल्पनाशील होते हैं और इन्हें चित्रकला तथा कविता में विशेष सफलता प्राप्त होती है। आर्थिक सफलता इन्हें विशेष नहीं मिलती और धन संग्रह में भी सफल नहीं होते। यात्रा करना, घूमना फिरना, सैर सपाटे करना इन्हे अच्छा लगता है। दूसरों के मन की बात समझने की शक्ति इनमें विशेष होती है। धार्मिक मामलों में यह रूढ़िवादी और लकीर के फकीर नहीं होते। आयात निर्यात के काम में ओर समुद्री जहाज नौ सैना आदि के काम में सफलता प्राप्त करते हैं। 7 मूल अंक वाली स्त्रियों का विवाह धनी घरों में होता है।

अंक सात का अधिष्ठाता भारतीय मतानुसार केतु एवं पाश्चात्य मतानुसार नेपच्यून ग्रह को माना गया है। इन ग्रहों के थोड़े–बहुत प्रभाव इनके ऊपर रहते हैं। मूलांक सात के प्रभाववश इनके अन्दर कल्पना शक्ति की मात्रा अधिक रहेगी। काव्य रचना, गीत–संगीत सुनना, दूरदर्शन देखना इनकी अभिरूचि में समाहित रहता है। ललित कलाओं, लेखन,

साहित्य आदि में इनकी रूचि रहती है। आर्थिक सफलतायें इनको अधिक नहीं मिलेंगी तथा धन संग्रह करना भी इनको मुश्किल लगेगा। यात्रा, पर्यटन, सैर–सपाटा इत्यादि इनको विशेष अच्छा लगता है।

दूसरों के मन की बात समझने में ये निपुणता हासिल करते हैं एवं सामने वाले को अपनी ओर आकृष्ट करने की विशेष शक्ति भी इनके अन्दर रहती है। धर्म के क्षेत्र में ये परिवर्तनशील विचारधारा के रहेंगे एवं पुरानी रूढ़ियों, रीतियों में अधिक रूचि नहीं लेंगे। इनको ऐसे रोजगार–व्यापार पसन्द आयेंगे जिनमें यात्रायें होती रहती हों तथा दूर–दूर के देशों से सम्पर्क बना रहे। यह ऐसा ही रोजगार चुनेंगे जिनमें यात्रा के अवसर मिलते रहें।

अतीन्द्रिय ज्ञान की अधिकतावश जहाँ ये दूसरों के मन की बात को जान जायेंगे वहीं इनको स्वप्न भी अद्भूत प्रकार के आते रहेंगे। इनको विदेशों से, जहाज, मोटर इत्यादि वाहनों से विशेष लाभ प्राप्त होते हैं।

प्रकृति से चंचल होने के कारण इन व्यक्तियों को यात्राओं और परिवर्तन से प्रेम होता है। यदि इनको अपनी इच्छा पूर्ति का अवसर प्राप्त हो तो ये विदेश की यात्राएं करते हैं और दूर देशों की जानकारी के मामले में गहरी रूचि रखते हैं। ये यात्रा पर पुस्तकें लिखते हैं तथा विश्व का ज्ञान रखते हैं। मूलांक 7 के व्यक्ति प्रायः अच्छे लेखक चित्रकार अथवा कवि होते हैं। किन्तु ये कोई भी कार्य करें उसमें देर–सबेरे इनकी विशिष्ट दार्शनिकता का पुट झलकने लगता है।

इन व्यक्तियों की रुचि जीवन की भौतिक वस्तुओं में कम रहती है। ये व्यक्ति प्रायः अपने मौलिक विचारों अथवा व्यापारिक तरीकों से धन अर्जित करते हैं, और अर्जित धन में से कुछ धन संस्थाओं को दान भी करते हैं। इस अंक की महिलाओं का जीवन अच्छा रहता है, क्योंकि ये भविष्य के बारे में चिंतित रहती हैं और अनुभव करती हैं कि भाग्य की बाढ़ उन्हें बहा ले जाए उससे पहले ही अपने पैर जमा लेने का आधार खोज लेना चाहिए।

अंक 7 के व्यक्तियों के पास व्यापार संबंधित उच्च स्तर के विचार रहते हैं। यदि ये उन्हें क्रियान्वित करें तो वे अच्छी योजनाएं सिद्ध हो सकती हैं। इस अंक के व्यक्तियों की यात्राओं में विशेष रुचि होती है। अतः ये दूर–दराज के देशों के संबंध में बहुत पढ़ते लिखते हैं। यदि ये प्रयत्न करें तो ये समुद्र से सम्बद्ध कार्यों में व्यापारिक रुचि रख सकते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः आयात निर्यात करने वाले, विदेशों से व्यापार करने वाले होते हैं। यदि इनको अवसर मिले तो ये पानी के जहाज के कप्तान या स्वयं मालिक भी बन सकते हैं।

7 अंक के अन्तर्गत जन्मे व्यक्ति धर्म के बारे में अनोखे विचार रखते हैं। ये लकीर

के फकीर नहीं होते वल्कि अपना स्वयं धर्म बनाते हैं, किन्तु इनका धर्म कल्पनाओं व रहस्यमयता पर आधारित होता है। ऐसे व्यक्तियों के स्वप्न बड़े विलक्षण होते हैं तथा अलौकिक रहस्यों की ओर इनका झुकाव रहता है। इन व्यक्तियों के पास अन्तश्चेतना, दिव्य शक्ति तथा विशिष्ट चुम्बकीय शक्ति का दिव्य उपहार होता है। जिससे ये शीघ्र ही दूसरे व्यक्तियों पर अपना प्रभाव डाल लेते हैं।

21 जून से 25 जुलाई तक नेपच्यून का विशेष प्रभाव रहता है। रविवार व सोमवार इनके शुभ दिन हैं। 7 अंक वाले व्यक्ति अपने महत्वपूर्ण कार्य व नवीन कार्य 7, 16, 25 या 2, 11, 20 और 29 तारीखों में रविवार या सोमवार के दिन प्रारम्भ करें तो ठीक रहता है। यदि समय भी 21 जून से 25 जुलाई का हो तो और भी अच्छा है। इन व्यक्तियों को हरा, काफुरी, हल्का पीला और सफेद रंग विशेष अनुकूल रहता है। गहरे रंग अशुभ होते हैं। जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष 7, 16, 25, 34, 43, 52, 61 तथा 70 वाँ वर्ष और 2, 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65 तथा 74 वाँ वर्ष है। इनका प्रधान रत्न लहसुनिया है।

मूलांक 7 के प्रभाववश इस्वी सन् जिनका योग 7, 2, 6 होता है। इनके लिए विशेष घटनाक्रम वाले होते हैं। जोकि मूलांक 7 के प्रभाव से 2005, 2014, 2023, 2032, 2.041, 2050, 2059, 2068, 2077 मित्रांक 2 के प्रभाव से 2009, 2018, 2027, 2036, 2045, 2054, 2063, 2072, 2081 एवं मित्रांक 6 के प्रभाव से 2004, 2013, 2022, 2031, 2040, 2049, 2058, 2067, 2076 हैं।

मूलांक 7 वाले व्यक्तियों की अंक 2 एवं अंक 6 से मित्रता रहती है। अतः इनके जीवन में 2, 6, 7, के अंक विशेष घटनाक्रम वाले होते हैं। अंक 3, 4, 5, एवं 8 सम रहते हैं तथा 1 एवं 9 के अंक शत्रु होते हैं। उपरोक्त मित्र शत्रु एवं सम अंक से संबंधित दिन, तारीख, मास, वर्ष का भी प्रभाव इन पर आता है।

कीरो के मतानुसार अंक 7 के व्यक्तियों को अपनी योजनाओं को अपने जन्म के अंक वाले दिनों, अर्थात 7, 16 और 25 तारीखों को अथवा 21 जून से 20–27 जुलाई के मध्य में कार्य रूप देना चाहिए। इस अंक के व्यक्तियों के लिए अंक 2 के व्यक्तियों की भांति लाभप्रद दिन सप्ताह के रविवार और सोमवार हैं, यदि इन्ही दिनों में उनका जन्म अंक भी पड़े या 1, 2, और 4 के अंक से विनिमयशील अंक अर्थात् किसी महीने की 1, 2, 4, 10, 11, 13, 19, 20, 22, 28, 29 और 31 तारीखें पड़े तो और भी अच्छा रहता है।

इन व्यक्तियों के लाभप्रद रंग हैं, हरा और पीत तथा इनके सभी शेड्स एवं सफेद और पीला। इन लोगों को जहां तक संभव हो, सभी प्रकार के गहरे रंगों से बचना चाहिए।

इनका लाभ पहुंचाने वाले रत्न हैं चन्द्र रत्न मोती, कैट्स आई आदि। यदि संभव हो तो इन्हें चन्द्र रत्न इस प्रकार पहनना चाहिए जो इनके शरीर को स्पर्श करता हो।

सेफेरियल के मतानुसार मूलांक 7 के व्यक्तियों को 3 का अंक स्पन्दित करता है। 2 एवं 6 के अंक आकर्षित करते हैं तथा 1 एवं 9 के अंक विपरीत रहते हैं। जबकि 4, 5 एवं 8 के अंक सम रहते हैं। इन्हे सोमवार का दिन विशेष लाभप्रद रहता है।

मूलांक 8 शनि

इस अंक का स्वामी शनि है। जो व्यक्ति 8, 17, 26 में से किसी भी तारीख को पैदा हुए हों, उनका मूल अंक 8 होता है। 21 दिसम्बर से 19 फरवरी तक सूर्य सायन मकर और कुम्भ राशियों में रहता है और यह शनि की राशियाँ हैं। इस कारण इन महीनों में पैदा हुए व्यक्तियों पर शनि का प्रभाव विशेष रूप से रहता है।

यह लोग बहुत महत्वपूर्ण कार्य करते हैं परन्तु अन्य व्यक्ति उनके महत्व को ठीक से आंक नहीं पाते और उनके साथ सहानुभुतिपूर्ण व्यवहार नहीं करते। इस कारण इनको कभी कभी उदासीनता हो जाती है और अकेलापन महसूस होता है। क्योंकि इनमें बाहरी दिखावा नहीं होता। इस कारण लोग इन्हें रूखा, शुष्क और कठोर हृदय समझते हैं। वास्तव में यह ऐसे नहीं होते। अपने काम से मतलब रखते हैं और काम को पूरा करने में लगे रहते हैं। जिससे कभी कभी लोग बुरा भी मान जाते हैं और दुश्मनी या दुर्भावना भी पैदा हो जाती है। ये बहुत महत्वाकांक्षी होते हैं, उच्चपद व उच्च स्थिति प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहते हैं और इसके लिए हर प्रकार का त्याग, बलिदान व परिश्रम करते रहते हैं। इन्हें बहुत कठिनाईयाँ उठानी पड़ती हैं और काफी संघर्ष जीवन में करना पड़ता है।

शनि के प्रभाव से ये जातक अपने जीवन में धीरे–धीरे उन्नति प्राप्त करते हैं। व्यवधानों, कठिनाईयों से जूझते हुए सफलता प्राप्त करना इनकी प्रकृति में रहता है। असफलताओं से ये घबड़ाते नहीं, कभी कभी निराशा के भाव अवश्य आ जाया करते हैं। आलस्य इनका सबसे बड़ा शत्रु रहता है और यही आलस्य इनकी असफलता का कारण बनता है। अतः ये जातक किसी भी कार्य को कल पर न टालें। जीवन में शनि ग्रह के प्रभाववश ये काफी महत्वपूर्ण कार्य करते हैं, जिससे इनको नाम, यश, कीर्ति, प्राप्त होती है। इनकी कार्यशैली को हर कोई समझ नहीं पाता, इससे इनके विरोधी भी उत्पन्न हो जाते हैं।

इनके अन्दर दिखावे की प्रवृत्ति कम रहती है। इस कारण इनको कुछ लोग रूखा, शुष्क और कठोर हृदय समझते हैं। जबकि अन्दर से ये काफी भावुक एवं दयालु हृदय के होते हैं। ऐसे जातक अधिकांश समय में अपने काम से ही मतलब रखते हैं एवं इनकी

कोशिश रहती है कि काम में ही लगे रहें। लेकिन इनके इस व्यवहार के कारण इनके आलोचक भी अधिक हो जाते हैं।

इनके अन्दर त्याग की भावना अधिक रहती है एवं श्रम में कभी पीछे नहीं हटते। किसी भी कार्य में कितना भी श्रम, त्याग या बलिदान लगे ये पीछे नहीं हटते। इसी कारण रूकावटों को पार करते हुये ये अपनी मंजिल अवश्य प्राप्त करते हैं। शनि प्रभावी व्यक्ति संघर्ष शील एवं परिश्रमी होते हैं एवं विघ्नों को पार करते हुए उन्नति करने के कारण इनको सफलता देर से लेकिन स्थायी प्राप्त होती है।

8 के अंक की प्रकृति के अन्तर्गत उत्थान, रद्दोबदल, अव्यवस्था, स्वेच्छाचार और सभी प्रकार की सनक आदि गुण मिलते हैं। इनका दूसरा पक्ष दार्शनिक विचार रहस्यमय ज्ञान के प्रति रुचि, धार्मिक निष्ठा, उद्देश्य की प्राप्ति, हाथ में लिए काम के प्रति व्यग्रता तथा सभी कार्यो में भाग्यवादी दृष्टिकोण रहता है। इस अंक के अन्तर्गत जन्मे सभी व्यक्ति प्रायः यह सोचते हैं कि वे अन्य सभी व्यक्तियों से अलग हैं। हृदय में वे अकेलापन अनुभव करते हैं और जो भी भलाई करते हैं उसका परिणाम उन्हें अपने जीवन काल में प्राप्त नहीं हो पाता। मृत्यु के पश्चात् इन व्यक्तियों की स्तुति होती है, इनके कार्यो की प्रशंसा होती है और इनकी याद में पुष्पांजलि चढ़ाई जाती है।

जो व्यक्ति इस अंक के कमजोर या निम्न क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं उनका मानवीयता से संघर्ष रहता है और इनका अन्त दुःखद होता है। उच्च क्षेत्र में व्यक्तियों के उद्देश्यों को गलत समझा जाता है और दैविक न्याय के सामने इनकी आत्मा को दुःखी होना पड़ता है। प्राचीन काल से ही इस 8 के अंक को रहस्यवादी विज्ञान में मानवीय न्याय का प्रतीक माना गया है।

ऐसे व्यक्ति प्रायः अपने जीवन में गलत ही समझे जाते हैं और शायद इसी कारण यह व्यक्ति स्वयं को अकेला समझते हैं। ये व्यक्ति हठधर्मी और दृढ़ प्रकृति के होते हैं। इनका व्यक्तित्व सुदृढ़ होता है और जीवन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। भाग्यवादी होते हैं और दूसरों के लिए भी भाग्य की अधीनता ग्रहण करते हैं। ये अत्यधिक धार्मिक प्रकृति के होते हैं और इनका उत्साह कट्टरता की सीमा तक होता है। जो भी कार्य यह अपने हाथ में लेते हैं, उसे विरोध तथा कुतर्को के बावजुद पूरा करते हैं। ऐसा करने से इनके अनगिनत शत्रु उत्पन्न हो जाते हैं।

इस अंक के व्यक्ति दिखावे से रहित एवं शांत तथा उदार हृदय के होते हैं। ये अपनी भावनाओं को छुपाए रखते हैं और दूसरे व्यक्तियों को अपनी राय कायम करने को स्वतंत्र

छोड़ देते हैं। इस अंक के व्यक्ति जीवन में या तो बुरी तरह असफल होते हैं या पूर्ण रूपेण सफल सिद्ध होते हैं। महत्वाकांक्षी होने के कारण ऐसे जातक सामाजिक जीवन अथवा सरकारी उत्तरदायित्व निभाने की रूचि रखते हैं। ये व्यक्ति उच्च पदों पर आसीन होते हैं और महान बलिदान देने के लिए तत्पर रहते हैं। व्यवहारिक दृष्टिकोण से यह अंक भाग्यशाली अंक नही माना जाता इस अंक के अन्तर्गत जन्मे व्यक्तियों को महान कष्ट हानि और दुखों का सामना करना पड़ता है।

शनिवार का दिन इनका शुभ दिन है। रविवार व सोमवार भी अच्छे हैं। नये काम के लिये, शुभ व महत्वपूर्ण कार्यो के लिए इन लोगों को यही दिन व 8, 17 व 26 में से कोई तारीख चुनना ठीक रहेगा। अगर 21 दिसम्बर से 19 फरवरी का काल हो तो और भी अच्छा है। गहरा भूरा, काला, गहरा नीला, ककरोजी आदि गहरे रंग अनुकूल रहते हैं। हल्के रंग ठीक नहीं रहते हैं। 4 मूल अंक वालों से मित्रता हो सकती है, जिनका जन्म 4, 13 व 22 तारीखों में से किसी तारीख को हुआ हो या 8, 17, 26 तारीखों का हो उससे मित्रता ठीक रहती है।

इनके जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष– 8, 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71, 80, एवं 13, 22, 31, 40, 49, 67, 76 हैं। सभी महत्वपूर्ण घटनायें इन वर्षो में ही घटित होने की संभावना रहती है।

मूलांक 8 के प्रभाववश इस्वी सन् जिनका योग 1, 4, 8, होता है, इनके लिए विशेष घटनाक्रम वाले होते हैं। जोकि मूलांक 8 के प्रभाव से 2006, 2015, 2024, 2033, 2042, 2051, 2060, 2069, 2078 मित्रांक 4 के प्रभाव से 2002, 2011, 2020, 2029, 2038, 2047, 2056, 20.65, 2074 एवं मित्रांक 1 के प्रभाव से 2008, 2017, 2026, 2035, 2044, 2053, 2062, 2071, 2080 हैं।

मूलांक 8 वाले व्यक्तियों की अंक 1 एवं अंक 4 से मित्रता रहती है। अतः इनके जीवन में 1, 4, 8, के अंक विशेष घटनाक्रम वाले होते हैं। अंक 2, 5, 7, 9, सम रहते हैं तथा 3 एवं 6 के अंक शत्रु होते हैं। उपरोक्त मित्र शत्रु एवं सम अंक से संबंधित दिन, तारीख, मास, वर्ष का भी प्रभाव इन पर आता है। इनको नीलम हमेशा धारण करना चाहिए।

नीचे की पंन्तियों में 8 अंक के बारे में कीरो क मत दिया गया है। उनके अनुसार इन व्यक्तियों को ग्रे, काला, गहरा नीला और जामुनी रंग के सभी शेड्स पहनने चाहिए। यदि इस अंक के व्यक्ति हल्के रंगो के कपड़े पहनेंगे तो अजीब लगेंगे और ऐसा प्रतीत होगा कि कहीं कुछ गड़बड़ है।

क्योंकि 8 का अंक शनि नक्षत्र का है, इसलिए शनिवार इनके लिए भाग्यशाली दिवस है। किन्तु 4 का अंक रविवार पर प्रभाव डालता है और साथ ही सोमवार को भी प्रभावित करता है। इसलिए अंक 8 के व्यक्तियों के लिए शनि, रवि और सोमवार अधिक महत्वपूर्ण दिवस माने जाते हैं।

अंक 8 के अन्तर्गत जन्मे व्यक्तियों को चाहिए कि वे किसी भी माह की 8, 17, 26 तारीखों में ही अपनी योजनाओं को कार्यरूप दें। क्योंकि ये उनके अंक के ही दिन माने जाते हैं। यदि वे 21 दिसम्बर से 20–27 जनवरी और 19 तथा 20 फरवरी के मध्य कार्य करेंगे तो अधिक लाभ होगा। क्योंकि यह समय 8 अंक का समय माना गया है और यदि ये तिथियां शनि, रवि या सोमवार को पड़ती हों तो और भी प्रभावी परिणाम प्राप्त होंगे। इसके साथ ही अपने विनिमय शील अंक 4 की तिथियां अर्थात किसी माह की 4, 13, 22, और 31 तारीखें भी इनके लिए लाभदायक सिद्ध होंगी।

इनको लाभ पहुचाने वाले रत्न हैं नीलमणि और गहरे रंग का नीलम, काला मोती या काला हीरा। यदि सम्भव हो तो वे इस रत्न को इस प्रकार पहनें कि वह इनके शरीर को स्पर्श करता हो।

आठ के अंक की व्याख्या एक कठिन कार्य है। यह भौतिकता एवं अध्यात्म दोनों का ही सूचक है। वास्तव में यदि हम देखें तो यह उन दो वृत्तों की भांति है जो एक दूसरे को स्पर्श करते हैं। यह 4 और 4 के अंक से मिलकर बना अंक है। प्राचीन काल से ही इसे व्यक्ति और राष्ट् के जीवन की दृष्टि से अखण्ड भाग्य सूचक के रूप में देखा गया है। ज्योतिष विद्या में इसे शनि ग्रह का सूचक माना गया है। शनि ग्रह को भी भाग्य का नक्षत्र माना जाता है।

सेफेरियल के मतानुसार मूलांक 8 के व्यक्तियों को 2 का अंक स्पन्दित करता है। 1 एवं 4 के अंक आकर्षित करते हैं तथा 3 एवं 9 के अंक विपरीत रहते हैं। जबकि 5, 7, एवं 9 के अंक सम रहते हैं। इन्हे शनिवार का दिन विशेष लाभप्रद रहता है।

मूलांक 9 मंगल

मूल अंक 9 का स्वामी मंगल है। 9, 18, व 27 तारीखों में पैदा हुए व्यक्तियों का मूल अंक 9 होता है। 21 मार्च से 27 अप्रैत तक तथा 21 अक्टूबर से 27 नवम्बर तक सूर्य मेष व वृश्चिक सायन राशियों में रहता है जो मंगल की राशियाँ हैं। इस कारण इन सायन मासों में पैदा हुए व्यक्तियों पर भी मंगल का विशेष प्रभाव रहता है। इन मासों में मूल अंक 9 की तारीखें भी हों तो और भी अधिक मंगल का प्रभाव रहता है।

ये व्यक्ति बहुत साहसी होते हैं और कठिनाईयों से नहीं घबराते। स्वभाव में तेजी,

फुर्ती व जल्दवाजी होती है। काम को जल्दी जल्दी समाप्त करने की इच्छा रहती है। जीवन काफी संघर्षमय रहता है और अक्सर इनके काफी शत्रु बन जाते हैं। ये लोग पुलिस, फौज, फायर बिग्रड साहस के कामों में यहाँ तक कि दुःसाहस के कामों में काफी सफल होते हैं। परन्तु इनको दुःसाहस करना नहीं चाहिए। सरकस के काम, मौत का गोला, मोटर साइकिल के खेल, कार रेस आदि से बचना चाहिए। पहाड़ पर चढ़ाई आदि में भी जोखिम रहती है। परन्तु ये लोग अक्सर ऐसे ही कामों में खुश रहते हैं और साहस के कामों में घुड़सवारी आदि में दिलचस्पी लेते हैं। शासन व प्रबन्ध व्यवस्था, अनुशासन कायम रखने के कामों में सफल रहते हैं। घर व बाहर इन व्यक्तियों को झगड़े से बचना चाहिए। क्योंकि इन्हें क्रोध जरा जल्दी आता है। अपनी आलोचना भी वर्दाश्त नहीं होती। कोई स्त्री प्रेम का अभिनय करके इन्हे आसानी से मूर्ख बना सकती है और चापलूसी व खुशामदी लोगों से भी यह प्रभावित हो जाते हैं। यह लोग अगर अपने क्रोधी स्वभाव पर कुछ सयंम कर सकें तो काफी सफल व भाग्यशाली हो सकते हैं।

मूलांक 9 के स्वामी मंगल को ग्रहों का सेनापति माना गया है। अतः 9 अंक के जातकों के अन्दर भी सेनापति, नायक, मुखिया इत्यादि बनने की चाह सामाजिक क्षेत्रों में बनी रहती है। रोजगार व्यवसाय में एकाधिकार की प्रवृत्ति आपमें पाई जायेगी। इनके अन्दर साहस अधिक होने से ये अपने कार्यो को अदम्य साहस से करते हुये कठिनाईयों को आसानी से पार कर लेते हैं। स्वभाव में इनके तेजी रहती है। फुर्ती एवं जल्दबाजी होती है। इनकी सदैव यही कोशिश रहती है कि ये जो भी कार्य हाथ में लें वह शीघ्र समाप्त हो जाये।

इनके स्वभाव में साहसीपन होने से इनको दुःसाहस के कार्यो से सदैव दूर रहना हितकर रहेगा। ये अनुशासन प्रिय रहेंगे एवं दूसरो से अनुशासन रखने की अपेक्षा करेंगे। खुशामद एवं चापलुसी से ये प्रभावित होकर कभी–कभी नुकसान भी उठायेंगे। अतः खुशामदी एवं चापलुस व्यक्तियों से सदैव बचें। मंगल ग्रह के प्रभाव से क्रोध की मात्रा भी इनमें रहेगी। इससे इनके विरोधी उत्पन्न होंगे। शत्रुओं की संख्या कम रहेगी एवं इनमें शत्रुओं को दमन करने का बल हमेशा बना रहता है। मंगल के प्रभाववश ये अग्नितत्व प्रधान रोगों के शिकार हो सकते हैं, अतः इनको सौम्यता का व्यवहार रखना भाग्य में वृद्धि कारक रहता है।

9 के अन्तर्गत जन्मे व्यक्ति जीवन में जो पाना चाहते हैं, उसके लिऐ पूर्ण संघर्ष करते हैं। जीवन के प्रारंभ में इन्हें काफी कठ़िनाईयों का सामना करना पड़ता है। किन्तु अन्त में प्रायः ये अपनी सहिष्णुता, आत्मशक्ति एवं दृढ़संकल्प के आधार पर सफलता प्राप्त कर लेने

में सफल होते हैं। ये अत्यधिक गुस्से वाले संवेगशील स्वतंत्र तथा खुद प्रमुख होना इनकी चारित्रिक विशेषताओं में निहित रहता है। जब यह व्यक्ति अपने जीवन काल में अपने ही अंक की तिथियों या काल में से गुजरते हैं तो अधिक अधिकार जताने वाले हो जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप इनके काफी शत्रु बन जाते हैं। जो इनका विरोध करते रहते हैं। इन व्यक्तियों में अत्यधिक साहस होता है और यह व्यक्ति अद्‌भुत नेता या सेनिक सिद्ध होते हैं।

ऐसे जातकों का बड़बोलापन और भावुकता पूर्ण आचरण करने के कारण इन्हें कई बार मुसीबतों का सामना करना होता है। इनका जिस परिवार में विवाह होता है उनसे या स्वयं अपने परिवार वालों से संघर्ष बना रहता है। ये हर प्रकार की आलोचना का कड़ा विरोध करते हैं। अभिमानी न होने के बाबजूद यह स्वयं को कुछ अधिक भला ही समझते हैं और अपनी योजनाओं में किसी प्रकार का हस्तक्षेप पसंद नहीं करते। ऐसे जातक स्वयं को सम्मान की दृष्टि से देखे जाने और घर के मुखिया के रूप में प्रसिद्धि पाने की आकांक्षा रखते हैं। यदि इनको पूर्ण नियंत्रण की छूट हो तो किसी भी प्रकार की व्यव्स्था करने में सक्षम और प्रतिभाशाली सिद्ध होते हैं। यदि इन्हे पूर्ण नियंत्रण की छूट नहीं मिलती तो इनका हृदय टूट जाता है और यह उस कार्य को छोड़कर अलग थलग हो जाते हैं। प्रेम एवं साहनुभूति के लिए ऐसे जातक कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। इसलिए यदि कुछ चालाक महिलाएं इनके हृदय की डोर को संभाल लें तो इस अंक के पुरुषों को आसानी से मूर्ख बनाया जा सकता है।

9 अंक की 3, 6 मूल अंक के साथ मित्रता है। जो व्यक्ति 9, 18, 27 तथा 3, 12, 30, और 6, 15, 24 तारीखों में पैदा हुए हैं उनके साथ इनकी मित्रता, साझेदारी विवाह सम्बन्ध व प्रेम सम्बन्ध ठीक निभ जाते हैं। यह तारीखें इनको शुभ हैं। नये और महत्वपूर्ण कार्य इन व्यक्तियों को मंगलवार को करने चाहिए और यदि उस दिन उपरोक्त तारीखों में से कोई तारीख भी पड़े तो और भी अच्छा है। यदि शुभ सायन मास अर्थात् 21 मार्च से 27 अप्रेल और 21 अक्टूबर से 27 नबम्बर तक का समय भी मिल जाय तो फिर अधिक शुभ रहता है। गुलाबी और गहरे लाल रंग इन्हें विशेष अनुकूल रहते हैं।

मूलांक 9 के प्रभाववश इस्वी सन् जिनका योग 9, 3, 6 होता है इनके लिए विशेष घटनाक्रम वाले होते हैं। जोकि मूलांक 9 के प्रभाव से 2007, 2016, 2025, 2034, 2043, 2052, 2061, 2070, 2079 मित्रांक 3 के प्रभाव से 2001, 2010, 2019, 2028, 2037, 2046, 2055, 2064, 2073 एवं मित्रांक 6 के प्रभाव से 2004, 2013, 2022, 2031, 2040, 2049, 2058, 2067, 2076 होते हैं।

मूलांक 9 वाले व्यक्तियों की अंक 3 एवं अंक 6 से मित्रता रहती है। अतः इनके जीवन में 3, 6, 9, के अंक विशेष घटनाक्रम वाले होते हैं। अंक 2, 4, 5, 8, सम रहते हैं तथा 1 एवं 7 के अंक शत्रु होते हैं। उपरोक्त मित्र शत्रु एवं सम अंक से संबंधित दिन, तारीख, मास, वर्ष का भी प्रभाव इन पर आता है। इनको इटालियन मूंगा अनुकूल रहता है।

कीरो के मत से 3 ,6, और 9 के अंक अर्थात् महीने की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27, व 30 तारीखों में उत्पन्न व्यक्तियों के साथ अंक 9 के व्यक्तियों की खूब पटती है। इन अंको के व्यक्तियों का 9 के अंक के व्यक्तियों से मैत्री होती है। अंक 9 की कुछ अजीबोगरीब विशेषताएं है। गणनाओं के केवल एक यही ऐसा अंक है जिसे किसी भी अंक से गुणा किए जाने पर गुणनफल अन्तिम अंक 9 ही देता है। उदाहर– णार्थ 9 को 2 से गुणा करें तो 18 मिलता है और इन्हें जोड़े तो पुनः 9 का अंक प्राप्त होता है। इसी प्रकार किसी भी अंक से गुणा क्यों न करें अन्तिम अंक 9 ही प्राप्त होगा।

इस अंक के व्यक्तियों के लिए लाभदायक रंग लाल, गहरा लाल या इसके सभी शेड्स तथा गुलाबी रंग है। इनके लिए महत्वपूर्ण दिन है। मंगलवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार। मंगलवार मंगल नक्षत्र का दिन होने के कारण अधिक महत्वपूर्ण है।

इस अंक के व्यक्तियों को कार्यरूप देना चाहिए, वे दिन हैं, किसी भी महीने की 9, 18, और 27 तारीखें और यदि ये तारीखें 21 मार्च से 19–26 अप्रैल और 21 अक्तूबर से 20–27 नवम्बर के मध्य पड़ती हैं तो अधिक प्रभावपूर्ण होंगी। 3 और 6 अंक, जो कि 9 के अंक के विनिमयशील अंक हैं, की तिथियां 3, 6, 12, 15, 21, 24, 30 आदि भी 9 अंक वालों के लिए लाभदायक सिद्ध होंगी। इनके लाभदायक रत्न हैं रूबी, गार्नेट, रत्नमणि आदि यदि ये उन्हें शरीर से स्पर्श करता हुआ पहन सकें तो बहुत लाभ होगा।

रहस्य विद्या की सभी गणनाओं में 7 और 9 का अंक सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। अंक सात को अध्यात्म से जोड़ा गया है और इसे ईश्वर अथवा पृथ्वी की सृजन शक्ति के रूप में स्वीकारा गया है। रचयिता होने के कारण इसमें उत्थान की लालसा रहती है, ताकि मानव मात्र का आत्मिक उत्थान हो सके। इसके विपरीत 9 का अंक ग्रह चक्र में मंगल ग्रह का प्रतीक है, जो समस्त रूपों में भौतिक शक्ति का सूचक है। परिणामतः यह लौकिक विषयों से सम्बद्ध है।

सेफेरियल के मतानुसार मूलांक 9 के व्यक्तियों को 1 का अंक स्पन्दित करता है। 2, 3 एवं 6 के अंक आकर्षित करते हैं तथा 7 का अंक विपरीत रहता है। जबकि 4, 5, एवं 8 के अंक सम रहते हैं। इन्हें मंगलवार का दिन विशेष लाभप्रद रहता है।

4. भाग्यांक फल

जन्म दिनांक के सम्पूर्ण अंकों के जोड़ को संयुक्तांक अथवा भाग्यांक कहते हैं। इसमें तारीख, माह एवं सन् सभी को एक साथ जोड़ देते हैं। जैसे 15.08.1947 का योग1+5+0+8+1+9+4+7=35=3+5= 8 यह 8 का अंक ही भाग्यांक या संयुक्तांक होता है। भाग्यांक 1 से लेकर 9 तक जन्मे व्यक्तियों पर भाग्यांक का क्या प्रभाव रहेगा यह नीचे दे रहे हैं।

भाग्यांक 1 सूर्य

भाग्यांक एक का अधिष्ठाता सूर्य ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से ऐसे जातक जिनका भाग्यांक एक होता है वे अपने कार्यक्षेत्र में एक चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजसी ठाटबाट को पसन्द करने वाले स्पष्ट वक्ता होते हैं। ये स्वभाव से गंम्भीर, उदार हृदय, परोपकारी, सत्य के मार्ग पर चलने वाले यशस्वी तथा विरोधियों को परास्त करने में विश्वास रखने वाले शूरवीर व्यक्ति के रूप में पहचान स्थापित करते हैं। इनका जीवन चक्र एक राजा की भाँति संचालित होता है अर्थात् यह हुकूमत पसन्द, स्वतंत्र तथा स्थिर विचार धारा पर निर्भीक चलते हैं। अहं या स्वाभिमान इनमें कूट–कूट कर भरा होता है।

इनकी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति इनकी मेहनत से होती है। इनके अधिकारों में समयानुसार वृद्धि होती रहती है। सूर्य अग्नि तत्व का द्योतक होने से इनका तेज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त होता है तथा इनकी जीवनी शक्ति अच्छी रहने से ये दूसरों को प्रोत्साहित करने में कुशल रहते हैं। इनका भाग्य उच्च श्रेणी का होने से एक दिन ये अपने श्रम, लगन, स्थिर प्रकृतिवश सर्वोच्चता को प्राप्त करते हैं। सूर्य प्रकाशित ग्रह होने से इनको हमेशा प्रकाश में रहना सुखकर लगता है और ये ऐसे ही कार्यक्षेत्र को पसन्द करते हैं, जिसमें इनको नाम तथा यश दोनों ही मिलें।

भाग्यांक एक के प्रभावित जातकों के लिए भाग्यांक के प्रभाव से भाग्योदय उन्नीस वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होकर अठ्ठाइसवें वर्ष की अवस्था पर उच्चता मिलती है तथा सैंतीस वर्ष की पूर्ण अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होता है।

भाग्यांक के प्रभाव से इनकी आयु के ऐसे वर्ष जिनका योग एक होता है, वह भी इनके लिए भाग्योदय कारक रहते हैं, जैसे आयु वर्ष 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64 और 73 वें वर्ष इनके लिए योगकारी सिद्ध होते हैं।

ऐसे इसवी सन् जिनका योग एक आता है वे भी भाग्यांक एक प्रभावित व्यक्तियों को अनुकूल जाते हैं। जैसे सन् 2008, 2017, 2026, 2035, 2044, 2053, 2062, 2071, 2080 वाँ सन् इन वर्षों में इनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित होती हैं।

भाग्यांक 2 चन्द्र

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। जिन जातकों का भाग्यांक दो है उनको भाग्यांक के प्रभाव से उन्नत किश्म की कल्पनाशक्ति प्राप्त होती है। बौद्धिक स्तर इनका उच्च कोटि का रहता है एवं बुद्धि जन्य कार्यो में इनकी विशेष अभिरूचि रहती है। शारीरिक श्रम साध्य कार्यो में इनकी दिलचस्पी कम रहेगी। चन्द्रमा जिस तरह घटता–बढ़ता रहता है उसी प्रकार इनके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा और कभी ये एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगे। ऐसे समय में धैर्य रखना इनके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि इनके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होता है। धैर्य न रखना इनकी कमजोरियों में रहेगा।

भाग्य इनका चन्द्रमा के रूप की तरह बदलता रहता है। एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँच पाता। इनको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहती है। इनको अधिकारियों से लाभ रहता है तथा धन–धान्य से ये सुखी रहते हैं। इनको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यो को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति वश इनके कार्य देर से संपादित होंगे और कभी असफल भी होते रहेंगे।

भाग्यांक दो से प्रभावित जातकों के लिए भाग्यांक के प्रभाव से भाग्योदय उन्नीस वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होकर अठ्ठाइसवें वर्ष की अवस्था पर उच्चता मिलती है तथा सैंतीस वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होता है।

भाग्यांक के प्रभाव से इनकी आयु के ऐसे वर्ष जिनका योग दो होता है, वह भी इनके लिए भाग्योदय कारक रहते हैं, जैसे आयु वर्ष 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65 और 74 वें वर्ष इनके लिए योगकारी सिद्ध होते हैं।

ऐसे इसवी सन् जिनका योग दो आता है वे भी भाग्यांक दो प्रभावित व्यक्तियों को अनुकूल जाते हैं। जैसे सन् 2009, 2018, 2027, 2036, 2045, 2054, 2063, 2072, 2081 वाँ सन् इन वर्षों में इनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित होती हैं।

भाग्यांक 3 गुरू

भाग्यांक तीन का अधिष्ठाता बृहस्पति ग्रह को माना गया है। इसको गुरू भी कहते हैं। गुरू ग्रह के प्रभाववश भाग्यांक 3 के व्यक्ति धार्मिक, दानी, उदार, सच्चरित्र, ज्ञानी, विद्वान, परोपकारी, शान्त स्वभाव के सत्य पर आचरण करने वाले व्यक्ति के रूप में ख्याति प्राप्त करते हैं। अनुशासन में रहना एवं दूसरों से अनुशासन की अपेक्षा करना इनका प्रमुख गुण रहता है। ये अपने अधिनस्थों से अधिकांश कार्य अपने बुद्धि कौशल से निकलवाने में सिद्धहस्त होते हैं।

सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में इनकी रुचि रहेगी एवं आवश्यकता के समय समाज सेवा के कार्य से पीछे नहीं हटेंगे। धर्म–कर्म के कार्यो में इनकी रूचि रहेगी। गुरू धन–सम्पदा का दाता ग्रह है। अतः गुरू प्रभाव से अपने कर्मक्षेत्र, रोजगार के क्षेत्र में अच्छी सम्पदा एकत्रित कर लेते हैं। भूमि, वाहन, सम्पत्ति का अच्छा सुख प्राप्त करते हैं। ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में रूचि लेंगे और ऐसा कार्य करना पसन्द करेंगे जिनमें इनके अनुभव, ज्ञान का भरपूर उपयोग होता हो, और इनको पूर्ण सम्मान, यश धन इत्यादि मिले।

भाग्यांक तीन से प्रभावित जातकों के लिए भाग्यांक के प्रभाव से भाग्योदय 21 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होकर 30 वर्ष की अवस्था पर उच्चता मिलती है तथा 39 वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होता है।

भाग्यांक के प्रभाव से इनकी आयु के ऐसे वर्ष जिनका योग तीन होता है, वह भी इनके लिए भाग्योदय कारक रहते हैं, जैसे आयु वर्ष 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66 और 75 वें वर्ष इनके लिए योगकारी सिद्ध होते हैं।

ऐसे इसवी सन् जिनका योग तीन आता है, वे भी भाग्यांक तीन प्रभावित व्यक्तियों को अनुकूल जाते हैं। जैसे सन् 2001, 2010, 2019, 2028, 2037, 2046, 2055, 2064, 2073 वाँ सन् इन वर्षों में इनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित होती हैं।

भाग्यांक 4 हर्षल या राहु

भाग्यांक चार का स्वामी भारतीय मतानुसार राहू एवं पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह को माना गया है। हर्षल ग्रह के प्रभाव से भाग्यांक 4 के जातकों का भाग्योदय अचानक होता है। इनके जीवन में कई कार्य ऐसे होंगे जिनमें अथक परिश्रम के बाद चाही गई अवधि में सफलता न मिले और कार्य रुक जायें। लेकिन एक दिन अचानक ही ऐसे कार्य बन भी जाया करते हैं। ये अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन के हिमायती होंगे एवं पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन करते रहना इनकी आदत में शुमार रहेगा। ऐसे व्यक्ति रूढ़ि वादिता से थोड़े दूर तथा आधुनिक किस्म के होते हैं।

ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में इनका रूझान रहेगा एवं ऐसे कार्यो को संपादन करने में आनंन्द आयेगा जिन्हें अन्य जन दुष्कर समझें। इनके कार्यो में विस्फोटकता रहेगी तथा ये अचानक चर्चित होंगे। लेकिन यह स्थायित्व नहीं ले सकेगा। बार–बार का परिवर्तन इनकी उन्नति में बाधक रहेगा। अचानक सफलता या असफलता से इनको सबक लेना होगा कि भाग्य इनका परिवर्तनशील है। अतः इनको अधिक विस्फोटक, जोखिम युक्त कार्यो से दूर रहना या सोच–समझकर कार्य करना भाग्य वृद्धि कारक रहता है।

भाग्यांक चार प्रभावित जातकों के लिए भाग्यांक के प्रभाव से भाग्योदय 22 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होकर 31 वर्ष की अवस्था पर उच्चता मिलती है तथा 40 वर्ष की पूर्ण अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होता है।

भाग्यांक के प्रभाव से इनकी आयु के ऐसे वर्ष जिनका योग चार होता है, वह भी इनके लिए भाग्योदय कारक रहते हैं, जैसे आयु वर्ष 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67 और 76 वें वर्ष इनके लिए योगकारी सिद्ध होते हैं।

ऐसे इसवी सन् जिनका योग चार आता है वे भी भाग्यांक चार प्रभावित व्यक्तियों को अनुकूल जाते हैं। जैसे सन् 2002, 2011, 2020, 2029, 2038, 2047, 2056, 2065, 2074 वाँ सन् इन वर्षों में इनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित होती हैं।

भाग्यांक 5 बुध

भाग्यांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से इन जातकों का भाग्योदय स्व–बुद्धि विवेक द्वारा होता है। बुध वाणिज्य, व्यावसायिक कला का दाता है। गणित, लेखन, शिल्प, चिकित्सा, लेखा कार्यो में अच्छी प्रगति प्रदान करता है। इनके अन्दर व्यापारिक कला अच्छी

विकसित होती है। वाक पटुता, तर्कशक्ति, बहुत बोलने की आदत रहती है। ऐसे जातक रोजगार के क्षेत्र में नित नई स्कीम बनाते रहते हैं, जो इनकी तरक्की का मार्ग प्रशस्त करती है। वाणिज्य कला में ये काफी निपुण होते हैं एवं रोजमर्रा के कार्यो को फुर्ती से पूर्ण करते हैं। दूसरों से कार्य निकलवाने में भी ये निपुण होते हैं।

इनकी बुद्धि व्यवसायिक होने से धन संग्रह की ओर ये अधिक आकृष्ट रहते हैं एवं आवश्यकतानुसार वक्त–वे–वक्त के लिए धन एकत्रित करते हैं। आर्थिक क्षेत्र में इनकी स्थिति मध्यमोत्तम श्रेणी की रहती है। कानून का इनको ठीक ज्ञान रहने से ये कार्यक्षेत्र में सभी कार्यो को बखूबी निभाते हैं तथा सामने वाले इनके ज्ञान के आगे नत–मस्तक हो जाते हैं।

भाग्यांक पाँच प्रभावित जातकों के लिए भाग्यांक के प्रभाव से भाग्योदय 23 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होकर 32 वर्ष की अवस्था पर उच्चता मिलती है तथा 41 वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होता है।

भाग्यांक के प्रभाव से इनकी आयु के ऐसे वर्ष जिनका योग पाँच होता है, वह भी इनके लिए भाग्योदय कारक रहते हैं, जैसे आयु वर्ष 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68 और 77 वें वर्ष इनके लिए योगकारी सिद्ध होते हैं।

ऐसे इसवी सन् जिनका योग पाँच आता है, वे भी भाग्यांक पाँच प्रभावित व्यक्तियों को अनुकूल जाते हैं। जैसे सन् 2003, 2012, 2021, 2030, 2039, 2048, 2057, 2066, 2075 वाँ सन् इन वर्षों में इनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित होती हैं।

भाग्यांक 6 शुक्र

भाग्यांक 6 के स्वामी शुक्र ग्रह के प्रभाव से ऐसे जातकों का भाग्योदय चौंसठ कलाओ के अन्दर ही होता है। शुक्र कला का दाता है। अतः इनके अन्दर ललित कलाओं में से कुछ कलाओं का समावेश होता है। ये कला के क्षेत्र में, कला के द्वारा जीवन यापन करेते हैं। कलात्मक वस्तुऐं इनको लाभ प्रदान करती हैं। ये विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण के अवगुण वश तन–मन एवं धन का व्यय करते हैं। सौन्दर्य की ओर आकर्षण इनकी कमजोरी रहता है।

इनके कार्य करने के स्थान तथा रहने के स्थान की साज–सजावट बनाये रखने में इनको हमेशा धन व्यय करते रहना होता है। क्योंकि सुसज्जित परिवेश में रहना इनके

मनोनुकूल होता है। ऐसे जातक वस्त्र आभूषण के शौकीन रहते हैं। धन स्थिति इनकी ठीक रहती है। शान–शौकत बनाए रखते हैं। सामने वाले व्यक्ति इनको हमेशा धनी समझते रहते हैं, भले ही ये यदा–कदा कड़की के दिनों में चल रहे हों। किसी भी कला के क्षेत्र को ये अपना रोजगार का क्षेत्र चुनते हैं, तो इनकी उन्नति निश्चित ही होती है।

भाग्यांक छह प्रभावित जातकों के लिए भाग्यांक के प्रभाव से भाग्योदय 24 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होकर 33 वर्ष की अवस्था पर उच्चता मिलती है तथा 42 वर्ष की पूर्ण अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होता है।

भाग्यांक के प्रभाव से इनकी आयु के ऐसे वर्ष जिनका योग छह होता है, वह भी इनके लिए भाग्योदय कारक रहते हैं, जैसे आयु वर्ष 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69 और 78 वें वर्ष इनके लिए योगकारी सिद्ध होते हैं।

ऐसे इसवी सन् जिनका योग छह आता है, वे भी भाग्यांक 6 प्रभावित व्यक्तियों को अनुकूल जाते हैं। जैसे सन् 2004, 2013, 2022, 2031, 2040, 2049, 2058, 2067, 2076 वाँ सन् इन वर्षों में इनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित होती हैं।

भाग्यांक 7 नेपच्यून या केतु

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रूकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी– कठिनाई से होता है। अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में इन जातकों का रूझान रहता है। इन क्षेत्रों को ये अपना कर्म–क्षेत्र बना सकते हैं। इनमें इनकी उन्नति निहित रहती है।

इनको ऐसा रोजगार पसन्द आता है, जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर–दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा इनके लिए रूचि पूर्ण रहता है। कई एक यात्राओं से ये व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करते हैं। दूर के व्यक्तियों से इनके अच्छे संबंध बनते हैं जो इनको रोजगार व्यापार में लाभ प्रदान करते हैं। प्राचीन रीति–रिवाजों पर इनकी आस्था कम रहती है तथा परिवर्तन करते रहना इनको सुहाता है। इनका कार्यक्षेत्र यदा–कदा परिवर्तित होता रहता है।

भाग्यांक सात प्रभावित जातकों के लिए भाग्यांक के प्रभाव से भाग्योदय 25 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होकर 34 वर्ष की अवस्था पर उच्चता मिलती है तथा 43 वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होता है।

भाग्यांक के प्रभाव से इनकी आयु के ऐसे वर्ष जिनका योग सात होता है, वह भी इनके लिए भाग्योदय कारक रहते हैं, जैसे आयु वर्ष 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70 और 79 वें वर्ष इनके लिए योगकारी सिद्ध होते हैं।

ऐसे इसवी सन् जिनका योग सात आता है, वे भी भाग्यांक सात प्रभावित व्यक्तियों को अनुकूल जाते हैं। जैसे सन् 2005, 2014, 2023, 2032, 2041, 2050, 2059, 2068, 2077 वाँ सन् इन वर्षों में इनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित होती हैं।

भाग्यांक 8 शनि

भाग्यांक आठ का स्वामी शनि ग्रह को माना गया है। शनि ग्रह अति धीमा होने से तीस वर्ष में एक राशि पथ भ्रमण चक्र पूर्ण करता है। इसके प्रभाव से भाग्यांक 8 के जातकों का भाग्योदय भी धीरे–धीरे होता है। ये जातक भले ही कितनी भी गरीबी में उत्पन्न हुए हों इनका भाग्य सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ता चला जाता है। इस मध्य रूकावटें भी आतीं हैं, जिन्हें ये धैर्य एवं अपने श्रम से पार कर लेते हैं। आलस्य एवं निराशा इनकी तरक्की की बाधाऐं रहतीं हैं। इन पर विजय प्राप्त करना इनकी सबसे बड़ी उपलब्धि होती है।

ये अपने कार्यक्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त करते हैं। इनकी सभी सफलताएं विघ्नों से युक्त होते हुए भी ये आसानी से अपनी तरक्की के रास्ते स्वयं निर्मित कर लेते हैं। इनका भाग्योदय 35 वर्ष की अवस्था के पश्चात ही होता है। बचपन की अपेक्षा मध्य तथा अन्तिम अवस्था इनके भाग्योदय में विशेष सहायक होती है। अन्तिम अवस्था इनकी अच्छी रहती है एवं धन सम्पत्ति का पूर्ण सुख प्राप्त करते हैं।

भाग्यांक आठ प्रभावित जातकों के लिए भाग्यांक के प्रभाव से भाग्योदय 26 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होकर 35 वर्ष की अवस्था पर उच्चता मिलती है तथा 44 वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होता है।

भाग्यांक 8 के प्रभाव से इनकी आयु के ऐसे वर्ष जिनका योग आठ होता है, वह भी इनके लिए भाग्योदय कारक रहते हैं, जैसे आयु वर्ष 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71, और 80 वें वर्ष इनके लिए योगकारी सिद्ध होते हैं।

ऐसे इसवी सन् जिनका योग आठ आता है, वे भी भाग्यांक आठ प्रभावित व्यक्तियों को अनुकूल जाते हैं। जैसे सन् 2006, 2015, 2024, 2033, 2042, 2051, 2060, 2069, 2078 वाँ सन् इन वर्षों में इनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित होती हैं।

भाग्यांक 9 मंगल

भाग्यांक नौ का स्वामी मंगल ग्रह को माना गया है। यह ग्रह मण्डल का सेनापति है। रक्त वर्ण का क्षत्रियोचित गुणों का है। इसके प्रभाव से भाग्यांक 9 के जातक स्वतंत्ररूप से रोजगार– व्यापार के क्षेत्र में तरक्की करते हैं। साहस भरे कार्यो से इनका भाग्योदय होता है। ये ऐसे क्षेत्र को अपना रोजगार चुनते हैं, जहाँ इनकी हूकूमत चलती रहे। मूखिया, नायक, अगुआ के रूप में कार्य करना इनको हमेशा अच्छा लगता है।

रोजगार के क्षेत्र में ये अपनी स्वतंत्र विचारधारा के द्वारा महत्वपूर्ण उन्नति को प्राप्त करते हैं। यांत्रिक कार्यो में इनकी रूचि रहती है। एकाधिकार पूर्ण कार्य क्षेत्र इनकी प्रथम पसन्द रहते हैं, और इनकी कोशिश रहती है कि इन्होने जो कार्यक्षेत्र अपने जीवन यापन हेतु चुना है उसमें किसी का भी हस्तक्षेप न हो । विरोध, बिना वजह का हस्तक्षेप ये बर्दास्त नहीं कर पाते। यांत्रिकी कार्य, चिकित्सा, सेना, संगठन, सामाजिक क्रिया कलापों में इनकी गहरी रुचि रहती है।

भाग्यांक नो प्रभावित जातकों के लिए भाग्यांक 9 के प्रभाव से भाग्योदय 18 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होकर 27 वर्ष की अवस्था पर उच्चता मिलती है तथा 36 वर्ष की अवस्था पर पूर्ण भाग्योदय होता है।

भाग्यांक 9 के प्रभाव से इनकी आयु के ऐसे वर्ष जिनका योग नौ होता है, वह भी इनके लिए भाग्योदय कारक रहते हैं, जैसे आयु वर्ष 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72 और 81 वें वर्ष इनके लिए योगकारी सिद्ध होते हैं।

ऐसे इसवी सन् जिनका योग नौ आता है, वे भी भाग्यांक नौ प्रभावित व्यक्तियों को अनुकूल जाते हैं। जैसे सन् 2007, 2016, 2025, 2034, 2043, 2052, 2061, 2070, 2079 वाँ सन् इन वर्षों में इनके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ घटित होती हैं।

5. अंक ज्योतिष और नाम

नाम के प्रथम अक्षर का ज्योतिष विज्ञान में विशेष महत्व है। इससे राशि तथा नक्षत्र का निर्णय होता है। भारत के कुछ भागों में विवाह के बाद कन्या के नाम का पति के नाम के अनुकूल परिवर्तन करने की प्रथा है। दक्षिण भारत के कुछ भागों में, कुछ राज घरानों में तथा ब्रिटेन के राज घराने में यह प्रथा है कि ज्येष्ठ पौत्र का नाम बाबा के नाम पर रखा जाता है। यहूदियों में मरणासन्न रोगी के नाम को मन्दिर में ले जाकर इस आशा से नाम में परिवर्तन किया जाता है कि शायद इससे बीमार व्यक्ति बच जाय। सन्यास लेते समय या पूर्णाभिषेक के समय में भी नाम इसी कारण बदला जाता है कि इससे गृहस्थ जीवन के नाम के साथ जुड़े संस्कार समाप्त हो जाएँ।

अधिकांशतः व्यक्ति के दो नाम होते हैं। एक राशि का और दूसरा प्रचलित नाम होता है। मगंल कार्यो में, यात्रा का मूहूर्त निकालने में तथा राशि फल का विचार करते समय राशि नाम को लेना चाहिए। अन्य बातों में प्रचलित नाम। परन्तु जिनको जन्म के समय व तारीख का पता नहीं है तब उनके प्रचलित नाम से ही विचार किया जाता है। इसी प्रकार अंक ज्योतिष में भी जिनकी जन्म की तारीख का पता नहीं होता तब उनके नाम के अक्षरों से काम चलाया जाता है। इस विषय पर सभी पुस्तकें पाश्चात्य विद्वानों द्वारा लिखी होने से अंग्रेजी के अक्षर निर्धारित हैं। उसी आधार पर नाम के अक्षरों को अंको में किस प्रकार परिवर्तित किया जाता है, इस हेतु एक तालिका दी जा रही है। इसमें कीरो के मत से क्या अंक निश्चित हैं और सेफेरियल के कबाला आफ नम्बर्स के अनुसार क्या अंक निश्चित हैं, यह दोनों ही बताये गए हैं।

नाम कौन सा लेना चाहिए, इस विषय में मत यह है कि जिस नाम को सुनकर मनुष्य सोते से जाग जाय वही नाम इस गणित में लेना चाहिए और वह व्यक्ति अपने नाम को दस्तखत करते समय जिस प्रकार लिखता है उसी प्रकार से नाम को लिखकर अंको में परिवर्तित करना चाहिए। नेपोलियन वोनापार्ट ने जिस दिन अपने नाम के हिज्जों में थोड़ा सा ही परिवर्तन किया था, उसी दिन से उनका दुर्भाग्य शुरू हो गया था। लेखक ने जिस दिन अपने नाम में परिवर्तन किया उसी दिन से उसका भाग्य उदय होना प्रारंभ हो गया।

यह सच है। मैं पहिले अपना नाम हरिश्चन्द अग्रवाल लिखता था। सन् 1978 में अंक विद्या के प्रभाववश नाम में परिवर्तन किया और दो माह के बाद मेरी पदोन्नति अधिकारी के रूप में हो गई।

HARISH CHAND AGARWAL

5 1 2135 3 51 5 4 13 1 2 6 1 3 = 52

परिवर्तन के बाद नाम

HARISH CHANDRA AGARWAL

5 1 2135 3 51 5 4 2 1 1 3 1 2 6 13 = 55

मैंने मात्र दो अक्षर आर एवं ए चन्द CHAND में जोड़ा। जो चन्द से चन्द्र CHANDRA हो गया। आर के 2 एवं ए का 1 अंक कुल 3 अंक नाम के पूर्व अंक योग 52 में जोड़ने से योग फल 55 हो गया। जिसका फल निम्न देखें, आपकी समझ में आ जाएगा कि परिवर्तन क्यों आवश्यक था।

52 यह अशुभ संख्या है। असफलता, बाधा, लड़ाई, झगड़ा, गड़ बड़ क्रांति आदि अशुभ परिणाम होते हैं।

55. यह नेतृत्व का अंक है। ऐसा व्यक्ति प्रखर बुद्धि का तथा धार्मिक विचार का होता है और अन्य जनों का नेतृत्व करता है।

अंग्रेजी वर्णमाला से नाम को अंकों में परिवर्तित करने हेतु निम्न तालिका उपयोगी रहेगी। इसमें कीरो मत या चाल्डियन मत, सेफेरियल या हिब्रू मत तथा पाईथोगोरियन तीनों ही मत दिए हैं। लेखक की नजर में कीरो मत अधिक सटीक है। हिन्दी के अक्षरों को अंकों में परिवर्तित करने की तालिका भी दी है। जिसकी सहायता से आप हिन्दी में दिए नाम को अंग्रेजी एवं अंकों में परिवर्तित कर सकते हैं।

नाम को अंकों में परिवर्तित करने की सारिणी

अंग्रेजी	हिन्दी लिपि	हिन्दी अक्षर	कीरो मत चाल्डियन	सेफेरियल मत हिब्रू	पाईथोगोरियन मत
A	ए	अ	1	1	1
B	बी	ब	2	2	2
C	सी	स	3	2	3
D	डी	द–ड	4	4	4
E	ई	इ	5	5	5
F	एफ	फ	8	8	6
G	जी	ज–ग	3	3	7
H	एच	ह	5	8	8
I	आई	ई	1	1	9
J	जे	ज	1	1	6
K	के	क	2	2	1
L	एल	ल	3	3	2
M	एम	म	4	4	3
N	एन	न	5	5	4
O	ओ	ओ	7	7	5
P	पी	प	8	8	6
Q	क्यू	क	1	1	7
R	आर	र	2	2	8
S	एस	स	3	3	9
T	टी	ट	4	4	1
U	यू	ऊ	6	6	2
V	व्ही	व	6	6	7
W	डब्लू	य	6	6	5
X	एक्स	क्ष	5	6	3
Y	वाय	य	1	1	4
Z	जेड	ज	7	7	5

एक से 9 तक के अंको के लक्षण तथा प्रभाव मूलांक में बताये जा चुके हैं। अब 10 से 70 तक के अंको के प्रभाव व लक्षण बताये जा रहे हैं।

10. यह प्रतिष्ठा तथा आत्म विश्वास का अंक है। इस अंक वाला व्यक्ति अपनी इच्छानुसार बुराई या भलाई के लिए विख्यात होगा। ऐसे व्यक्ति की इच्छाएँ तथा महत्वाकांक्षाएँ पूरी होती हैं।

11. यह शुभ अंक नहीं है। ऐसे व्यक्ति को अन्य लोगों से भय, धोखा आदि की आशंका रहती है। असंभावित स्थानों से भी अचानक धोखा होता है।

12 यह अंक मानसिक चिन्ता तथा कष्ट का द्योतक है तथा अन्य लोग अपनी कार्य साधना के लिये एवं स्वार्थपूर्ति हेतु इनके हितों की बलि चढ़ा देते हैं।

13. इस अंक वाले व्यक्ति के इरादों और कार्य में सदैव परिवर्तन होता रहेगा। स्थान परिवर्तन भी हो सकता है। बहुत से लोगों की यह धारणा है कि यह अशुभ अंक है, परन्तु वास्तव में ऐसी बात नहीं है। 13 ऐसी शक्ति का प्रतीक है जो यदि उचित रूप से प्रयुक्त की जाए तो लाभकारी हो सकती है।

14. इस अंक से गति तथा जन एवं वस्तु की समुदायात्मक प्रवृत्ति प्रकट होती है। आंधी, पानी, तूफान, अग्नि, भूकम्प आदि भय की आशंका रहती है। कार्य परिवर्तन, धन तथा सट्टे के लिये यह अंक शुभ है। किन्तु अन्य मनुष्यों की गलती से जातक को कुछ भय की आशंका रहती है।

15 यह मन्त्र शास्त्र या रहस्य से सम्बधित अंक है। यदि किसी के नाम के एक शब्द के अंको का योग 15 आवे तो शुभ होता है। दूसरों से धन प्राप्ति के लिये यह अंक शुभ है। इस अंक वाले व्यक्ति संगीत तथा कला के प्रेमी और अच्छे वक्ता होते हैं।

16. इस अंक वाले व्यक्ति जीवन में बहुत उन्नति करते हैं, किन्तु बाद में उनके अधः पतन की आशंका रहती है। इनको दुर्घटना से बचना चाहिए। यह लोग बहुत महत्वाकांक्षी होते हैं। परन्तु इनकी सारी महात्वाकांक्षाएँ पूर्ण नहीं होती हैं।

17. यह अंक आत्मिक शक्ति से संबंध रखता है। इस अंक वाले व्यक्ति कठिनाइयों और विपत्तियों को पार कर नाम और यश कमाने में सफल होते हैं। उनके जीवन के बाद भी उनकी कीर्ति रहती है। यह शुभ अंक है।

18. इस अंक से कलह और शत्रुता प्रकट होती है। इस अंक वाला व्यक्ति कुटुम्ब की कलह तथा अन्य जनों की शत्रुता से पीड़ित रहता है। प्रायः ऐसे व्यक्ति शत्रुता द्वारा तथा ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों द्वारा भी धन कमाने में प्रवृत्त होते है।

19 यह शुभ अंक है। यह सूर्य का प्रतीक है। इससे हर्ष, सफलता, प्रतिष्ठा तथा मान–सम्मान वृद्धि प्रकट होती है।

20. इस अंक को भी शुभ माना गया है। यह अंक जाति तथा न्याय का प्रतीक है। इससे नवीन योजनायें तथा नई महत्वाकांक्षाएँ प्रकट होती हैं। किन्तु सफलता निश्चित होगी यह नहीं कहा जा सकता। कार्य में बाधायें तथा बिलम्ब होता है।

21. इससे उन्नति, प्रतिष्ठा, पदवृद्धि, आदि प्रकट होती है। कार्य की सफलता प्रकट होती है।

22. इस अंक वाला व्यक्ति बहुधा स्वप्न की दुनिया में रहता है। मिथ्या आशाओं में अपना समय बरबाद करता रहता है और जब विपत्ति बिल्कुल सिर पर आ जाती है तब चौकन्ना होता है। इस अंक से यह भी प्रकट होता है कि जो धारणा बना रखी है वह मिथ्या है।

23. उच्च अधिकारियों की कृपा या अपने से श्रेष्ठ जनों की सहायता द्वारा उन्नति तथा सफलता प्रकट होती है।

24. यह शुभ अंक है। अपने कार्य में उच्च पदाधिकारियों के सहयोग तथा उनकी सहायता व्यक्त होती है। किसी पुरूष को किसी महिला के प्रेम तथा सहायता से और किसी स्त्री को किसी पुरुष (पति, पिता, भाई या अन्य व्यक्ति) के स्नेह तथा सहायता से लाभ होता है। यह अंक प्रश्न में भी फल शुभ है।

25. इससे प्रकट होता है कि अनुभव द्वारा शक्ति एकत्रित होगी और दूसरों की गति विधियाँ देखने से लाभ होगा। प्रारम्भिक जीवन में बहुत संघर्ष और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तब कहीं जाकर सफलता प्राप्त होती है। भविष्य विषयक प्रश्न में इसका परिणाम शुभ है।

26 दूसरों के संयोग या सहयोग से भारी विपत्ति तथा आशंका प्रकट होती है। दूसरों की सलाह, संयोग, साझेदारी, विवाह तथा सट्टे आदि से घाटा या भारी नुकसान होने का अन्देशा जाहिर होता है।

27. इससे हुकूमत तथा उच्चाधिकारिता प्रकट होती है। बुद्धि चातुर्य के फलस्वरूप अच्छे परिणाम निकल सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों को अपने स्वयं के विचारों को कार्यान्वित करना चाहिये। भविष्य प्रश्न में यह संख्या बहुत शुभ फल सूचित करती है।

28. इस संख्या से दो विरूद्ध दशा में जाने वाली शक्तियाँ सूचित होती हैं। ऐसे व्यक्तियों

को अपने कार्य से बहुत प्राप्ति तथा सफलता की आशा होती है। परन्तु यदि यह सावधानी न बरतें तो उनके पल्ले कुछ नहीं पड़ता। दूसरों में अन्धविश्वास रखने से, व्यापार में प्रतियोगियों के विरोध से, अदालत, मुकदमें या कानूनी कार्यवाही के फल स्वरूप घाटे की संभावना रहती है। भविष्य विषयक प्रश्न में इस संख्या से शुभ परिणाम प्रकट नहीं होता।

29. इस अंक से अस्थिरता या अनिश्चित स्थिति प्रकट होती है। ऐसे व्यक्ति के मित्र विश्वास के योग्य नहीं होते और उनके कारण उसे अचानक, धोखा, भय, कष्ट और हानि की संभावना बनी रहती है। इस अंक वाले पुरुषों को स्त्रियों से और पुरुषों से धोखा या कष्ट उठाना पड़ता है।

30. ऐसे व्यक्ति अत्यन्त बुद्धिमान तथा प्रतिभा सम्पन्न होते हैं और आर्थिक संचय की और विशेष ध्यान न देकर विद्या संचय की ओर चित्त वृत्ति तथा बुद्धि को लगाते हैं। इस कारण इस अंक को न शुभ कह सकते हैं न अशुभ।

31. इस संख्या का भी प्रायः वही फल है जो 30 का है। बल्कि इस संख्या वाला व्यक्ति और भी एकाकी और अर्न्तमुखी वृत्ति वाला, सबसे दूर और अलग रहने की प्रवृत्ति के कारण सांसारिक सफलता से हीन ही रहता है। इस कारण यह संख्या शुभ नहीं है।

32 इस अंक में भी वह चमत्कार है जो 5 या 14 की संख्या में है। इसे बहुत व्यक्तियों या राष्ट्रों का समुच्चय या समुदाय इंगित होता है। इस संख्या वाला व्यक्ति अपने इरादों को स्वयं कार्यान्वित करे तो उसे सफलता मिलेगी। परन्तु यदि वह अन्य व्यक्तियों की जिद या मूर्खता पूर्ण सलाह को मान्यता देगा तो सफलता प्राप्त नहीं होगी। भविष्य विषयक प्रश्न में यह संख्या शुभ है।

33 इस संख्या की अपनी कोई विशेष शक्ति नहीं है। इसका प्रभाव 24 की संख्या जैसा है।

34 इसका प्रभाव 25 की संख्या जैसा है।

35 ʻʻ 26 ʻʻ

36 ʻʻ 27 ʻʻ

37 यह विशेष शक्ति सम्पन्न संख्या है। ऐसे व्यक्ति को प्रेम तथा मित्रता दोनों में भाग्योदय प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्ति किसी की साझेदारी में काम करें तो उन्हें उसमें भी लाभ होता है।

38 इस संख्या का प्रभाव 29 के समान है।

39 ʼʼ 30 ʼʼ

40 ʼʼ 31 ʼʼ

41 ʼʼ 32 ʼʼ

42 ʼʼ 24 के सदृश है।

43 यह अशुभ संख्या है। असफलता, बाधा, लड़ाई, झगड़ा, गड़ बड़ क्रांति आदि अशुभ परिणाम होते हैं।

44 इसका प्रभाव 26 के समान है।

45 ʼʼ 27 ʼʼ

46 ʼʼ 37 ʼʼ

47 ʼʼ 29 ʼʼ

48 ʼʼ 30 ʼʼ

49 ʼʼ 31 ʼʼ

50 ʼʼ 32 ʼʼ

51. इस संख्या में बहुत शक्ति है। इससे साहस तथा विजय का संकेत मिलता है। ऐसे व्यक्ति जो भी कार्य करें उसे सफलता प्राप्त होती है। सैनिक के लिये यह विशेष शुभ है। नेताओं के लिये भी सफलता सूचक है। किन्तु इस संख्या वाले के बहुत से शत्रु भी होते हैं। उनसे भय तथा शारिरिक कष्ट की भी आशंका रहती है।

52. इसका फल 43 के समान है।

53 इस अंक वाला व्यक्ति गुप्तचर का कार्य अच्छा कर सकता है। सैनिक नेतृत्व में भी सफलता प्राप्त होती है। यह अंक उन्नति सूचक है।

54 इस अंक वाले व्यक्ति को बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। वह वाग्मी, धनवान, तथा

विद्वान होता है। परन्तु उसके लंगड़े होने की संभावना रहती है।

55. यह नेतृत्व का अंक है। ऐसा व्यक्ति प्रखर बुद्धि का तथा धार्मिक विचार का होता है और अन्य जनों का नेतृत्व करता है।

56. यह अंक शुभ तथा अशुभ दोनों है। ऐसा व्यक्ति सौभाग्यशाली होता है तथा दूसरों पर हुकूमत करने की चेष्टा करता है। परन्तु कई बार उसकी आकांक्षाएँ निम्न प्रकार की होती हैं। वह घबराया हुआ तथा बैचेन सा रहता है। इसे आत्म संयम का उपयोग करना चाहिये।

57. यह अंक कार्य व्यवसाय में सफलता का सूचक है। ऐसा व्यक्ति खुश मिजाज व क्रियाशील होता है।

58. इस अंक वाले व्यक्ति अच्छे चिकित्सक हो सकते हैं। यह लोग स्पष्ट व्यवहार करने वाले होते हैं और दूसरों से स्नेह करते हैं।

59. इस अंक वाले व्यक्ति की भय और विपत्तियों से सदैव रक्षा होती रहती है। ऐसा व्यक्ति बहुत प्रकार के व्यवसाय करता है और यात्रा भी बहुत करता है। जल यात्रा विशेष सफलता की द्योतक है। यदि बैंक या दलाली का काम करे तो भी पूर्ण सफल होता है। ऐसे व्यक्ति में थोड़ी बेईमानी की प्रवृत्ति भी होती है। ऐसा व्यक्ति प्रायः विजय प्राप्त करता है और दीर्घजीवी होता है। दोष यही है कि इसकी सट्टे और बेईमानी की ओर प्रवृत्ति होती है।

60 इस अंक वाला व्यक्ति खुश मिजाज होता है और उसे डाक्टर, कम्पाउण्डर, नर्स आदि के कार्य में सफलता प्राप्त होती है।

61 इस अंक वाला व्यक्ति यात्रा का शौकीन शान्ति प्रिय तथा आत्म संयमी होता है।

62 इसका प्रभाव 53 अंक के समान है।

63 इस अंक वाले व्यक्ति स्वस्थ, दुसरों की उन्नति चाहने वाले तथा उपकार के कार्य करने वाले होते हैं। प्राचीन सामाजिक प्रथाओं के संशोधनों की ओर इनका विशेष ध्यान रहता है। व्यापार में भी सफल होते हैं किन्तु फिजूलखर्च भी होते हैं।

64 इस अंक वाले व्यक्ति को व्यापार की अपेक्षा नौकरी या अपना पेशा जैसे डाक्टर वकालत आदि विशेष लाभप्रद होती है। साहित्यिक प्रवृत्ति भी होती है। वैवाहिक जीवन के बन्धन से अरूचि होती है।

65 इस अंक वाले व्यक्ति को बड़े मनुष्यों का आश्रय प्राप्त होता है। वैवाहिक जीवन भी

सुखमय होता है, किन्तु चोट लगने या दुर्घटना की आशंका भी होती है।

66 इसका प्रभाव 57 के समान है।

67 " 58 "

68 " 59 "

69 इस अंक से सम्मान, प्रतिष्ठा, सौभाग्य तथा कीर्ति सूचित होती है।

70 यह सौभाग्य सूचक अंक है। परन्तु बहुत शक्तिशाली नहीं है।

ऊपर जो अंकों का विवरण दिया गया है वह कीरो के मत से है और यही मत चाल्डियन भी कहलाता है।

अंकों द्वारा नामांक बनाना

संसार में नाम नहीं तो कुछ भी नहीं। मनुष्य का सही नाम ही गगन चुम्बी होता है। सही फलदायी नाम से ही मनुष्य देश–विदेश में प्रसिद्धि पाता है। अतः हमेशा ऐसे नाम का चुनाव करना चाहिए जो व्यक्ति को समाज में यश, कीर्ति तथा प्रतिष्ठा प्रदान करे और सदियों तक समाज में आदर के साथ याद किया जाए। व्यक्ति का नाम उसके भाग्य व प्रतिष्ठा को बढ़ाने में कितना साथ दे रहा है निम्न गणना से जान सकते हैं एवं नाम को ठीक कर अपने भाग्य की वृद्धि कर सकते हैं।

नाम की गणना व्यक्ति के ऐसे नाम से करना चाहिए जिसे सुनकर वह सोते में से भी उठ जाय। अक्सर व्यक्ति के कई नाम प्रचलन में रहते हैं। जैसे घर में उसे मुन्ना पुकारा जाता है। स्कूल में मुन्नालाल और ऑफिस में मुन्नालाल शर्मा या एम. एल. शर्मा अथवा शर्माजी आदि। तब प्रश्न उत्पन्न होता है कि कोनसे नाम को अंक विद्या के फलादेश हेतु लेना उचित रहेगा। इस संबंध में अनुभव में आया है कि या तो वह नाम लिया जाये जो समाज में सर्वाधिक प्रचलित हो अथवा वह नाम जिसे सुनकर व्यक्ति तुरन्त आपकी ओर मुखातिब हो जाये। यहाँ हम अंग्रेजी अक्षरों के द्वारा नामांक बनाने की विधि प्रस्तुत कर रहे हैं। अंग्रेजी भाषा के अक्षरों को अंकों में परिवर्तित करने की सारिणी निम्न है।

A B C D E F G H I J K L M
1 2 3 4 5 8 3 5 1 1 2 3 4

N O P Q R S T U V W X Y Z
5 7 8 1 2 3 4 6 6 6 5 1 7

उपरोक्त तालिका के अनुसार हम मुन्ना लाल शर्मा के नाम को अंग्रेजी अक्षरों में परिवर्तित करके निम्नानुसार नामांक बनाएंगे।

M U N N A   L A L   S H A R M A
4 6 5 5 1   3 1 3   3 5 1 2 4 1 = 44=4+4=8

मुन्ना लाल शर्मा के नाम का कुल योग 44 आता है। 44 को जब हम एक ईकाई तक लाते हैं तो इनका नामांक 8 होता है। अंक 8 का स्वामी शनि होने से इनके नाम पर शनि का विशेष प्रभाव दृष्टिगोचर होगा। साथ ही अंक 4 के स्वामी हर्शल का प्रभाव भी रहेगा।

अब मानलो इनको अपना नाम 9 अंक का करना है तो 1 अंक बढ़ना होगा जोकि निम्नानुसार बढ़ेगा।

L A L   L AA L

3 1 3   3 1 1 3

इसी प्रकार नाम के अक्षरों में थोड़ा परिवर्तन कर नाम में प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं।

6. अंक कुण्डली

जिस प्रकार ज्योतिष शास्त्र में जन्म कुंडली, राशि कुंडली आदि बनाई जाती हैं उसी प्रकार अंक ज्योतिष के सिद्धांतो के अनुसार अंक कुंडली बनाई जाती है। ज्योतिष की कुंडली, जन्म, समय, तारीख, मास सन् के अनुसार बनाई जाती है। उसमें 12 खाने बारह राशियों के होते हैं और प्रत्येक खाने में राशि की संख्या दी जाती है। उसमें ग्रहों को उनकी राशि के अनुसार स्थापित किया जाता है। अंक कुंड़ली भी जन्म, समय, तारीख, मास सन् के अनुसार बनाई जाती है। लेकिन इसमें 12 के स्थान पर केवल 9 खाने होते हैं और इनमें राशियों की संख्या के स्थान पर ग्रहों के अंक लिखे जाते हैं।

अंक ज्योतिष के 9 अंको को तीन भागों में विभाजित किया गया है। जिन्हें हम शरीर सम्बन्धी, मन सम्बन्धी तथा आत्मा सम्बन्धी कहते हैं। शारीरिक, मानसिक और आत्मिक। पंचदशी तंत्र में 15 के यंत्र का बहुत महत्व है। 15 के यंत्र में नौ खानों में 9 अंक इस प्रकार लिखे जाते हैं कि उनका जोड़ हर तरफ से ऊपर नीचे बायें दायें आड़े तिरछे 15 ही होता है।

पंचदशी यंत्र

6	1	8
7	5	3
2	9	4

इन नौ अंको के 1, 3, 9 के अंक आत्मा से सम्बन्ध रखते हैं। 1 का स्वामी सूर्य, 3 का बृहस्पति और 9 का स्वामी मंगल है। सूर्य से व्यक्ति या समष्टि की आत्म शक्ति का ज्ञान होता है, मंगल से स्वतंत्र भावना का तथा गुरू से सृष्टि, फेलाव, आत्मा के प्रसार व विस्तार तथा शनि ग्रह है। चन्द्रमा के दो अंक होते है 2 व 7 सूर्य के भी दो अंक हैं 1 व 4 शनि का अंक 8 है। भौतिक जगत में शरीर को जीवनी शक्ति सूर्य से प्राप्त होती है। मन की विचार शक्ति चन्द्रमा से प्राप्त होती है। और शरीर को क्षय करने वाली शक्तियाँ शनि से प्राप्त होती हैं। इन नौ अंको को नीचे दी गई सारिणी के अनुसार क्रम से स्थापित किया

जाता है और इनके क्रम व स्थान निश्चित हैं। इन अंको में सबसे नीचे का धरातल भौतिक, बीच का मानसिक एवं तीसरा सबसे ऊपर का आत्मिक है।

3 गुरू	1 सूर्य	9 मंगल
6 शुक्र	7 चन्द्र	5 बुध
2 चन्द	8 शनि	4 सूर्य

अंक कुंडली जिस तरह से बनाई जाती है और फल कथन किया जाता है, वह महात्मा गांधी की कुंडली का उदाहरण देकर समझाया जा रहा है। इनकी जन्म तारीख 2.10.1869 है।

अंक कुंडली में सन् के वर्षो को नहीं लेते। अतः इनकी तारीख रहेगी 2.10.69 जिसे कुंडली में निम्नानुसार स्थापित किया जाएगा।

	1	9
6		
2		

अंक कुंडली में प्रत्येक अंक अपने सामने वाले अंक से या ऊपर नीचे वाले अंक से योग करता है। इसके अनुसार यहाँ 1 अर्थात सूर्य का 9 से या मंगल से योग हो रहा है तथा 6 का 2 से योग जो शुक्र का चन्द्र से योग कहलाएगा। अतः इनके अन्दर सूर्य मंगल शुक्र एवं चन्द्र के गुण अवगुण अधिक मात्रा में रहेंगे। कभी कभी एक अंक दो बार आ जाता है उस समय जो अंक दो बार आता है उसके आगे 2 का अंक बना देते हैं। जैसे निम्न अंक कुंडली सरदार वल्लभ भाई पटेल की है। इनका जन्म दिनांक 31.10.1875 है अंक कुंडली हेतु 31.10.75 रहेगा।

3	1,1	
	7	5

उपरोक्त कुंडली में 1 अंक दो बार आने से दो बार दर्शाया गया है। इसमें गुरू एवं सूर्य का योग, सूर्य एवं नेपच्यून का योग तथा नेपच्यन एवं बुध का योग दिखाई दे रहा है। अंक कुंडली का फल कथन करने के पूर्व ग्रहों के प्रभाव, गुण अवगुणों का वर्णन दे रहे हैं। जो फलादेश में काम आएगा।

सूर्य

सूर्य आत्मस्वरूप है यह ग्रहों का राजा है तथा इसकी किरणों से ही अन्य ग्रह प्रकाशित होते हैं। सूर्य बलवान हो तो राजा के समान पद्वी, महत्वाकांक्षा, अधिकार की भावना, स्वाभिमान, हुकूमत करना, अपनी शक्ति सामर्थ्य से प्रगति करना, अपने पर भरोसा रखना इस प्रकार का स्वभाव बनाता है। शूरवीर, चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजसी ठाटबाट पसन्द करने वाला, स्पष्टवक्ता, गम्भीर यशस्वी परोपकारी उदार हृदय विरोधी को परास्त करने वाला, सत्य आचरण करने वाला जातक होता है। अंक कुंडली में सूर्य का अंक आने पर उपरोक्त सामान्य फल और सूर्य का अंक एक से अधिक बार आने पर उपरोक्त फल अधिक मात्रा में होते हैं। यदि सूर्य का अंक न हो तो सूर्य के गुण नहीं होते। सूर्य का अंक 1 है। इसका पूरक अंक 8 शनि का अंक है। शनि सूर्य के गुणों व उत्तम प्रभावों को नष्ट करने वाला है। यदि सूर्य का अंक 1 न हो और 8 का अंक कुंडली में हो तो सूर्य के उपरोक्त गुण नहीं होते। आत्मशक्ति, स्वाभिमान, वीरता उदारता आदि के विपरीत आत्मबल हीनता स्वार्थपरता भीरुता आ जाती है।

सूर्य चन्द्र का योग 1+2 या 4+2 उत्तम राजयोग कारक है। राजसी ठाट बाट, अधिकार पदवी देता है। सूर्य गुरू योग 1+3 या 4+3 विद्वता तथा श्रेष्ठता, प्रतिष्ठा, मान सम्मान, यश की वृद्धि करता है। सूर्य व बुध का योग 1+5 या 4+5 विद्या बुद्धि बढ़ाने वाला, सूर्य शुक्र का योग 1+6 या 4+6 कला, साहित्य यांत्रिक कलाओं का ज्ञान देता है। सूर्य मंगल योग 1+9 या 4+9 उष्ण प्रकृति तेजस्वी साहसी अग्नि क्रिया सम्बन्धी कार्य, साहसिक कार्यो में सफलता देता है।

चन्द्रमा

चन्द्रमा मन का स्वामी है। कुंडली में चन्द्रमा के अंक आते हैं तो राज्य के उच्च अधिकारियों की कृपा प्राप्त होती है। सम्पत्ति, धन धान्य से जातक सुखी रहता है। दयालु हृदय, सत्यवक्ता, धर्म में विश्वास रखने वाला, व्यापार में रूचि, व्यवहार कुशल बुद्धिमान होता है। सफेद रंग के पदार्थ वस्त्र भूषण, भोज्य पदार्थो से प्रेम करने वाला, चंचल प्रकृति आराम तलब, सौन्दर्य प्रेमी, विषयी, कल्पना शक्ति अच्छी होती है। चन्द्रमा बलवान न हो तो उच्छृंखल स्वभाव, विषयी स्त्रियों के पीछे भागने वाला, अनियमित आहार विहार वाला, अविश्वासी, धन का गोल माल करने वाला, अस्थिर चित्त का होता है। कभी कभी दम्भी, पाखंडी बढ़ चढ़ कर बातें करने वाला, बुराई करना, चुगली करना, बदले की भावना रखना यह भी होता है। चन्द्र मंगल योग साहसिक कार्यो में लक्ष्मी देता है। परन्तु रोग भी देता है। चन्द्र बुध का योग बुद्धिमता व उत्तम वक्ता, लेखन शक्ति देता है। चन्द्र गुरू का योग महत्वपूर्ण पदवी, उच्च अधिकार संस्था का स्थापक, स्वामी बनाता है। शिक्षक गुरू, आध्यात्मवादी, कीर्तिवान, सम्पत्तिशाली ज्ञानवान बनाता है। चन्द्र शुक्र योग कामशक्ति को बढ़ाता है। सुन्दर रूप विलास प्रिय शान शौकत का प्रेमी, सौन्दर्य प्रेमी तथा ललित कलाओं का ज्ञाता बनाता है। चन्द्र शनि का योग खराब होता है। दुख दरिद्रता मूर्खता व्यसन रोग का देने वाला है।

मंगल

मंगल बल, पौरूष, साहस का प्रतीक है। मंगल बलवान हो तो शक्ति, सामर्थ्य, भूमि, सम्पत्ति, कृषि कार्य से लाभ, धैर्य आदि गुण देता है। सेना पुलिस आदि में उच्च पद, पराक्रम वृद्धि, लाल रंग की वस्तुओं से लाभ देने वाला है। साहसिक कामों में सफलता देता है। अग्नि भट्‌टी आदि के काम से भी लाभ कराता है। तमोगुण, क्रोध उतावलापन, तेजी देता है। तरूण, तेजस्वी, उदार हृदय, वीर, बलवान, विजय प्राप्त करने वाला, खुला साफ व्यवहार करने वाला, निष्कपट मित्रता रखने वाला, सुधारवादी, युद्ध विशारद, आत्मनिष्ठ अपने में ही खुश रहने वाला होता है। रसायन शास्त्री, डाक्टर, सर्जन, सेनापति आदि बनाता है। मंगल निर्बल हो तो क्रोधी, आलसी दूसरों को धोखा देने वाला, मूर्ख, हठी, दुःसाहसी, क्रूर स्वभाव झगड़ालू प्रकृति, हठी, सनकी, दूसरों को लड़ाकर अपना स्वार्थ साधन करने वाला, उडाऊ–खाऊ बेफिक्र, धर्म पर अश्रद्धा रखने वाला बनाता है। आचार भृष्ट क्रूरकर्मी करता है। निर्बल मंगल शनि का योग भयंकर दुर्घटना कारक है। चोट, घाव, रोग देता है। धन संग्रह में बाधा, दरिद्रता, धनहीनता, यहाँ तक कि दिवाला निकल सकता है। अकाल, मृत्यु,

भयंकर व्याधियाँ देता है। धन व कुटुम्ब का नाश कर्ता, कर्जा बढ़ाने वाला, भाईयो से विरोध करने वाला, स्त्री संतान माता पिता, मित्रों से विरोध करने वाला, मानहानि, दण्ड, बन्धन, राज कोप की आशंका रहती है। कपटी धूर्त जादूगर बनाता है।

मंगल बुध का योग साहसिक व्यापार कर्म से लाभ देता है। बुद्धि व साहस के योग से धनवान, साहसी, स्पष्ट वक्ता, वैद्य डाक्टर इन्जीनियर या शिल्पज्ञ बनाता है। मंगल गुरू का योग उत्तम गणितज्ञ, शिल्पज्ञ, विद्वान, गान वाद्य प्रिय, ज्योतिष खगोल शास्त्री बनाता है। मंगल शुक्र का योग व्यापार कुशल, धातु संशोधक योगाभ्यासी, कर्तव्य परायण, विमान चालक, दु:साहस के कार्य करने वाला बनाता है। मंगल सूर्य, मंगल चन्द्र के योगों का फल सूर्य चन्द्रमा के फलों में लिखा जा चुका है।

बुध

यह वाणी का स्वामी है। ग्रहों के राजकीय परिवार में जहां सूर्य व चन्द्रमा को राजा व रानी की पदवी प्राप्त है। मंगल सेनापति है वहीं बुध युवराज या राजकुमार है। चिकित्सा शास्त्र, गणित विद्या, लेखन कला, शिल्पकला, वकालत वाणिज्य व्यवसाय का कारक है। यह शुभ ग्रह है। परन्तु क्रूर ग्रहों के साथ रहने से क्रूर भी हो जाता है। प्रसन्न चित्त, मजाकिया प्रकृति, उत्तमवक्ता बातूनी दिल्लगीबाज, वाकपटु नई नई स्कीमें बनाने वाला, अपने भेदों को गुप्त रखने वाला, बुद्धिमान विद्वान होता है। हस्त कला कौशल वैद्य शास्त्र का ज्ञाता होता है। सूर्य के साथ योग होने से अच्छी विद्या बुद्धि, व वणिक बुद्धि का प्रभाव देता है। अन्य ग्रहों में जिस ग्रह के साथ रहता है, उसी के गुणों के समान फल देता है। मंगल के साथ व्यर्थ की बातें करना झूठ बोलने की प्रवृत्ति होती है। बृहस्पति के साथ हो तो विद्वान, काव्य रचना ग्रन्थ रचना, आध्यात्म ज्ञान देता है। शुक्र के साथ ललित कला, यन्त्र रचना, इन्जीनियरी कला कौशल शिल्पकला का ज्ञान देता है। शनि के साथ हो तो कम बोलने वाला गम्भीर स्वभाव का होता है।

बृहस्पति

बृहस्पति देवताओं एवं ग्रहों के आर्चाय तथा गुरू हैं। इसीलिए इनका दूसरा नाम गुरू है। ये बुद्धिमान मन्त्री, सलाहकार पुरोहित हैं। यह जातक को दानी, उदार सच्चरित्र, ज्ञानी वेदान्ती शान्त स्वभाव, विद्वान सत्य आचरण करने वाला, परोपकारी, सामाजिक कार्यकर्ता, राज्य में उच्च पद प्रतिष्ठा प्राप्त अधिकारी, कोमल हृदय, मुदृवाणी वाला बनाता है। इसके प्रभाव से व्यक्ति सत्य व न्याय का प्रेमी, सहन शील, दोनों का सहायक, ईश्वर भक्त, अच्छी

सलाह देने वाला तथा दीनों का हितकारी होता है। ज्ञान, सुख सम्पत्ति, चतुराई, परमार्थ, तीर्थ, योगमार्ग दीर्घायु देता है।

सूर्य के साथ हो तो महत्वाकांक्षा तथा अधिकार भावना की वृद्धि करता है। राजमान्य ज्ञानवान बनाता है। चन्द्रमा के साथ बहुत शुभ होता है। विद्या, कीर्ति, यश, पराक्रम योगविद्या, धार्मिकता, धन वैभव अधिकार देता है। मंगल के साथ हो तो गणितज्ञ, शिल्पज्ञ, विद्वान तथा गान वाद्य प्रिय बनाता है। बुध गुरू योग उत्तम वक्ता, पंडित सभा चतुर, प्रख्यात कवि और संशोधक होता है। शुक्र गुरू योग सुखी, बलवान, चतुर, नीतिवान और भोगी बनाता है। शनि गुरू योग लोकमान्य, कार्यदक्ष, धनी, यशस्वी तथा कीर्तिवान बनाता है।

शुक्र

यह काम चेष्टा, प्रजनन शक्ति, सौन्दर्य, ललित कलाओं का स्वामी है। सुन्दर शरीर, विशाल नेत्र काले घुंघराले बाल, संगीत, काव्य गायन, वादन प्रिय, सफाई पसन्द, सुरूचि वाला, विनयी, मिलनसार, उदार हृदय, यशस्वी बनाता है। कला कौशल, नाटक अभिनय, यन्त्र विद्या, चित्रकला में रूचि देता है। सूर्य के साथ हो तो चित्रकार, कलाकार, नेत्र रोगी, विलासी, कामुक, अविचारी होता है। चन्द्रमा के साथ बलवान होकर व्यापारी, धनवान, सुखी व भोगी बनाता है। मंगल के साथ हो तो व्यापार कुशल, धातुओं का कार्य करने वाला, योगी, कार्य परायण, तेज वाहन चलाने वाला, गतिशील, अनेक स्त्रियों का उपभोग करने वाला होता है। बुध के साथ विद्या, बुद्धिमत्ता साहस आदि देता है। मुंशी, लेखक, विलासी, सुखी राजमान्य, राज अधिकारी, शासक बनाता है। गुरू के साथ भी सुखी बलवान, चतुर, नीतिवान तथा विद्वान बनाता है। शुक्र शनि का योग नीच मनोवृत्ति का सूचक है। पाखण्डी दम्भी स्वार्थी बनाता है।

शनि

श्याम वर्ण, तमोगुणी प्रकृति, पश्चिम दिशा का स्वामी आलसी, वक्र दृष्टि वाला, ऊँचा कद बड़े दांत, रूखे केश उभरी नसों वाला, दुबला पतला, मूर्ख लालची क्रोधी धूर्त, दुष्ट बुद्धि, मन्द बुद्धि, दुर्बल मन वाला, विश्वास घाती, मलिन बुद्धि, भाई बन्धुओं से कलह करने वाला बनाता है। दूसरों के दोष देखने वाला, कुतर्क करना, पर धन, पर स्त्री हरण करना, चुभने वाली बात करना, आन्दोलन करना आदि स्वभाव होता है। बात को मन में रखना, भेदों को छुपाना दीर्घायु कारक है। गम्भीर उदासीन होने से संसार त्यागी, बैरागी नैराश्य में आत्महत्या करने की, संसार छोड़ने की प्रवृत्ति भी इस ग्रह से पैदा होती है।

चन्द्र शनि का योग शक्तिहीन धनहीन, मूर्ख, कपटी, धोखेबाज घातक होता है। शनि मंगल योग धूर्त जादूगर, ढ़ोंगी अविश्वासी बनाता है। शनि बुध योग कुछ उत्तम है। धनार्जन कराता है, कंजूस बनाता है। कवि, वक्ता, सभापंडित, व्याख्याता, कलाकार, गम्भीर विषयों का ज्ञाता बनाता है। गुरू शनि का योग लोकमान्य प्रसिद्धि, कार्य दक्षता धन मान, प्रतिष्ठा देता है। शनि शुक्र का योग पराई स्त्री, धन पर लोलुप दृष्टि, नीच विचारों को बढ़ाता है।

जीवन की घटनाओं के बारे में अंक ज्योतिष से किस प्रकार जाना जाता है, यह आगे बताया गया है। साथ ही अंक कुंड़ली के योग दिए गए हैं, जिनका फल उपरोक्त ग्रह फलों से मिलान करें।

अंक ज्योतिष के प्रमाण

अंक ज्योतिष की प्रमाणिकता हेतु कुछ महा पुरुषों के जीवन की घटनाओं का विवेचन दिया जा रहा है। इससे आप सभी ज्योतिष के विद्यार्थियों को इसकी सार्थकता नजर आ जाएगी।

महात्मा गांधी

	1	9
6		
2		

जन्म तारीख 2-10-1869
मूलांक 2 संयुक्तांक 9 नामांक 3
अंक कुंडली के योगः चन्द्र शुक्र योग, सूर्य मंगल योग

अंक कुंडली में सूर्य मंगल का योग साहसिक कार्यो में सफलता देता है। भारत की स्वतंत्रता के लिए किया गया कार्य बहुत ही साहसिक था। चन्द्र शुक्र के योग ने सुन्दर रूप एवं ललित कलाओं का ज्ञान दिया।

मूलांक 2 वाले जातक शील स्वभाव, कोमल, दयालु, परोपकारी, कल्पनाशील, सृजन

शक्ति के धनी, प्रबल मानसिक शक्ति, आत्मबल, अनुशासन प्रिय, देशसेवा, समाजसेवा, के कार्यो में रूचि रखने वाले होते हैं।

श्री जयप्रकाश नारायण, श्री लालबहादुर शास्त्री, श्री मोरारजी देसाई, श्री सुमित्रानंदन पंत, इन सबका मूलांक 2 है।

संयुक्तांक 9 का अधिष्ठाता मंगल है। सुयोग्य सेना नायक, लोक नायक, राष्ट्र नायक युद्ध में विजय दिलाने वाला साहसी कभी कभी दुःसाहसी भी बनाता है।

मूलांक के मित्र अंक– 7, 9, संयुक्तांक 9 के मित्र अंक– 3, 6 हैं। मूलांक भाग्यांक के शत्रु अंक– 1, 5, 7, 8 हैं। चूंकि 7 मित्र अंक भी है इससे सम है। इस आधार पर गांधी जी के जीवन की घटनाओं का विचार करते हैं।

1887	6 मित्रांक मैट्रिक पास किया।
4.9.1888	2 संयुक्तांक का मित्र अंक, विदेश में पढने को बम्बई से प्रस्थान किया।
1893	3 मित्रांक, अफ्रीका में सार्वजनिक कार्य का शुभारंम्भ किया।
1896	6 मित्रांक, स्वदेश वापिस, बम्बई में प्रथम भाषण दिया।
1901	2 मूलांक अफ्रीका से स्वदेश वापसी।
1902	3 मित्रांक, तीसरे दर्जे में बनारस की यात्रा में जनता के सम्पर्क से नये अनुभव।
11.9.1906	मूलांक 2 संयुक्तांक 9 के प्रभाव से अफ्रीका के जोहान्सवर्ग में सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग, सत्याग्रह की शक्ति का अनुभव ब्रम्हचर्य की शक्ति का ज्ञान मिला।
6.11.1913	मित्रांक 6 ट्रान्सवाल में 2037 (3) व्यक्तियों सहित सीमा प्रवेश अहिंसक सत्याग्रह। भारत में इस शस्त्र के प्रयोग का मार्गदर्शन बना।
1914	6 मित्रांक अफ्रीकी आंदोलन की समाप्ति, विजय तथा स्वदेश वापिसी।
9.1.1915	संयुक्तांक 9 बम्बई आगमन
6.4.1919	मूलांक 6 भारत में आपके आव्हान पर अभूतपूर्व हड़ताल ?
1920	मित्रांक 3 कांग्रेस में अहिंसक लड़ाई का प्रस्ताव।
12.3.1930	मित्रांक 3 नमक सत्याग्रह का आरम्भ किया।
17.2.1931	संयुक्तांक 6 केवल धोती, गमछे में वायसराय से भेंट की।

18.2.1947 मूलांक 9 भारत स्वतन्त्र करने का प्रस्ताव हाउस ऑफ कॉमन्स में रखा गया।
15.8.47 मूलांक 6 भारत स्वतंत्र हुआ। गांधी जी का प्रयास सफल हुआ।

सम अंक 7 कभी शत्रु कभी मित्र

1897 योग 7 डरविन पहूँचे
2338 योग 7 गांधी जी कुल 2338 दिन जेल में रहे।
25.5.1915 योग 7 सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की

शत्रु अंक 5 व 8

8.4.1919 मूलांक 8 संयुक्तांक 5= पलबल स्टेशन पर बन्दी बनाए।
1922 योग 5 भारत में प्रथम जेल यात्रा।
1.2.1922 योग 8 आंदोलन तीव्र करने की घोषणा, सहस्त्रों की जेल यात्रा, दिल्ली में हिंसक घटनाये, आंदोलन वापिस लिया।
17.2.1922 मूलांक 8 चर्चिल ने गांधीजी को अंधनंगा फकीर जैसे अपमान जनक शब्द कहे।
8.8.1942 मूलांक 8 संयुक्तांक 5 भारत छोड़ो आंदोलन का आरम्भ, स्वयं की, नेताओं की तथा लाखों लोगों की जेल यात्रा
16.8.1946 संयुक्तांक 8 हिन्दू मुस्लिम दंगे, कत्ले आम, डाइरेक्ट एक्शन।
30.1.1948 संयुक्तांक 8 – देहावसान (शत्रु अंक)

N A T H U R A M   G O D S E

5 1 4 5 6 2 1 4   3 7 4 3 5 = 50 = 5+0 = 5

नाथूराम गोडसे जिसने गांधीजी की हत्या की, उसका नांमांक 5 है, जो गांधी की का शत्रु अंक है।

सरदार बल्लभभाई पटेल

अंक कुंडली

3	1,1	
	7	5

जन्म दिनांक 31.10.1875 मूलांक 4 संयुक्तांक 8 मित्र अंक 1, 2, 7 शत्रु अंक 3, 5, 6 अंक कुंडली के योग– बृहस्पति सूर्य योग, सूर्य बलवान, सूर्य चंन्द्र योग, चन्द्र बुध योग।

मूलांक 4 का अधिष्ठाता हर्षल या राहु ग्रह है। सहसा प्रगति विस्फोट आश्चर्यजनक कार्य असंम्भावित घटनायें संघर्ष करना, विजय पाना, समाज सुधारक, पुरानी प्रथा के उन्मूलक, नवीन के संस्थापक, किसी भी क्षेत्र से पुरानी पद्धति को हटाकर नयी स्थापित करना, मूलांक 4 का फल है। यह लोग मिलनसार होते हैं, धन संग्रह की अपेक्षा वाजिब खर्च करना पसंद करते हैं।

संयुक्तांक 8 का फल धीरे धीरे चरमोत्कर्ष तक पहूँचना इसका स्वभाव है। इसका स्वामी शनि मंद गति ग्रह है, मंद गति से उन्नति करता है। बाहरी दिखावा, प्रेम प्रदर्शन, पाखण्ड नहीं होता। शुष्क व कठोर समझा जाता है। यह लोग उदार, दयालु, अनुशासन में कठोर होते हैं। उच्च पद पर शासन व्यवस्था करने में सफल होते हैं। पारिवारिक जीवन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

सरदार बल्लभभाई पटेल ने जिस सूझबूझ से देसी रियासतों के विलीनीकरण का जो कार्य किया वह आश्चर्य जनक और असंभव सा प्रतीत होता था। इतने दृढ़ हृदय वाले थे कि पत्नि के देहान्त का समाचार सुनकर भी मुकदमे की पैरवी समाप्त करके ही न्यायालय छोड़ा। अन्यथा उस हत्या के केस में विजय मिलना असंभव था। अपनी पत्नि का अंतिम दर्शन भी नहीं कर सके, कर्तव्य पर स्नेह का बलिदान कर दिया। उनको इसी कारण लौहपुरूष व सरदार की उपाधियां मिली हुई थीं।

जीवन की मुख्य घटनाओं पर अंको का प्रभाव

1897 योग 7 मित्रांक हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की।
1897 योग 7 मित्रांक मुख्तारी आरंभ की।
1900 योग 1 मूलांक पुत्री मणिवेन का जन्म।
28.11.1905 योग 1 मित्रांक पुत्र डाहियाभाई का जन्म।
11.1.1909 मूलांक 2 संयुक्तांक 4 योग 6 शत्रु अंक पत्नी का स्वर्गवास।
1910 योग 2 मित्रांक बैरिस्टरी की पढ़ाई के लिए इंग्लैण्ड गये।
13.3.1913 मूलांक 4 बैरिस्टरी पास कर बम्बई पहुंचे।
1916 योग 8 संयुक्तांक गांधी जी से प्रथम सम्पर्क हुआ।
11.7.1920 मूलांक 2 मित्र अंक गुजरात विद्यापीठ की स्थापना का संकल्प लिया।
1921 योग 4 मूलांक है गुजरात प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के प्रथम अध्यक्ष चुने गये।
1924 योग 7 मित्रांक अहमदाबाद नगर पालिका के अध्यक्ष चुने गये।
1927 योग 1 मित्रांक अहमदाबाद नगर पालिका के दूसरी बार अध्यक्ष चुने गये।
29.2.1928 मूलांक 2 मित्र अंक बारडोली में करबन्दी सत्याग्रह आरंभ किया।
नबम्बर 1928 योग 2 मित्रांक नवम्बर मास 11 का योग भी 2 मित्र अंक बार डोली सत्याग्रह में पूर्ण सफलता प्राप्त की। इसी वर्ष कलकत्ता कांग्रेस में आपका अभूतपूर्व सम्मान किया गया।
26.5.1930 मूलांक 8 कांग्रेस के स्थानापन्न अध्यक्ष बने।
25.1.1931 योग 4 जेल से मुक्ति हुई।
22.3.1935 मूलांक 4 बोरसद में प्लेग निवारण कार्य आरंम्भ किया।
8.4.1936 मूलांक 8 कमला नेहरू अस्पताल के लिये दान देने की अपील की।
2.7.1938 मूलांक 2 पुनर्गठित कांग्रेस पारलियामेंटरी बोर्ड के अध्यक्ष चुने गये तथा कांग्रेस चुनाव संघर्ष का संचालन किया
18.11.1940 योग 7 अहमदाबाद में व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय योगदान।
20.8.1941 योग 2 व 7 बीमारी के कारण जेल से रिहाई।
1942 योग 7 मास अप्रेल 4 कांग्रेस कार्य समिति में अंग्रेजो भारत छोडो प्रस्ताव प्रथम बार उपस्थित किया।

15.6.1945	योग 4 जेल से रिहाई वायसराय की शिमला कांफ्रेन्स में भाग लिया।
2.9.1946	योग 2 व 4 भारत की अंतरिम सरकार में गृह सदस्य बने।
9.9.1946	योग 2 भारतीय संविधान परिषद में प्रथम बार भाग लिया।
4.4.1947	मूलांक 4 बल्लभ विद्या नगर में विट्ठलभाई महाविद्यालय का उद्घाटन किया।
15.8.1947	योग 8 भारत के उप प्रधान मंत्री बने।
25.8.1947	मूलांक 7 रियासतों का विभाग आपको सौंपा गया
13.12.1947	13 का योग 4 वी.पी.मेनन के साथ कटक गये और वहां की रियासतों का विलीनीकरण सम्पन्न किया। 562 योग 4 आपने कुल 562 रियासतों का भारत में विलीनीकरण किया।
14.11.1947	योग 1 बिहार के नीलगिरी राज्य पर अधिकार करने की आज्ञा दी।
13.9.1947	13 का योग 4 आपकी आज्ञा से हैदराबाद पर अधिकार करने का अभियान।
17.9.1947	17 योग 8 हैदराबाद पर पूर्ण अधिकार हुआ।
31.10.1947	31 योग 4 74 वें जन्मदिन पर बम्बई में 800 (योग 8) तोले चांदी की मूर्ति रत्न जड़ित स्वर्ण का अशोक स्तम्भ भेंट किया गया।
25.11.1948	योग 4 काशी हिंदू विश्वविद्यालय द्वारा 'डॉक्टर ऑफ लॉज' की उपाधि दी गई।
26.11.1948	योग 26 का 8 इलाहाबाद में पं.गोविंद बल्लभपंत के हाथों से पटेल अभिनंदन ग्रन्थ भेंट में लिया।
26.2.1949	26 योग 8 उसमानिया विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टर ऑफ लॉज की उपाधि मिली।
2.10.1949	योग 8 नेहरू जी के विदेश जाने पर स्थानापन्न प्रधानमंत्री का पद संभाला।
28.4.1950	28 योग 1 अहमदाबाद में एक लाख की थैली भेंट की गई।
19.5.1950	19 योग 1 कन्याकुमारी के मंदिर में पूजन किया।

शत्रु अंक 3, 5 व 6

1896	योग 3 झवेरवा से विवाह हुआ, शत्रु अंक से पत्नी सुख अधिक नहीं मिला।
7.3.1930	योग 5 नमक सत्याग्रह में गिरफ्तारी तथा पौने चार मास की जेल।
14.1.1934	योग 5 (14 का योग भी 5) जेल में बीमार पड़े इलाज के लिये जेल से मुक्त।

9.8.1942 योग 6 अन्य नेताओं सहित गिरफ्तारी और अहमद नगर जेल में नजर बंदी लम्बी जेल यात्रा।

12.12.1950 योग 3 जलवायु परिवर्तन हेतु बम्बई जाना।

15.12.1950. योग 6 मूलांक संयुक्तांक 6 संसार से महाप्रयाण स्वर्गवास।

श्री लालबहादुर शास्त्री

अंक कुंडली

3	1,1	
	7	5

जन्म दिनांक 2.10.1904

मूलांक 2 संयुक्तांक 8। मूलांक 2 के मित्र अंक 7 व 9 शत्रु अंक 5 संयुक्तांक 8 के मित्र अंक 1 व 4 शत्रु अंक 3 व 6

मूलांक 2 का विवेचन महात्मा गांधी की अंक कुंडली में दिया जा चुका है। संयुक्तांक 8 का स्वामी शनि है। इसके प्रभाव से जातक महत्वाकांक्षी, उच्च पद प्रतिष्ठा प्राप्त करना, त्याग व बलिदान की भावना, गंभीर स्वभाव कठिन संघर्श शक्ति सादगी पसन्द सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करना, कभी कभी उदासीनता अकेलापन महसूस करना, अपने काम से काम रखना, शासन व्यवस्था अनुशासन में दृढ़ रूख अपनाना आदि गुण प्रकट होते हैं जो शास्त्रीजी में थे।

1926 योग 9 मित्रांक शास्त्री की उपाधी प्राप्त की।

9.5.1928 योग 9 सगाई (तिलक) हुई।

19.5.1928 योग 7 मित्रांक, विवाह हुआ

20.8.1942 मूलांक 2 संयुक्तांक 8 ब्रिटिश कानून तोड़कर पुलिस से घिरे होने पर भी इलाहाबाद चौक में आमसभा में प्रभावशाली भाषण दिया।

1946 योग बराबर 2 जेल से रिहाई पंत मंत्रिमंण्डल में संसदीय सचिव नियुक्त

	हुये।
1951	योग 7 मित्रांक कांग्रेस के महामंत्री बने।
1957	योग 4 संचार परिवहन मंत्री बने।
1961	योग 8 संयुक्तांक गृह मंत्री बने।
31.5.1961	मित्रांक 4 संयुक्तांक 8, आसाम का भाषायी दंगा शांत कराया।
22.1.1964	मित्रांक 4 संयुक्तांक 7 (मित्रांक) बिना विभाग के मंत्री बने।
9.6.1964	मित्रांक 9 संयुक्तांक 8 प्रधान मंत्री बने।
1.9.1965	संयुक्तांक 4 मित्रांक पाकिस्तान का आक्रमण इनके मित्रांक के दिन हुआ, इससे इनकी विजय हुई।
23.9.1965	संयुक्तांक 8 युद्ध विराम।
4.1.1966	मित्रांक 4 ताशकंद वार्ता आरम्भ।

शत्रु अंक 3, 5 व 6

14.2.1905	मूलांक 5 गंगा की धारा में नाव से गिरना परन्तु संयुक्तांक 4 मित्र अंक होने से जीवन रक्षा, दूध वाले की टोकरी में नन्हे शास्त्री जी गिरे और बच गए।
1932	योग 6 जेल में बंदी जीवन।
1956	योग 3 रेल दुर्घटना के कारण रेल मंत्री पद से त्याग पत्र दिया।
1959	योग 6 हृदय रोग का प्रथम आक्रमण।
3.1.1966	मूलांक 3 ताशकंद रवाना हुए जहां से जीवित वापिस नहीं आये।
10.1.1966	योग 6 स्वर्गवास। शास्त्री जी की मृत्यु का पता 11 तारीख को चला था, परन्तु 10 तारीख के 11 बजे के बाद कभी भी उनका स्वर्गवास हो गया होगा ऐसा माना जाता है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्न

अंक कुंडली

		9
		5
	8, 8	

जन्म दिनांक 5.9.1888। मूलांक 5 संयुक्तांक 3 मित्र अंक 6 व 9 शत्रु अंक 2, 4, 8। अंक कुंडली में शनि द्विगुणित होने से बलवान है। बुध मंगल का योग है। अंक कुंडली में शनि बलवान होने से अर्न्तमुखी प्रवृत्ति, संसार से उदासीनता, दीर्घायु योग, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, वैभव प्राप्त हुए। बुध मंगल योग से साहस, निर्भीकता देश का सर्वोच्च पद राष्ट्पति, सेना का सर्वोच्च पद, उत्तम विवेक, बुद्धि प्राप्त हुई।

मूलांक 5 का अधिष्ठाता बुध है। ऐसे जातक उत्तम वक्ता, उच्चकोटि के लेखक, मधुर व्यवहार, व्यवहार कुशल, मिलनसार, शीघ्र मैत्री करने वाले, फुर्तीले, प्रत्येक कार्य को जल्दी पूर्ण करने वाले, क्षमाशील, दयावान, अपने मधुर बर्ताव से दूसरों को मोह लेते हैं। ईमानदारी, हठ, इच्छाशक्ति, यथार्थवादिता, स्पष्टवादिता आदि गुण डॉ. राधाकृष्णन ्न में मूलांक के प्रभाव से थे।

संयुक्तांक 3 का स्वामी गुरू है। जिसके प्रभाव से आत्मबल, दार्शनिकता, ज्ञान, विवेक, बुद्धि, सात्विक प्रकृति, अध्ययन अध्यापन कार्य, भाषण, उपदेश, व्याख्यान देना, न्यायप्रियता, मान प्रतिष्ठा आदि प्राप्त हुई। अब इनके जीवन की घटनाओं पर अंको का प्रभाव देखिए–

1908 योग 9 मित्र अंक मद्रास प्रेसीडेन्सी कॉलेज में दर्शन के शिक्षक नियुक्त हुए।

1911 योग 3 एम ए की उपाधि मिली।

1920 योग 3 आपके दो विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ दर्शन शास्त्र पर अंग्रेजी में प्रकाशित हुए।

1920 योग 3 आयु इस समय 32 वर्ष थी। योग 5 जार्ज पंचम पीठ में प्रोफेसर ऑफ फिलासफी चुना गया। एक अभूतपूर्व सम्मान था।

1926 योग 9 भारतीय वेशभूषा में आक्सफोर्ड में हिंदू दर्शन पर भाषण दिया।

1929 योग 3 न्यू ऐरा पत्रिका का प्रकाशन इंग्लैंड में हिब्बर्ट व्याख्यान माला दी।

1931 योग 5 आंध्र विश्वविद्यालय के कुलपति बने।

1931 योग 5 राष्ट्रसंघ ने अन्तर्राष्ट्रीय बौद्धिक कमेटी का सदस्य बनाया।

1950 योग 6 मास्को (रूस) में भारतीय राजदूत नियुक्त हुए।

5.4.1952 मूलांक 5 रूस से विदाई। रूस के परराष्ट्रमंत्री ने प्रथम बार किसी राजदूत को विदाई पार्टी दी थी। भारत आकर उपराष्ट्रपति बने।

1956 योग 3 उपराष्ट्रपति के रूप में रूस की सदभावना यात्रा।

12.5.1962 12 का योग 3 राष्ट्रपति पद पर आसीन हुए।

12.6.1963 योग 3 इंग्लैण्ड के वकिंघम पैलेस में आर्डर ऑफ मैरिट पदक प्रदान किया गया

12.9.1964 12 योग 3 संयुक्तांक रूस यात्रा। भारत से नये मैत्री सम्बन्ध स्थापित कराये।

12.9.1965 12 योग 3 संयुक्तांक अमरीका यात्रा, राष्ट्रपति कैनेडी से भेंट। अमरीका से मैत्री संम्बन्धों में प्रगाढ़ता स्थापित की।

30.9.1965 30 योग 3 यूगोस्लाविया की सद्भावना यात्रा।

12.4.1967 12 योग 3 ऊथांट को नेहरू पुरस्कार प्रदान किया, राष्ट्रपति के रूप में अंतिम भाषण।

शत्रु अंक 2, 4, 8

20.3.1941 योग 2 कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पद से इस्तीफा।

11.5.1962 11योग 2 उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा।

1966 योग 4 पक्षाघात से पीड़ित हुये।

13.5.1967 13योग 4 राष्ट्रपति पद से सेवा निवृत हुये।

17.4.1975 17 योग 8 स्वर्गवास।

श्री जयप्रकाश नारायण

अंक कुंडली

		9
		5
	8, 8	

जन्म तारीख 11.10.1902 मूलांक 2 संयुक्तांक 6

अंक कुंडली में इसमें एक का अंक तीन बार आया है। एक सूर्य का अंक है। सूर्य परमोच्च अत्यधिक बलबान है। सबसे नीचे धरातल पर चन्द्रमा का अंक है। चन्द्रमा के गुण तथा सूर्य का सबसे अधिक प्रभाव होने से आपको सूर्य के गुण प्राप्त हुए।

मूलांक 2 का स्वामी चंन्द्रमा है। 2 मूलांक वाले व्यक्ति शीतल स्वभाव, कोमल, दयालुहृदय, परोपकारी, कल्पनाशील, सृजन शक्ति के स्वामी, चंचल, स्फुर्तिवान होते हैं। और यह सब गुण जे.पी. में थे। चन्द्रमा जिस प्रकार घटता बढ़ता रहता है उसी प्रकार उनके स्वास्थ्य में तथा मानसिक स्थिति में उत्तरोत्तर परिवर्तन आते रहे।

संयुक्तांक 6 का स्वामी शुक्र सबसे चमकीला ग्रह है। आकाश में सबसे ज्यादा चमकता है और आसानी से देखा जा सकता है। शुक्र कामदेव का भी स्वरूप माना गया है। शुक्र प्रभावी व्यक्ति सुन्दर, ललित कलाओं के प्रेमी, अनेक विद्याओं के ज्ञाता, शुक्राचार्य जैसी बुद्धि वाला होता है। श्री जे.पी. भी अपनी नीति व सिद्धांतों पर अटल रहे और रूकावटों से हताश नहीं हुए। सादगी पसंद, स्वच्छता प्रिय, साफ सुधरे वस्त्र पहनने वाले, अंध विश्वास से दूर, आडम्बर रहित, आकर्षक व्यक्तित्व के धनी, प्रभावशाली, सुशील, अनुशासन प्रिय, निर्भीक थे। यही सब गुण संयुक्तांक 6 के व्यक्ति के होते हैं वे सब उनमें पाये गए। अब उनकी जीवन की घटनाओं का अंक ज्योतिष से विवेचन करते हैं।

मूलांक 2 के 7 व 9 मित्र अंक हैं। संयुक्तांक 6 के 3 व 9 मित्र अंक हैं। इन दोनों का शत्रु अंक 8 है।

1919	योग 2 विवाह तथा मैट्रिक परीक्षा में सफलता।
16.5.1922	(16) का मूलांक 7 अध्ययन के लिये अमरीका यात्रा।
1928	योग 2 अमरीका में स्नातक की उपाधि बी.ए. पास किया।

18.5.1938	(18) का मूलांक 9 आचार्य नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता में समाजवादी पार्टी की स्थापना की।
9.11.1942	हजारीबाग जेल तोड़कर फरार हुए। फरार व्यक्ति 6 थे। जेल से आजाद हुए।
11.4.1946	मूलांक 2 जेल से रिहाई।
1946	योग 2 देश विभाजन के विरूद्ध कांग्रेस व लीग मिलकर शासन करे, ऐसा जे. पी. ने प्रस्ताव किया।
1946	योग 2 कार्यसमिति के सदस्य बने।
1946	योग 2 जमशेदपुर व राउरकेला के दंगो में मध्यस्थता की।
1969	योग 7 अहमदाबाद में दंगे शांत कराये।
1971	योग 9 माधोसिंह डकेत से प्रथम भेंट।
16.4.1942	मूलांक 7 जिला मुरैना में जे.पी. के सामने डकेतों द्वारा आत्मसमर्पण।
18.11.1974	मूलांक 9 गांधी मैदान पटना में विशाल जनसभा (2लाख जनता को सम्बोधित किया)
25.6.1975	मूलांक 7 रामलीला मैदान दिल्ली में जे.पी. की आम सभा।
12.11.1975	संयुक्तांक 9 जेल से रिहाई।
18.1.1977	मूलांक 9 संयुक्तांक 7 चुनाव घोषणा, आपातकाल समाप्त।
1950	योग 6 अहिंसक क्रांति हेतु जीवनदान सर्वोदय कार्यक्रम में विनोबाजी के साथ हुए।
1951	योग 7 लन्दन टाईम्स में जे.पी. की भेंट एवं वक्तव्य प्रकाशित।
6.9.1964	मूलांक 6 नागा विवाद समाप्त किया।
6.11.1974	मूलांक 6 बिहार बंद का सफल आयोजन।
6.3.1975	मूलांक 6 लाल किला दिल्ली से विशाल जुलूस का नेतृत्व किया।
6.2.1976	मूलांक 6 जनता पार्टी की चुनाव सभा में जनता पार्टी की विजय का सफल आव्हान किया।
24.3.1977	मूलांक 6 राजघाट पर प्रधानमंत्री मोरारजी तथा सांसदों को शपथ ग्रहण कराई।

शत्रु अंक 8

8.8.1942	महात्मा गांधी सहित जे.पी. व अन्य नेताओं की गिरफ्तारी।

17.9.1943	योग 8 दिल्ली स्टेशन पर गिरफ्तारी (लाहौर जेल में बंद हुए)
1952	योग 8 जे.पी. की समाजवादी पार्टी चुनावों में बुरी तरह पराजित।
26.6.1975	26 का योग 8 आपातकाल में गिरफ्तारी।
8.10.1079	मूलांक व संयुक्तांक दोनों ही 8 जे.पी. का स्वर्गवास।

उपरोक्त विवेचन में आपने देखा कि श्री जय प्रकाश नारायण जी के जीवन की सभी अच्छी महत्वपूर्ण घटनाओं में मूलांक संयुक्तांक तथा उनके मित्र अंकों का ही प्रभाव रहा तथा अशुभ घटनाओं में शत्रु अंक 8 का प्रभाव रहा। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में मूलांक, संयुक्तांक आदि इसी प्रकार कार्य करते हैं, उन पर ध्यान देने से शुभ अशुभ घटनाओं की अग्रिम जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है।

अन्तिम परीक्षा प्रश्न पत्र

प्रश्न–1 किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की जन्म तारीख से जीवन की घटनाओं की तारीखें जितनी ज्ञात हो सकें तो उन पर अंकों के प्रभाव का वर्णन विस्तार से समझा कर करें ?

प्रश्न–2 एक महिला जिसका जन्म 24.6.1953 को हुआ है। उसकी अंक कुंडली बनाकर मूलांक, संयुक्तांक एवं अंक कुंडली का फल कथन करें ?

7. मूक प्रश्न ज्ञान

जब कोई आपसे प्रश्न करे और कहे कि आप यह बताइये कि मैं क्या पूछना चाहता हूं ? ऐसे समय आप उससे एक कागज पर नौ अकों की संख्याएँ लिखवाएँ। शास्त्रों में यह कहा गया है कि जिनका ज्योतिष पर विश्वास नहीं है और जो इसका या ज्योतिषी का मखौल उड़ाने या परीक्षा लेने के लिए ही आये हैं या जहाँ भीड़–भाड़ और शोर शराबा हो रहा है वहाँ भविष्य कथन नहीं करना चाहिए। फिर भी मूक प्रश्न बताने का कभी अवसर पड़ ही जाय तो प्रश्नकर्त्ता से कहिए कि वह बिना रुके एक साथ कागज पर 9 अंक की संख्या लिख दे अर्थात उसके मन में जो संख्या क्रम स्वतः ही निकलता आए, सोच–सोच कर या रुककर नहीं। मान लो उसने 123456789 संख्या लिखी। इसका जोड़ 45 आया इसमें 3 जोड़ दें। आपका योग आएगा 48 जिसे नीचे दी गई 03 से 84 अंकों की सारिणी में देखें कि प्रश्न किस विषय से संबंधित है। ऊपर जो तीन जोड़े हैं यह तीन की संख्या हमेशा जोड़ी जाएगी।

अगर कोई 9 बार 000000000 लिख दे तो 3 जोड़कर भी जोड़ 3 आएगा और सबसे बड़ी संख्या तब बनेगी जब 9 बार 9 ही लिखा जायेगा यथा 999999999 बराबर 81 तब तीन जोड़ने से संख्या 84 हो जाएगी। नीचे 3 से लेकर 84 तक के अंको की संख्याओं के फल दिये जा रहे हैं। अगर किसी को लिखना न आता हो तो कहो कि 81 तक की कोई संख्या जो उसके मन में पहले आए तुरंत बता दे। उसमें 3 जोड़कर फल देखें। प्रत्येक संख्या के आगे एक से अधिक बातें लिखी मिलेंगी। ऐसी हालत में आप अपनी सहज बुद्धि से निर्णय लें कि उन दो तीन बातों में से कौन–सी बात प्रश्न कर्त्ता के लिये उपयुक्त हो सकती है, कौन सी नहीं। यदि निर्णय न कर सकें तो सभी बातें बताकर कह दीजिए कि आपके प्रश्न का विषय इनमें से ही कोई है। आपके निकाले हुए अंक के सामने जो बातें लिखी हों उनमें से कोई बात जँचती नजर न आए। जैसे कोई वृद्ध पुरुष प्रश्न कर रहा है और आपका उत्तर विवाह या पुत्र संबंधी आता है तो यह हो सकता है कि वह यह बातें अपने पुत्र या पुत्री के लिये पूछने आया हो। इस कारण प्रश्नकर्त्ता की स्थिति, आयु देखकर निर्णय करना चाहिए।

यदि फिर भी आपका उत्तर ठीक न हो और प्रश्नकर्त्ता को सन्तोष न हो तो उससे

81 तक की कोई संख्या एकदम से बोलने के लिये कहें, जो संख्या उसके मन में पहले आए वह बोल दे। जो लोग अक्सर सोचते रहते हैं और मन में उहापोह करते रहते हैं कि यह संख्या बोलें या वह संख्या बोलें। इसलिये आप उनको कह दीजिये कि जिस संख्या का स्फुरण आपके मन में सबसे पहले हो तुरन्त बोल दें। बहुधा यह देखा गया है कि आपकी इच्छा शक्ति प्रबल है तो उस समय आप जो संख्या मन में उच्चारण करेंगे वही प्रश्नकर्त्ता के मुख से निकलेगी। इस कारण आप स्वयं कोई संख्या उस समय न सोचें। वैसे आप इसका प्रयोग करके देख सकते हैं। यदि आपने प्राणायाम या राजयोग के द्वारा अपना मनोबल कुछ बढ़ा लिया है तो जो संख्या आप मन में उस समय बार बार दुहरायेंगे और मानसिक या आत्मिक दबाब डालेंगे कि प्रश्नकर्त्ता भी यह सोचे तो वह भी वही अंक बताएगा।

सेफरियल एक प्रसिद्ध अंग्रेज अंक विद्या विशारद् थे। जिन्होने अपनी पुस्तक 'कबाला आफ नम्बर्स' के दसवें अध्याय का शीर्षक रखा है अंक विद्या से हिन्दू शास्त्रानुसार मूक प्रश्न बताना। इसी अध्याय में लिखा है कि यह विद्या उन्होने एक भारतीय स्वामी जी से सीखी थी। उक्त पुस्तक में बहुत से संस्कृत शब्दों का प्रयोग है। इस पाठ में उसी के आधार पर मूक प्रश्न बताया गया है। जिस हिन्दू शास्त्र के आधार पर सेफरियल ने यह प्रकरण लिखा है, वह वर्तमान में उपलब्ध नहीं है। हो सकता है कहीं हस्तलिखित पाण्डुलिपि हो। अब हम नीचे 3 से लेकर 84 तक की संख्याओं के उत्तर या फल दे रहे हैं।

3 आप अपने बारे में सोच रहे हैं। किसी बीमारी, ज्वर, रोग, क्रोध या झगड़े के बारे में सोच रहे हैं।

4 आप किसी घरेलू विषय पर सोच रहे हैं। परिवार के बारे में, प्रेम, आनन्द, मौज मस्ती करने या किसी ऐसे विषय के संबंध में जिसका हृदय से, दिल से घनिष्ठ नाता है और जिसकी तीव्र इच्छा आपके मन में है।

5 विवाह के विषय में, किसी अनुबंध या साझेदारी के विषय में, शान्ति, एकता और मेल मिलाप के बारे में, मन की शान्ति या दूसरों में सुलह कराने के बारे में।

6 किसी समाचार या खबर के विषय में, भाई, यात्रा, संचार के साधन, डाक से आने जाने वाली वस्तु या तत्व संबंधी वस्तुओं के विषय में सोच रहे हैं।

7 मकान, जमीन, जमीन के नीचे की भूमिगत वस्तु के विषय में, समुद्र अपार जल राशि,

सागर के विषय में या परिवर्तन या स्थानान्तर के विषय में सोच रहे हैं।

8 प्राचीनता, पुरानी वस्तुएं, विदेश या विदेशी वस्तुओं के बारे में, पूर्व दिशा या प्राचीन भारतीय सभ्यता के बारे में सोच रहे हैं।

9 किसी की मृत्यु या व्यापारिक घाटा, हानि, नुकसान के बारे में या कोई गलत अनुबंध हो गया है और कैसे ठीक हो, यह सोच रहे हैं।

10 कोई दुर्भाग्यपूर्ण कष्टदायक, मित्रता, समझोता या संबंध हो गया है या कोई ऐसा अनुबंध जिससे हानि की संभावना है या झगड़ा हो गया है इस विषय में।

11 किसी खान, मकान, जमीन, जायदाद, सम्पत्ति के मूल्य निर्धारण के बारे में।

12 खुशनुमा वातावरण, कोई जलसा, उत्सव, आराम, विलासिता की वस्तुएं, उत्तम वस्त्र या इस प्रकार की किसी पार्टी में सम्मलित होने के विषय में।

13 रुपये पैसे के बारे में, तत्काल धन लाभ के बारे में, सट्टा लॉटरी के बारे में।

14 किसी स्त्री संबंधी के विषय में, जैसे पुत्र, बहिन, चाची, ताई, मामी, दादी, नानी आदि के बारे में किसी छोटी यात्रा के बारे में, नदीपार या समुद्रपार किसी दूर देश से आने वाले संवाद के विषय में।

15 किसी की मृत्यु या अन्य दुःख का समाचार या किसी अन्य कष्टप्रद समाचार के बाबत या किसी घाटे या हानि या दुर्भाग्य के बारे में।

16 किसी अच्छे शुभ समाचार के विषय में, किसी लाभप्रद सम्पर्क, किसी अच्छे सुखदायक अनुबंध, समझोते या बातचीत के विषय में या पत्नि के बाबत।

17 किसी रोग, तकलीफ, नौकर बाबत या पास की किसी चीज के विषय में।

18 किसी हर्षदायक यात्रा हेतु, प्रेम, हर्ष, इंच्छित संदेश प्राप्ति, सुवर्ण, भ्राता, या कुटुम्ब से संबंधित किसी कार्य हेतु।

19 किसी काम में रुकावट, एकान्तवास, अस्पताल या नर्सिंग होम में निवास, जेल, सजा या किसी बच्चे के बारे में।

20 किसी यात्रा या पत्र के बारे में, किसी पत्र व्यवहार के संबंध में, किसी वस्तु के लाने ले जाने के विषय में या रास्ते से संबंधित प्रश्न है।

21 कुछ आर्थिक लाभ के विषय में, रूपया पैसा लाभ, अपने पास की कब्जे में होने वाली

वस्तुओं के बारे में, चाँदी की चीज या सफेद वस्तु के बारे में।

22 किसी ऐसे विवाह संबंध के बारे में जो इच्छा के प्रतिकूल हो रहा हो या जिसके परिणाम ठीक न निकलने की आंशका हो, किसी बीमार, साझीदार, पति या पत्नि के बारे में, किसी शत्रु या प्रतिद्वन्द्वी के बाबत या कठिनाइयों अथवा प्रतिकूल अनुबंध हेतु।

23 अच्छी सम्पन्न स्थिति में रहने हेतु, अच्छे कपड़े, उत्तम भोजन, स्वामिभक्त नौकरों हेतु, अच्छे पद, आराम, आशा, यश, और उत्तम स्वास्थ्य के बारे में।

24 किसी डावाँडोल स्थिति के बारे में, कुटुम्ब की कलह के बारे में, किसी ऐसे नये काम या आयोजन के बारे में जिसमें कठिनाइयाँ या बाधायें उपस्थित हो रही हों। बच्चों के विषय में या गुप्त प्रेम के संबंध में।

25 अत्यधिक लाभ, प्रचूर सम्पत्ति, सुवर्ण, धन दौलत के बारे में, सूर्य या अन्य किसी चमकीली वस्तु के बाबत।

26 किसी वस्तु पर शान्ति पूर्वक अधिकार प्राप्त करने के बारे में, अच्छी जायदाद मकान, बुनियाद, समतल भूमि, प्लाट आदि के बारे में।

27 किसी बन्द कमरे या जगह के बारे में, नाव द्वारा छोटी जलयात्रा के बारे में, भाई या किसी अन्य निकट संबंधी के बारे में, किसी पत्र के विषय में या पत्र लाने वाले के बारे में।

28 अपनी कल्पना के बारे में, सफेद कपड़ा या प्यालानुमा वस्तु या चाँदी की वस्तु हेतु, नये चन्द्रमा के बारे में (शुक्ल पक्ष की प्रारंभिक तिथियों में चन्द्रमा नवीन होता है)।

29 अस्वास्थ्य, खराब तन्दुरस्ती हेतु, गरीबी तथा कठिनाइयों की परिस्थितियों के बारे में, रक्त विकार, बीमारी या संघर्षमय जीवन के बारे में।

30 बच्चों की प्रसन्नता सम्बंधी, आनन्ददायक अनुभव, अच्छे दहेज या विरासत में धन प्राप्ति के बारे में, किसी मेलमिलाप या संघ के विषय में।

31 जमीन के नीचे भूगर्भ में स्थित वस्तु के विषय में, मकान में स्थित सर्प, बिच्छू या अन्य जानवरों के बारे में या विदेश के बारे में।

32 किसी बादशाह, राजा या सरकार के बारे में, स्वर्ण या अन्य अच्छी जगह धन लगाने के बारे में, अपने स्वयं के व्यक्तित्व, चरित्र व कार्य सम्बन्धी।

33 किसी हर्षदायक समाचार के विषय में, अच्छे पद या स्थिति बाबत या किसी अन्य विशिष्ट उपलब्धि के बारे में या किसी भाई के विषय में।

34 आर्थिक लाभ से संबंधित, भोजन, अन्न या रोजमर्रा की जरूरत की चीजों से संबंधित या खरीद बाबत अथवा किसी शारीरिक भौतिक लाभ के बारे में।

35 किसी स्त्री के विषय में, किसी बालक के जन्म बाबत, सन्तान लड़का होगा या लड़की, किसी गुप्त योजना कार्यवाही या षड़यन्त्र के बारे में, जिसकी जानकारी प्रश्नकर्त्ता को नही हैं अपनी किसी गुप्त बात या एकान्तवास के बारे में।

36 सट्टे या रोजगार में हानि के बारे में, बीमार बच्चे के बारे में, दुःखदायक घरेलू कुटुम्ब की स्थिति हेतु, दुःख, कष्ट और कठिनाइयों के बारे में।

37 किसी ऐसे अनुबंध हेतु जिसका परिणाम अच्छा न हुआ हो या विवाह बाबत जिसका परिणाम अच्छा न हुआ हो, सुखी वैवाहिक जीवन न रहा हो, किसी मकान जायदाद या शादी के बारे में।

38 बुखार, मलेरिया, मोतीझरा से शारीरिक कष्ट या मृत्यु के बारे में, पास के किसी तालाब या जलाशय बाबत, यात्रा या संवाद प्राप्ति हेतु या बहिन के बारे में।

39 किसी बन्द जगह या मन्दिर के बारे में, राज भवन, सिनेमा या किसी चमकीले, जगमगाते भवन के बाबत या बाहर जाने, निष्कासन या प्रवास के बारे में।

40 बहुमूल्य वस्तुओं, जवाहरात, ज्वैलरी, पहनने के वस्त्र, धन संबंधी या अन्न धान्य के मूल्यों के बारे में।

41 अपने स्वयं के बारे में, अपनी पोशाक, भोजन, स्थिति, नेकनामी, बदनामी, साख या प्रतिष्ठिा के बारे में।

42 किसी मित्र या उच्च पद व स्थिति की महिला के विषय में, किसी उच्च पदाधिकारी की अनुकंपा हेतु, विशाल जनसमूह, मेला या सभा के बारे में।

43 पैतृक सम्पत्ति के बारे में, पुरानी इमारत, श्मशान, खान, खनिज पदार्थों या किसी वृद्ध पुरुष के संबंध में।

44 भाई के विषय में, स्वास्थ्य, आराम की वस्तुओं, धार्मिक ग्रन्थों, शास्त्र संबंधी विषयों के बारे में, समुद्रपार या दूर से आने वाले पत्र के संबंध में।

45 विवाह के संबंध में या लाभ हानि संबंधी, धोखाधड़ी, पक्षपात, असमानता, अन्याय या किसी कम मूल्य की वस्तु के बारे में।

46 किसी मित्र या उच्च पदाअधिकारी के बारे में, सोने की वस्तु, अंगूठी, जवाहरात या किसी बहूमूल्य वस्तु के बारे में।

47 स्वयं के बारे में, न्याय, मुकदमें के बारे में, नापतोल, संतोष, आराम, शान्ति या मृत्यु के बारे में।

48 पोशाक, गृह, श्रंगार गृह या भवन के किसी अन्दरूनी हिस्से के बारे में, किसी छिपे हुए या भागे हुए नौकर के बारे में, किसी महिला के स्वास्थ्य के बारे में या दूर से आने वाले संवाद के बारे में।

49 पद परिर्वतन या स्थान परिवर्तन के बारे में, अपनी माता या किसी विशिष्ट वस्तु के बारे में, किसी रानी या उच्च पदस्थ महिला के बारे में,

50 किसी कष्टदायक यात्रा के बारे में, कष्ट में पड़ी हुई किसी बहिन के बारे में, कर्त्तव्य की पुकार, बुलावा या किसी दुःखद समाचार के बारे में।

51 प्रचुर आर्थिक लाभ के बारे में, किसी शर्त, सटटा, लॉटरी या किसी रोजगार के बारे में, बच्चो के बारे में या दूर से आने वाले धन के बारे में।

52 शारीरिक रोग या मृत्यु संबंधी, खोई हुई छिपी वस्तु बाबत, नौकर, लाल कपड़ा, गरम भोजन, डाक्टर, वैद्य, यमराज, तन्त्र विद्या, योग विद्या के बारे में, सर्प या अन्य रेंगने वाले जीव जन्तुओं के बारे में।

53 किसी उच्च पद, नौकरी के बारे में, राजा या उच्च पदाधिकारी, मृत सिंह या खोये हुए सोने के बारे में।

54 संक्रामक रोग के बारे में, कष्ट में पड़ी किसी महिला के बारे में, पत्नी, कन्या के बारे में, किसी वायदे, अनुबंध या चार दीवारों के विषय में।

55 मृत्यु के विषय में खोये हुए कागज, दस्तावेज या गलत जगह पहुँचे हुए संदेश के बारे में, किसी नई उम्र की लड़की, जनसमूह या मित्र के बारे में।

56 समुद्रपार, विदेश संबंधी, समुद्रयात्रा के बारे में, धार्मिक सम्मेलन, प्रकाशन, जहाज, भूत या शक्ति (माता दुर्गा, काली आदि) के विषय में।

57 किसी खजाने, भंडार या प्राप्त धन राशि के विषय में, किसी विरासत, पेंशन या किसी पुरुष संबंधी के बारे में।

58 वकील, जज, गुरू, पुरोहित, शास्त्र, वेद, ब्राह्मण, व्यक्तिगत जायदाद, व्यक्तिगत प्रभाव या व्यक्तिगत प्राप्ति के विषय में।

59 मृत्यु ग्रह, अस्पताल, रोगी का कमरा, बच्चा, घर में जलती हुई अग्नि, किसी साहसिक कार्य या उद्योग संबंधी प्रश्न।

60 किसी पारसी अग्नि पूजक हवनकर्त्ता के विषय में, धार्मिक संस्कार, विदेशी राजा ऋषि, समाधि अवस्था, ब्रह्मा, आकाश स्थित सूर्य, ईश्वर या काल, समय बाबत।

61 भोजन या खाद्य पदार्थ, व्यापार, उत्तम वस्त्र, पुरुष, मित्र व्यापार स्थान या बाजार, नौकर या वैष्णव बाह्मण सम्बन्धी प्रश्न।

62 किसी लेख या अनुबंध के संबंध में, किसी वायदे, व्यक्ति की कानूनी कार्यवाही के बारे में, पद, जायदाद या पिता संबंधी प्रश्न।

63 मृत स्त्री से संबंधित, खोई हुई जायदाद या वस्तु के बारे में, कफन का वस्त्र, क्षीण चन्द्रमा, स्त्री का दहेज या स्त्री धन अथवा स्नान संबंधी प्रश्न।

64 अपने पद व स्थिति के बारे में, प्राप्त जायदाद, विरासत, वृद्ध मनुष्य, सौदा या विनिमय, वस्तुओ की अदला बदली, समय की अवधि संबंधी प्रश्न।

65 छोटी यात्रा व उससे लौट आने का प्रश्न, जाना और आना, आवागमन, पैदल यात्रा, बन्द कमरा, सुखद कमरे में रहना, बहिन या मन्त्र या गुप्त मन्त्रणा बाबत।

66 श्मशान, पर्वतीय स्थल या स्थान, खनिज पदार्थ, वैद्य, मित्र, जलता हुआ घर, सूखी भूमि या रेत संबंधी प्रश्न।

67 मृत राजा, खोया हुआ सोना, स्त्री का दहेज, करधनी(मेखला), बीमार बच्चे के बारे में।

68 छोटी कम उम्र की कन्या के बारे में, कुटुम्ब संबंधी, विश्वास योग्य पद या जमानत संबंधी प्रश्न।

69 वस्त्र, नौका, जहाज, सौदागरी का सामान, भोजन की वस्तुएँ, व्यापार, वेदांग, विज्ञान की वस्तु के संबंध में।

70 पत्नी के विषय मे, अनुबंध, जनता के एकत्र होने के स्थान बाबत, पूर्ण चन्द्र पूर्णमासी संबंधी प्रश्न।

71 जलपात्र, कुम्भ, घड़ा विषयक प्रश्न, किसी पुराने परिचित स्थान या मित्र के बारे में, अन्य लोगों से अपने सम्पर्क के बारे में।

72 धन के बाबत, अमीर मित्र, ब्राह्मण, धार्मिक सम्मेलन, खड़ाँऊ या ऐसी वस्तु हेतु जो जोड़े से पूर्ण होती है जैसे जूता, कैंची, चप्पल, पाजामा, आदि।

73 भाई, पद, किसी शासक की मृत्यु, शीघ्र यात्रा, क्रोधयुक्त संदेश, सम्मान, प्रतिष्ठा, उत्तराधिकार अथवा लेखन संबंधी प्रश्न।

74 चमकते हुए सूर्य के विषय में, गर्विता पत्नि, शक्ति सम्पन्न शत्रु, आखेट शिकार, आँखो की ज्योति या किसी चमकीले पदार्थ के बारे में।

75 खुशनुमा जगह, सम्पन्न जमीदारी, मोक्ष, गढ़ा धन, मवेशी पशुओ के बारे में।

76 पुत्र, विद्या स्थान, पाठशाला, स्कूल, नव परिणीता वधु ,नई बहू या ब्रह्मचारी कुमार–कुमारी संबंधी प्रश्न।

77 धोती, पगड़ी, साफा, नौकरानी, औषधि, जल या पीने पिलाने के बारे में।

78 किसी वृद्ध मित्र, संस्था, प्राचीन संबंधो के बारे में, अस्पताल या जेल, कारागार या बन्धन में पड़े व्यक्ति के बारे में।

79 स्वयं की वृद्धि–समृद्धि प्रश्न, पदशक्ति, चरण, खड़ाँऊ, उन्नति और सुख, किसी वस्तु की अन्तिम सीमा संबंधी, जज, वकील या बुद्धि–ज्ञान के बारे में।

80 लाभ–हानि की आशंका, अग्नि से हानि, विदेश भूमि, दूर देश में मृत्यु, समुद्र यात्रा संबंधी प्रश्न।

81 किसी धनवान रिश्तेदार के विषय में, उत्तम वस्त्र, सोने के आभूषण, व्यक्तिगत स्वास्थ्य, पके फलों के संबंध में।

82 शान्तिपूर्ण अन्तिम समय, बहुमूल्य दहेज, हर्ष दायक समाचार, हाथी या कार की सवारी, लाभ के लिये कोई यात्रा या बहिन के संबंध में।

83 व्यापार संबधी, सन्धि या अनुबंध संबंधी, जायदाद का ठेका या किराए पर देने के बारे में, रास्ता या फाटक, नई बहू या सगाई के संबंध में।

84 कन्या के विषय में, तालाब या स्नान स्थान, जन महोत्सव, दुर्गादेवी, अवकाश, साफ कपड़ा या प्रिय मित्र के बारे में।

सेफरियल ने अपनी पुस्तक कबाला आफ नम्बर्स में अनेकों संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया है जैसे– मन्त्र, ईश्वर, ऋषि, ब्रह्म, वैष्णव, समाधि, गुरू पुरोहित यम, वेदशास्त्र, वेदांग, कुम्भ, मोक्ष, ब्रह्मचारी आदि और लिखा है कि अंक विद्या भारत वर्ष में बहुत प्राचीन काल से अध्ययनरत थी। उसने इसे भारत के एक स्वाामी जी से सीखा था और एक बार इसी विद्या की सहायता से अपनी पत्नि के खोए हुए हार का पता लगाया था।

सेफरियल ने उक्त पुस्तक में भारतीय प्राचीन शास्त्रों के अनुसार खोई वस्तुओं का पता लगाने की पद्धति का उल्लेख किया है और अपने अनुभव से इस प्रक्रिया को सही बताया है। मेरे अनुभव में भी यह सिद्धांत ठीक है। इस पद्धति में उपरोक्त प्रकार से जो संख्या आई है, यदि मूक प्रश्न खोई हुई वस्तु के बारे में है, तो उसी संख्या को ही ले लो, नहीं तो उसी प्रकार 9 अंकों की एक संख्या प्रश्न कर्ता से लिखा लें और उसके जोड़ में 3 मिलाकर अन्तिम संख्या बनाकर निम्नानुसार नीचे उत्तर दें :–

3 रास्ते या गैलरी, गलियारे में अथवा कागजों के मध्य में।

4 वस्तु खोई नहीं है वल्कि आप ही के कब्जे में है।

5 थोड़ी सी खोज एवं परिश्रम से वस्तु मिल जाएगी। टोपी, साफा, पगड़ी, हैट, के नीचे देखें।

6 चप्पल, जूते रखने के स्थान पर, निकलने के रास्ते में वहाँ किसी आले, सोफे, रैक, अलमारी के खाने में देखें।

7 अपने नौकर या नौकरानी से पता लगाएँ।

8 अलमारी के ऊपर या बालकनी में देखें, नौकर, कारीगर, मजदूर से तलाश करें।

9 किसी बालक या किशोर के पास उसके कपड़े या जेब में देखें।

10 आपके प्रमुख कमरे या बैठक में है।

11 किसी तालाब, जलाशय या पानी के किनारे जाकर तलाश करें।

12 वस्तु खोई नहीं है, कहीं रखकर भूल गए हैं, वस्तु सही सलामत है, अपने काम करने के स्थान पर, दफ्तर में, किताबों के अन्दर या कागजों में देखें।

13 जहाँ पर आप अपने कपड़े, शाल, ओवरकोट, पहनने के कपड़े रखते हैं वहाँ देखें।

14 पगड़ी, हैट, टोपी या साफे के नीचे या संडास, नाली, सीवर में देखें।

15 पति या पत्नि से पूछें। गैरेज या अस्तबल में देखें।

16 रसोईया से पता करें। रसोई घर में देखें।

17 अलमारी या रैक के खाने में या सैफ में या कला की वस्तुएँ हैं वहाँ देखें।

18 चीज घर में खोई है और कपड़ों में मिलेगी।

19 थोड़ी दूर पर, सूखी रेतीली जमीन पर मिलेगी। पगडण्डी या गली में देखें।

20 चीज खोई नहीं है कहीं रखकर भूल गए हैं। यह जल के पास या बढ़िया कपड़ों के पास मिलेगी।

21 चीज आपके पास ही है। किसी बक्से, केस, डिब्बे में, अटैची, ब्रीफकेस, मोड़कर बन्द होने वाले केस या डिब्बे में मिलेगी।

22 वस्तु किसी अलमारी या खानेदार रैक के ऊपर है और जल्दी मिलनी चाहिए।

23 पास में है। दूसरे कमरे में जहां कपड़े रखते हो देखो मिल जाएगी।

24 चीज आपके पास ही है, खोई नहीं है।

25 अपनी ही चीजों में देखो। किसी सफेद और गोल वस्तु के अन्दर है।

26 घर में वयोवृद्ध बुजुर्ग से पूछें, उन्होने संभाल कर रख दी है।

27 गौशाला, घुड़साल, गैरेज में या नौकरों के निवास में खोज करें।

28 खोई वस्तु मिलना संभव नहीं है, आशा छोड़ दें।

29 किसी वृद्ध पुरुष या नौकर से पता मिलेगा कि कहाँ है।

30 बच्चों से या विद्यार्थियों से पूछने से पता मिलेगा। खेल में खोई है।

31 गुप्त कोठरी या बन्द नाली में है। सौभाग्य से या परिश्रम से मिल सकती है।

32 पास ही बरामदे में या किसी चट्टान पर या उभरी हुई जमीन पर या किसी आयताकार पदार्थ पर मिल सकती है।

33 चीज आपके पास है और आपकी अपनी चीजों में या कपड़ों में मिलेगी।

34 अग्नि के पास, अंगीठी, चूल्हा, भट्टी, ओवन के पास या मुख्य कमरे, बैठक में आग जलाने के स्थान के पास में है। चीज नजदीक में है और शीघ्र मिल जाएगी।

35 पानी के पास किसी छिपे हुए स्थान में, गुप्त स्थान में है या पति पत्नि के निजी कमरे में है। हाथ धोने के स्थान के पास या वाश बेसिन में भी देख लें।

36 किसी आया या धाय अथवा अभिभावक के द्वारा प्राप्त होगी।

37 किसी पवित्र स्थान, मन्दिर, तीर्थ स्थान, देवालय, समाधि आदि से या घर के निजी, गुप्त, कमरे में, घर की चारदीवारी के आसपास या उसके अन्दर मिलेगी।

38 धार्मिक कृत्यों से पहिले जहाँ आप स्नान करते हैं जैसे स्नान गृह, कुआँ, तालाब, नदी, तीर्थ, आदि के पास की छोटी यात्रा करने के बाद मिलेगी।

39 चीज खोई नहीं है, किसी अलमारी, टांड या खाने में उठाकर रख दी है।

40 पहनने के कपड़ों, धोती, कुर्ता, पाजामा पैंट, शर्ट, पगड़ी, साफा, तहमद, तौलिया आदि में खोजने से मिल जाएगी।

41 घर में जहाँ पति–पत्नि के जूते रखे जाते हैं वहाँ पर खोजें।

42 रसोइया या बावर्ची के घर में, रसोई में, पानी के बर्तन या घड़े के पास देखें।

43 गौशाला, अस्तवल या गैरेज में, उसके सामने के मैदान में मिलेगी, दूर नहीं है।

44 तेल के बर्तन, तेल से जलने वाले दिये, लालटेन आदि में देखो। वस्तु ऐसी हालत में मिलेगी कि उसे साफ करना पड़ेगा।

45 हाथ रखो और ले लो। जल्द ही प्राप्त होगी।

46 तुम्हारे साझीदार, मित्र या पत्नि के पास में सही सलामत रखी हुई है।

47 दो नौकर साथ साथ काम कर रहे हैं उनसे पूछो, जिसके पैर अस्थिर हैं, हिल रहे हैं वह पता बताएगा।

48 पीने का पानी जहाँ रखा जाता है वहाँ मिलेगी।

49 समझो हमेशा के लिये खो गई है अथवा क्षत विक्षत हालत में मिलेगी।

50 खोई नहीं है। दो भागों वाले किसी पात्र में या बक्से में मिलेगी।

51 धार्मिक कृत्य से पूर्व स्नान स्थल, पवित्र नदी, सरोवर, जलाशय, स्नानागार, या उसके आसपास में मिलेगी।

52 तुम्हारे साझेदार या पति/पत्नि से पता करने पर मिलेगी या घर की मुखिया महिला से या उसके नजदीकी रिश्तेदारों में से कुछ आपकी सहायता पता लगाने में, बताने में कर सकते हैं। खोई वस्तु एक हाथ से दूसरे हाथ में पहुंच चुकी है।

53 नौकर के पास है पूछने, बताने, समझाने या दवाब डालने पर लौटा देगा।

54 घर परिवार के बीच में ही किसी के पास है। बच्चों की चीजों में ज्यादा तलाश करें।

55 मकान की दीवार या चारदीवारी के पास बरसात का पानी निकालने वाली नाली, मोरी या पाइप के पास देखो या पानी के पास जहाँ पानी है। उसके पास मिलेगी।

56 थोड़ी दूरी पर जहां आप पहले ठहरे थे, वहाँ मिलेगी। वहाँ जाकर तलाश करें।

57 आपके किसी थैले, जेबों, औजार, यन्त्र या छड़ी रखने के स्थान के पास देखें।

58 दो व्यक्तियों के अधिकार में है और कठिनाई से ही प्राप्त हो सकेगी तथा वस्तु खर्च हो चुकी है या व्यापार अथवा उपयोग में लाई जा चुकी है।

59 पुराने या वृद्ध नौकर के पास है। रोटी, आटे, केक या ऐसी ही किसी वस्तु के अन्दर मिलेगी या नौकर ने कहीं छिपा दी है।

60 मिलने की कोई आशा नहीं है।

61 घर के नीचे के भाग में, जूते, चप्पल ,मोजे, पजामा, पानी छिड़कने की नली के पास देखो।

62 हाथ से गई, नहीं मिलेगी।

63 आपके ही पास है। पुरानी अँधेरी जगह में, पुराने कबाड़ में पड़ी है।

64 आपके कब्जे में है। इधर–उधर रखकर भूल गये हो। अँधेरे कोनों में और ऊँचे स्थानों में टाँड बगैरा पर देखो। कुछ समय बाद मिल जाएगी।

65 आपके पास से चली गई है और यदि मिली भी तो किसी दूसरे आदमी की मदद से मिलेगी।

66 दो नौकरो के षड्यन्त्र से चली गई है। मिलना कठिन है। जिसके हाथों में दोष हो, जिस नौकर के हाथों में कोई रोग, अंगहीनता हो उससे तहकीकात करें।

67 किसी नवयुवक या बच्चे की सहायता से मिलेगी।

68 घर की छत पर या ऊपर के भाग में है। नौकर के द्वारा प्राप्त होगी।

69 जहां आप चीज के खोने का पता लगने पर या उससे पहले ठहरे थे या खड़े हुए थे, वहीं पर थोड़ी दूर पर किसी संबंधी द्वारा या उसके पास या प्याले के पास देखो।

70 जहाँ पानी रखा जाता है, वहीं आस पास देखने से मिल जाएगी।

71 जहाँ खोई है वहीं खड़े होकर आसपास देखो, दिखाई दे जाएगी। पैरों के पास ही है।

72 पानी के घड़े, सुराही, जग आदि के पास तुम्हारे ही अधिकार में घर में है।

73 पुलिस की तहकीकात के बाद मिल जाएगी।

74 आपका वफादार नौकर उसका पता लगा देगा।

75 नवयुवकों या बालकों के हाथ में पड़ गई है। क्षत–विक्षत हालत में मिलेगी।

76 घर में ही है जहाँ मसाले, आटा आदि रखा जाता है, रसोई भंडारगृह में देखें।

77 कुछ दूरी पर है। कोई नौकर उसे लेकर आपके पास आएगा।

78 कुछ दूर पर गाय बैलों के पास में है। मिलने की आशा नहीं है, नष्ट हो चुकी है।

79 आपके घर में, अधिकार क्षेत्र में, लोहे या स्टील के पात्रों में है।

80 तुम्हारे कब्जे में, दो खानों वाले किसी बक्से, डिब्बे, केस, जूते, मोजे आदि में देखें।

81 पहनने, ओढ़ने के कपड़ो में देखें, मिल जाएगी।

82 रसोई में खाना खाने के स्थान पर देखो, रसोइये से भी पूछो, निगाह रखो।

83 कुमारी कन्या या कोई नवयुवती पता लगाकर देगी, किसी तालाब या पानी से भरे गड्डे के पास में है।

84 घर में ही है, किसी बक्से, सन्दूक, केस या डिब्बे में या दो भागों वाले पात्र, टिफिन, कैरियर आदि में है।

यदि किसी सज्जन ने मूक प्रश्न किया है तो उनसे प्रश्न को निरन्तर अपने ध्यान में रखते हुए 9 अंको की संख्या लिखाओ, यदि उत्तर ठीक मिलता है और मूक प्रश्न आप ठीक बता देते हैं तो फिर उत्तर देने की सोचो नहीं तो फिर संख्या लिखाएँ या 81 तक की संख्या बोलने को कहें। यदि कोई सज्जन खोई वस्तु का प्रश्न लेकर आए तो उनसे भी उपरोक्तानुसार विषय को मन में रखते हुए 9 अंको की संख्या लिखवाकर या अंक बुलवाकर उत्तर देखें। यदि उत्तर प्रश्न की विषय वस्तु से मेल नहीं रखे तो दुबारा संख्या या अंक लें और उत्तर बताएँ। उत्तर देते समय खोई हुई वस्तु का आकार प्रकार ध्यान में रखो। उत्तर में बताए गए संकेतो से अपनी बुद्धि व समय के अनुसार वे संकेत जिस तरह प्रश्नकर्ता की स्थित में उपयुक्त रूप से सही बैठते हों उत्तर दें। मान लो कोई सोने की अँगूठी खोई है और उत्तर की संख्या 83 आती है तो प्रश्नकर्त्ता की बातों से खोने का पूरा विवरण सुनने से जिस कुमारी कन्या नवयुवती पर या एक से अधिक कन्याओं या नवयुवतियों पर संदेह होता है, उनसे पूछताछ करने को कहो, चतुराई से पता करो और उनकी पहुंच के अन्दर जितने पानी से भरे स्थान हैं उनमें देखो। मानो तालाब, जलाशय, गड्डे आदि नहीं है तब पानी से भरे घडे, सुराही आदि में छिपाकर रखने की पूरी संभावनाएँ हो सकती हैं। पुलिस या

जासूस जिस प्राकर मामूली से सूत्र से अपनी सूझबूझ के द्वारा पता लगाते हैं। कुछ उसी प्रकार से उपरोक्त संकेतो के आधार पर आप उत्तर दीजिये सफलता मिलेगी।

यदि खोई हुई वस्तु बड़े आकार की वस्तु है। मान लो किसी का स्कूटर खो गया है और उत्तर की संख्या 59 आती है। अब स्कूटर जैसी चीज रोटी, केट, आदि के अन्दर तो नहीं हो सकती, लेकिन किसी आटा मिल, ढावे या होटल में तो हो सकती है और किसी पुराने या ज्यादा उमर के नौकर या निम्न श्रेणी के व्यक्ति द्वारा चुराई गई है। इस प्रकार अलग–अलग परिस्थितियों में वस्तु के आकार–प्रकार के अनुसार अपनी बुद्धि का उपयोग करके उत्तर देना ठीक रहता है। मूक प्रश्न के सम्बन्ध में जो उत्तर आये उसको कुछ जोर से पढ़ो और देखो कि प्रश्नकर्त्ता के मुख पर क्या प्रतिक्रिया होती है। उत्तर के विषयों में जिस बात को सुनकर वह कुछ चौंके, समझो यही उसके प्रश्न का विषय है।

इस पाठ के नीचे अभ्यास प्रश्न दिए हैं। जिन्हे हल करें।

प्रश्न–1 एक व्यक्ति आपसे अपनी उदासी का कारण जानने के लिए 9 अंकों की एक संख्या लिखता है। 123455789 जिसका जोड़ 44 होता है। और 3 जोड़कर 47 आता है। प्रश्नकर्ता की आयु 32 वर्ष के लगभग है। उसकी चिन्ता का कारण बताओ ?

प्रश्न 2 मान लो आपके प्रश्न का उत्तर ठीक निकलता है और वह प्रभावित होकर यह जानना चाहता है कि उसके मन में किस बात की चिन्ता है। वह 9 अकों की संख्या लिखता है 111111114 जिसका योग 12 होता है। उसे उत्तर दीजिए ?

प्रश्न–3 एक व्यक्ति के सार्टीफिकिटों का बंडल गुम हो गया है और नहीं मिल रहा है। उसने संख्या लिखी है 273205431 अपना हिसाब लगाकर उत्तर दो ?

प्रश्न–4 आपके मित्र के यहाँ विवाहोत्सव में उसके काफी सम्बन्धी एकत्रित हुए हैं, उनकी बहिनजी का सोने का हार विवाह की भीड़ भाड़ में खो गया है। आपका मित्र बड़ा परेशान है, आपकी सहायता चाहता है। आप उससे उपरोक्त प्रकार से संख्या लिखवाते हैं। वह लिखता है 698888899 उत्तर बताएँ ?

प्रश्न–5 एक 40 वर्ष का व्यक्ति आपसे जानना चाहता है कि उसके मन में क्या विचार चल रहा है। वह 345231230 संख्या लिखता है। उत्तर लिखें ?

8. शुभाशुभ विचार

नीचे 1 से 9 तक के मूलांक या भाग्यांक के लिए कोनसा समय, दिन, वार, तारीखें, साझेदारी, मित्रता आदि शुभ या अशुभ रहेंगी, इसका विवेचन दिया जा रहा है।

मूलांक – भाग्यांक 1 हेतु

अनुकूल समय

पाश्चात्य मतानुसार दिनांक 21 मार्च से 20 अप्रैल तथा 24 जुलाई से 23 अगस्त एवं भारतीय मतानुसार दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर तक गोचर में सूर्य मेष तथा सिंह राशि में रहता है। मेष में सूर्य उच्च का तथा सिंह में अपने घर में होता है। इस समय में सूर्य की किरणें प्रखर एवं तेजस्वी होने से मूलांक 1 के लिए यह समय सभी दृष्टियों से उन्नतिशील तथा कार्यों में प्रगति देने वाला रहता है। इस समय में किये गये कार्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होते हैं।

प्रतिकूल समय

अक्तूबर, नवंबर तथा दिसंबर में सूर्य की किरणें तेजस्वी न होने से प्रभावहीन समय रहता है। इस काल में स्वास्थ्य का ध्यान रखना हितकर रहता है।

अनुकूल दिवस

रविवार एवं सोमवार के दिन इनके लिए विशेष शुभ फलदायक रहते हैं। यदि इनकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को रविवार या सोमवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन इनके लिए अधिक अनुकूल और श्रेष्ठ फलदायक रहेगा।

शुभ तारीखें

इनको उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो, या पत्र लिखना, अथवा किसी से मिलना, कोई नया कार्य या व्यापार आदि प्रारंभ करने हेतु इनको किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखें अनुकूल रहेंगी। अतः यह कोई कार्य यदि इन तारीखों को ही प्रारंभ करें तो वह अधिक सुविधापूर्ण एवं शीघ्र सफल होता है।

अशुभ तारीखें

इनके लिए किसी भी माह की 5, 6, 14, 15, 23 एवं 24 तारीखें कोई भी नया कार्य करने हेतु प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः उपर्युक्त तारीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न करें।

साझेदारी मित्रता

यह ऐसे व्यक्तियों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें जिनका जन्म 1, 10, 19, और 28 तारीखों को, अथवा दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई और 17 अगस्त से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। ऐसे व्यक्ति इनके लिए अनुकूल सहयोगी एवं विश्वासपात्र सिद्ध होंगे। इस प्रकार के व्यक्तियों से इनकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक रहेगी।

विवाह, प्रेम संबंध

मूलांक 1, 4, या 8 से प्रभावित महिलाएं इनकी अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। उपर्युक्त मूलांक वाली महिलाओं से यह सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकते हैं तथा उसमें सफल भी हो सकते हैं। जिनका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28, और 31 तारीखों में हुआ हो वे सभी स्त्रियां इनके लिए सहायक एवं लाभपूर्ण रहेंगी।

अनुकूल रंग

इनके लिए अधिक अनुकूल रंग पीला या ताम्र वर्ण है। पीला भी पूर्णतः पीला नहीं, अपितु सुनहरा पीला होना चाहिए। यह यथा संभव इसी रंग का उपयोग ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि में करें। हो सके तो अपने पास इस रंग का रुमाल तो यह हर समय रक्खें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी यह इसी रंग के वस्त्र पहनेंगे तो इनका स्वास्थ्य शीघ्र ठीक हो जाएगा।

मूलांक – भाग्यांक 2 हेतु

अनुकूल समय

पाश्चात्य मतानुसार दिनांक 22 जून से 23 जुलाई तथा भारतीय मतानुसार 16 जुलाई से 16 अगस्त तक सूर्य कर्क राशि में रहता है। दिनांक 21 अप्रैल से 21 मई तक, पाश्चात्य मतानुसार और 13 मई से 14 जून तक, भारतीय मतानुसार, सूर्य गोचर में वृष राशि में रहता है। कर्क चंदमा की अपनी राशि है तथा वृष उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक 2 के लिए सभी दृष्टियों से उन्नतिशील तथा कार्यों में प्रगति देने वाला रहता है। इस समय में किये गये कार्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहते हैं।

प्रतिकूल समय

दिनांक 17 अगस्त से 16 सितंबर तक सूर्य सिंह राशि में तथा 14 नवंबर से 14 दिसंबर तक

वृश्चिक राशि में रहता है, जो चंद्रमा की नीच राशि होने से यह समय कोई भी नया कार्य करने के लिए उपयुक्त नहीं कहा जा सकता।

अनुकूल दिवस

इनके लिए कोई भी नया या शुभ कार्य करने हेतु सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार के दिन अच्छे सिद्ध हो सकते हैं। यदि इन्ही वारों में इनके मूलांक की तारीख भी हो तो ऐसा दिन सभी कार्यों के लिये अच्छा रहता है।

शुभ तारीखें

जब कभी इनको कोई महत्वपूर्ण कार्य करना हो, नया कार्य, या व्यापार प्रारंभ करना हो, अथवा किसी को विशेष पत्र लिखना हो, या किसी से विशेष कार्यवश मिलने जाना हो, तो यह किसी भी माह की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27 एवं 29 तारीखों को ये सारे कार्य करें। यदि इन तारीखों में इनका अनुकूल वार भी रहता है तो ऐसा दिन इनके कार्यों में प्रगति देने वाला रहता है।

अशुभ तारीखें

इनके लिए अंग्रेजी मास की 5, 8, 14, 17, 23 एवं 26 तारीखें कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए ठीक नहीं रहेंगी। अतः इन तारीखों में सोच–समझ कर ही कोई शुभ कार्य करें।

साझेदारी मित्रता

किसी से भी मित्रता करते समय यह देखना इनके हित में रहेगा कि यदि उसका जन्म अंग्रेजी माह की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27 एवं 29 तारीख को हुआ हो, अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो, तो ऐसे व्यक्ति इनके लिए हितकारी सिद्ध हो सकते हैं।

विवाह, प्रेम संबंध

इनके लिए मूलांक 2, 7 एवं 9 से प्रभावित महिलाएं अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। इनको चाहिए कि यह इन्हीं मूलांक वाली महिलाओं से मित्रता इत्यादि रखें, या ऐसी महिलाएं जिनका जन्म किसी भी मास की 2, 7, 9, 11, 16, 18, 20, 25, 27, एवं 29 तारीख को हुआ हो, अथवा 13 मई से 14 जून एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो, तो ऐसी महिलाएं हमेशा इनके अनुकूल रहेंगी।

अनुकूल रंग

इनको अपने वस्त्रों का चुनाव करते समय सफेद, काफूरी, हरा एवं अंगूरी रंगों का उपयोग अधिक मात्रा में करने पर वांछित लाभ प्राप्त होंगे। यह हो सके तो अपने कमरे के पर्दे, चादर, तकिया इत्यादि में इन रंगो का इस्तेमाल कर सकते हैं। इन रंगों का रुमाल तो हमेशा अपने पास रखना इनके लिए विशेष लाभप्रद रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 3 हेतु

अनुकूल समय

सूर्य 21 नवंबर से 20 दिसंबर तक धनु राशि में एवं 19 फरवरी से 20 मार्च तक मीन राशि में तथा 21 जून से 20 जुलाई तक कर्क राशि में, पाश्चात्य मत से रहता है। भारतीय मत से यह 15 दिसंबर से 13 जनवरी तक धनु में एवं 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि में तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक कर्क राशि में रहता है। धनु एवं मीन राशियां गुरु का स्वस्थान अथवा अपना घर है। कर्क राशि गुरु का उच्च स्थान है। अतः उपयुक्त समय में मूलांक 3 द्वारा प्रभावितों के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी एवं लाभप्रद समय रहता है। इस काल में कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य इत्यादि करना इनके लिए विशेष योग कारक रहता है।

प्रतिकूल समय

इनके लिए माह जनवरी एवं जुलाई किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने हेतु अनुकूल नहीं रहते। इन मासों में इनके कार्यो में रुकावटें आएंगी तथा स्वास्थ्य में क्षीणता उत्पन्न होगी, आलस्य बढ़ेगा, व्यर्थ की परेशानियां तथा भाग–दौड़ बढेगी। अतः इस समय में ध्यान रखना उचित रहेगा।

अनुकूल दिवस

गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार के दिन इनके लिए विशेष शुभ फलदायक रहते हैं। यदि इनकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन इनके लिए अधिक अनुकूल तथा श्रेष्ठ फलदायक होता है।

शुभ तारीखें

मूलांक 3 हेतु किसी भी अंग्रेजी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30

तारीखें किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने, महत्वपूर्ण या विशिष्ट व्यक्तियों से मिलने, पत्र इत्यादि लिखने हेतु शुभ रहती हैं। अतः यदि यह उपयुक्त तारीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य करते हैं तो शीघ्र सफलता मिलती है।

अशुभ तारीखें

इनको किसी भी अंग्रेजी माह की 4, 8, 13, 17, 22, 26 एवं 31 तारीखें प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, उपर्युक्त तारीखों में संपन्न न करना इनके लिए हितकर रहेगा।

साझेदारी मित्रता

यह ऐसे व्यक्तियों से मित्रता या साझेदारी स्थापित करें, जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24 27 एवं 30 तारीखों में, अथवा 15 दिसंबर से 13 जनवरी, 13 मार्च से 13 अप्रैल एवं 16 जुलाई से 16 अगस्त के बीच हुआ हो। ऐसे व्यक्ति इनके लिए अनुकूल सहयोगी तथा विश्वासपात्र सिद्ध होते हैं। इस प्रकार के व्यक्तियों से इनकी मित्रता स्थायी एवं दीर्घ रहेगी तथा वे रोजगार, व्यवसाय, साझेदारी आदि में सहायक रहते हैं।

विवाह, प्रेम संबंध

इनके लिए विवाह या प्रेम संबंध स्थापित करते समय यह देखना लाभप्रद रहेगा कि उस महिला का मूलांक 3, 6 या 9 हो, अथवा ऐसी महिला का जन्म किसी भी अंग्रेजी मास की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 या 30 तारीख को हुआ हो। इन दिनांकों में जन्मी स्त्रियां इनके लिए विशेष फलदायी और अच्छा साथ निभाने वाली रहेंगी।

अनुकूल रंग

इनके लिए अनुकूल रंग हल्का गुलाबी, चमकीला गुलाबी है। गुलाबी भी पूरा गुलाबी नहीं, बल्कि हल्का गुलाबी होना चाहिए। अतः यह अपने ड्रॉइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि इसी रंग के लें। हो सके तो इस रंग का रुमाल तो हर समय रखें। स्वास्थ्य की क्षीणता के समय भी यह हो सके तो इसी रंग के वस्त्र पहनें, जिससे इनका स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 4 हेतु

अनुकूल समय

दिनांक 21 जून से 21 अगस्त तक, पाश्चात्य मतानुसार, सूर्य के कर्क एवं सिंह राशि में रहने पर तथा भारतीय मत से 16 जुलाई से 16 सितंबर तक कर्क एवं सिंह राशि में सूर्य के रहने पर हर्षल की स्थिति प्रबल मानी गयी है। इस समय जल एवं अग्नि तत्व प्रबल रहते हैं, जो हर्षल या राहु के गुण हैं। अतः उपर्युक्त समय मूलांक 4 के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

प्रतिकूल समय

इनके लिए माह अक्तूवर, नवंबर एवं दिसंबर, किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने हेतु, अनुकूल नहीं रहते। इन मासों में इनके कार्यों में रुकावटें आएंगी तथा स्वास्थ्य में क्षीणता उत्पन्न होगी, आलस्य बढ़ेगा, व्यर्थ की परेशानियां तथा भाग–दौड़ बढ़ेगी। अतः इस समय में ध्यान रखना उचित रहेगा।

अनुकूल दिवस

किसी भी माह के रविवार, सोमवार, शनिवार इनके लिए शुभ रहेंगे। यदि यह अपना कोई भी कार्य इन दिवसों में तथा अनुकूल तारीखों में प्रारंभ करें तो इनके लिए शुभ रहेगा।

शुभ तारीखें

उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो या पत्र लिखना हो अथवा किसी से मिलना हो, कोई नया कार्य, या व्यापार आदि प्रारंभ करने हेतु इनको किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखें अनुकूल रहेंगी। अतः यह यदि कोई कार्य इन तारीखों को ही प्रारंभ करें तो वह कार्य अधिक सुविधापूर्ण एवं शीघ्र सफल होता है।

अशुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह की 3, 5, 12, 14, 21, 23 एवं 30 दिनांक इनके लिए अशुभ फलदायी रहती है। अतः कोई भी रोजगार–व्यापार संबंधी, या अन्य कार्य, या उच्चाधिकारी, या किसी विशिष्ट अधिकारी से संबंध बनाने हेतु उपयुक्त दिनांक इनके लिए ठीक नहीं रहते।

साझेदारी मित्रता

यह अपनी मित्रता ऐसे लोगों से करें, जिनका जन्म 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28,

31 तारीखों को अथवा 16 जुलाई से 16 सितंबर के मध्य हुआ हो। इन तारीखों को जन्मे व्यक्ति इनके लिए शुभ रहेंगे। ऐसे व्यक्तियों से इनकी लंबी मित्रता रहेगी तथा इनके रोजगार–व्यवसाय में सहायक सिद्ध होते हैं।

विवाह, प्रेम संबंध

मूलांक 1, 4, या 8 से प्रभावित महिलाएं इनकी अच्छी साथी सिद्ध हो सकती हैं। उपर्युक्त मूलांक वाली महिलाओं से यह सहज ही प्रेम संबंध स्थापित कर सकते हैं तथा उसमें सफल भी हो सकते हैं। जिनका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को हुआ हो, तो वे सभी स्त्रियां सहायक एवं लाभपूर्ण रहती हैं।

अनुकूल रंग

यदि इनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, तो इनको चाहिए कि यह नीले, धूप–छांव, भूरा, मिश्रित रंग के कपड़े पहनें और हो सके तो इस रंग का रुमाल हर समय अपने पास रखें। यह रंग इनके लिए अनुकूल रहता है। हो सके तो अपने घर की दीवारों तथा पर्दों का चयन भी इन्हीं रंगों का करें। यह रंग इनके लिए शुभ फलदायक रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 5 हेतु

अनुकूल समय

दिनांक 22 मई से 21 जून एवं 24 अगस्त से 23 सितंबर तक, पाश्चात्य मत से, सूर्य मिथुन एवं कन्या राशि में रहता है तथा भारतीय मतानुसार 15 जून से 15 जुलाई तक एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर तक सूर्य मिथुन तथा कन्या राशि में रहता है। मिथुन बुध की स्वराशि तथा कन्या उच्च राशि है। अतः उपयुक्त समय मूलांक 5 वालों के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

प्रतिकूल समय

इनके लिये माह मई, सितंबर एवं दिसंबर किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने हेतु अनुकूल नहीं रहते। इन मासों में इनके कार्यो में रुकावटें आएंगी तथा स्वास्थ्य में क्षीणता उत्पन्न होगी, आलस्य बढ़ेगा, व्यर्थ की परेशानियां तथा भाग–दौड़ बढ़ेगी। अतः इस समय में ध्यान रखना उचित रहेगा।

अनुकूल दिवस

बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार के दिन यह अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य, या रोजगार–व्यापार

संबंधी कार्य प्रारंभ करें तो यह इनके लिए अच्छा रहेगा। इन दिवसों में अनुकूल तारीखें भी हों तो इनके लिए श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होती हैं।

शुभ तारीखें

अंग्रेजी के किसी भी माह की 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखें इनके लिए कोई कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहती हैं। इन तारीखों में इनके लिए अपना कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, उच्च अधिकारी या किसी विशिष्ट व्यक्ति से मिलना, पत्र लेखन इत्यादि विशेष लाभप्रद रहता है।

अशुभ तारीखें

अंग्रेजी माह की 2, 4, 11, 13, 20, 22, 29 एवं 31 तारीखों में किसी भी प्रकार का व्यापार संबंधी कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, अथवा पत्र व्यवहार संबंधी कार्य करना इनके लिए प्रतिकूल है। अतः यह इन तारीखों में कोई भी शुभ कार्य संपन्न न करें।

साझेदारी मित्रता

जिन व्यक्तियों का जन्म 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखों अथवा 15 जून से 15 जुलाई एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर के मध्य हुआ है, ऐसे व्यक्तियों से इनकी मित्रता अच्छी रहेगी तथा ये लोग रोजगार–व्यवसाय के क्षेत्र में भी इनके सफल मित्र साबित होंगे।

विवाह, प्रेम संबंध

कोई भी महिला, जिसका मूलांक 3, 5, 9 होता है तथा जिसका जन्म 3, 5, 9 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 दिनांकों में हुआ हो, वे इनके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगी तथा इन महिलाओं से यह स्नेहपूर्ण संबंध रख सकते हैं।

अनुकूल रंग

मूलांक 5 के अनुसार इनके लिए हल्का खाकी, सफेद, चमकीले उज्ज्वल रंग उत्तम रहेंगे। अतः ये इनके स्वास्थ्य आदि के लिए ठीक रहता है। हो सके तो ऐसे व्यक्ति इन रंगों का रुमाल हर समय अपने साथ रखें और यदि यह अपने ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि इसी रंग का पसंद करेंगे तो और भी अच्छा रहेता है।

मूलांक – भाग्यांक 6 हेतु

अनुकूल समय

दिनांक 21 अप्रैल से 21 मई तक तथा 24 सितंबर से 13 अक्तूबर तक सूर्य, पाश्चात्यमतानुसार, वृष तथा तुला राशि में रहता है, जो भारतीय मतानुसार, 13 मई से 14 जून तथा 17

अक्तूबर से 13 नवंबर तक का समय होता है। यह शुक्र की स्वराशि है। 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि से शुक्र उच्च का होता है। अतः उपरोक्त समय मूलांक 6 के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

प्रतिकूल समय

इनके लिए माह अप्रेल, अक्तूबर एवं नवंबर किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने हेतु अनुकूल नहीं रहते। इन मासों में इनके कार्यों में रुकावटें आएंगी तथा स्वास्थ्य में क्षीणता उत्पन्न होगी, आलस्य बढ़ेगा, व्यर्थ की परेशानियां तथा भाग–दौड़ बढ़ेगी। अतः इस समय में ध्यान रखना उचित रहेगा।

अनुकूल दिवस

शुक्रवार, मंगलवार, गुरुवार के दिन इनके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि इनकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को शुक्रवार, मंगलवार या गुरुवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन इनके लिए अधिक अनुकूल और श्रेष्ठ फलदायक रहता है।

शुभ तारीखें

इन्हे अपने उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो या पत्र लिखना अथवा किसी से मिलना, कोई नया कार्य या व्यापार आदि प्रारंभ करने हेतु इनके लिए किसी भी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखें अनुकूल रहती हैं। अतः यदि कोई कार्य इन तारीखों को ही प्रारंभ करें तो वह इनके लिए अधिक सुविधापूर्ण एवं शीघ्र सफल होगा।

अशुभ तारीखें

इनके लिए किसी भी माह की 1, 8, 10, 17, 19, 26 एवं 28 तारीखें कोई भी नया कार्य करने हेतु प्रतिकूल हो सकती हैं। अतः उपरोक्त तारीखों में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य न करें।

साझेदारी मित्रता

इनको केवल उन्हीं व्यक्तियों से अधिक मित्रता रखना चाहिए जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 29 एवं 30 तारीखों में अथवा 13 मई से 14 जून, 17 अक्तूबर से 13 नवंबर एवं 14 मार्च से 13 अप्रैल के बीच हुआ हो। ऐसे व्यक्ति सुख एवं दुःख के समय में भी अपनी मित्रता का परिचय देंगे तथा इनके रोजगार–व्यापार में भी सहायक होंगे।

विवाह, प्रेम संबंध

जिन महिलाओं का जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों को हुआ हो तथा जिनका मूलांक 3, 6, 9 हो, ऐसी महिलाएं इनके लिए प्रेम संबंध या विवाह संबंध हेतु उचित रहेंगी तथा इनके रोजगार आदि में भी इनको सफलता के शिखर पर पहुंचाएंगी।

अनुकूल रंग

इनके लिए शुभ रंग हल्का नीला, आसमानी, गहरा नीला, हल्का गुलाबी रहता है। नीला हल्का नीला होना चाहिए और हो सके तो घर की दीवारें, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप ही करें और यदि स्वास्थ्य में अच्छा परिवर्तन लाना हो तो इन्हीं रंगों के वस्त्र पहनें और हो सके तो इन्हीं रंगों में से किसी एक रंग का रुमाल हर समय अपने पास रखें, जो इनके लिए विशेष फलदायी रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 7 हेतु

अनुकूल समय

21 जून से 25 जुलाई तक, पाश्चात्य मत से, सूर्य कर्क राशि में रहता है तथा 16 जुलाई से 16 अगस्त तक, भारतीय मत से, सूर्य कर्क राशि में रहता है। इस समय जल तत्व की वृद्धि होती है। अतः उपरोक्त समय मूलांक सात वालों के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

प्रतिकूल समय

इनके लिए माह जनवरी, फरवरी, जुलाई एवं अगस्त किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने हेतु अनुकूल नहीं रहेंगे। इन मासों में इनके कार्यों में रुकावटें आएंगी तथा स्वास्थ्य में क्षीणता उत्पन्न होगी, आलस्य बढ़ेगा, व्यर्थ की परेशानियां तथा भाग–दौड़ बढ़ेगी। अतः इस समय में ध्यान रखना उचित रहेगा।

अनुकूल दिवस

रविवार, सोमवार के दिन आपके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगे। यदि आपकी अनुकूल तारीखों में से ही किसी तारीख को रविवार, सोमवार पड़ रहा हो तो ऐसा दिन आपके लिए अधिक अनुकूल और श्रेष्ठ फलदायक होगा।

शुभ तारीखें

अपने उच्च अधिकारी से मिलने जाना हो या पत्र लिखना अथवा किसी से मिलना, कोई नया कार्य या व्यापार आदि प्रारंभ करने हेतु इनके लिए किसी भी माह की 2, 6, 7, 11, 15,

16, 20, 24, 25 एवं 29 तारीखें अनुकूल रहेंगी। अतः ये यदि कोई कार्य इन तारीखों को ही प्रारंभ करें तो वह अधिक सुविधापूर्ण एवं शीघ्र सफल होगा।

अशुभ तारीखें

इनके लिए अंग्रेजी माह की 1, 9, 10, 18, 19, 27 एवं 28 तारीखें प्रतिकूल हैं। इन तारीखों में रोजगार–व्यापार संबंधी कार्य, पत्र व्यवहार या कोई भी महत्वपूर्ण कार्य प्रारंभ करना इनके लिए अनुकूल नहीं है। अतः इनको इन तिथियों के दुष्प्रभाव से बचना चाहिए।

साझेदारी मित्रता

ऐसे जातक अपनी मित्रता ऐसे व्यक्तियों से रखें जिनका जन्म 2, 6, 7, 11, 15, 16, 20, 24, 25 एवं 29 तारीखों को अथवा 16 जुलाई से 16 अगस्त के मध्य हुआ हो। ऐसे व्यक्तियों से इनकी मित्रता घनिष्ठ रहेगी तथा वे रोजगार, साझेदारी के क्षेत्र में सहायक सिद्ध होंगे। ऐसे व्यक्ति इनके लिए विश्वसनीय रहेंगे।

विवाह, प्रेम संबंध

यदि इनको प्रेम अथवा विवाह संबंधी संबंध स्थापित करना है तो इनके लिए ऐसी महिलाएं शुभ रहेंगी, जिनका मूलांक 2, 6, 7 हो तथा जिनका जन्म किसी भी माह की 2, 6, 7, 11, 15, 16, 20, 24, 25 एवं 29 तारीखों में हुआ हो। ऐसी महिलाएं इनके लिए विशेष फलदायी रहेंगी।

अनुकूल रंग

इनके मूलांक के अनुसार इनके लिए हरा, काफूरी, सफेद, हल्का तिल रंग शुभ फलदायक रहेंगे। इसलिए यह वस्त्रों के चयन के समय इन रंगों का ध्यान रखें। ये रंग इनके रोजगार–व्यवसाय तथा स्वास्थ्य के लिए भी अनुकूल रहेंगे। इन्हीं रंगों के तकिये, चादर आदि इनके लिए ठीक रहेंगे। ऐसे जातक इन रंगों का रुमाल अपने पास रखें, जो इनके स्वास्थ्य के लिए मंगलमय रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 8 हेतु

अनुकूल समय

दिनांक 23 दिसंबर से 19 फरवरी तक, पाश्चात्य मत से सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में रहता

है तथा 14 फरवरी से 13 मार्च तक भारतीय मत से सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में होता है, जो शनि की अपनी राशियां हैं तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक सूर्य तुला राशि में रहता है, जो शनि की उच्च राशि है। अतः उपरोक्त समय मूलांक आठ के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहते हैं।

प्रतिकूल समय

इनके लिये माह मार्च, जून, जुलाई एवं दिसंबर किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने हेतु अनुकूल नहीं रहेंगे। इन मासों में इनके कार्यो में रुकावटें आएंगी तथा स्वास्थ्य में क्षीणता उत्पन्न होगी, आलस्य बढ़ेगा, व्यर्थ की परेशानियां तथा भाग–दौड़ बढ़ेगी। अतः इस समय में ध्यान रखना उचित रहेगा।

अनुकूल दिवस

किसी भी माह में पड़ने वाले शनिवार, रविवार एवं सोमवार इनके लिए अनुकूल दिवस हैं। ऐसे जातक अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या रोजगार व्यापार संबंधी कार्य, विशिष्ट अधिकारी से संबंध आदि अपनी शुभ तारीखों में पड़ने वाले उपरोक्त दिवसों में ही प्रारंभ करेंगे, तो इनके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

शुभ तारीखें

इनके लिए कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार–व्यापार सम्बंधी कार्य, पत्र या दस्तावेज लिखने हेतु किसी भी अंग्रेजी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखें अधिक अनुकूल रहती हैं। अतः यह कोशिश करें कि कोई भी महत्वपूर्ण कार्य उपरोक्त तारीखों में ही संपन्न होगा तो अच्छा रहेगा।

अशुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह के दिनांक 3, 6, 12, 15, 21, 24 एवं 30, इनके लिए अनुकूल नहीं रहेंगे। इन तारीखों में यह कोई भी नया कार्य, व्यापार, पत्र लेखन एवं उच्च तथा विशिष्ट अधिकारी से मिलने का कार्य न करें।

साझेदारी मित्रता

जिन व्यक्तियों का जन्म 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को, अथवा 14 फरवरी से 13 मार्च तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर के बीच हुआ हो, ऐसे व्यक्ति इनके

लिए विशेष फलदायी रहेंगे। इनके सहयोग से इनको अच्छी उपलब्धियां प्राप्त होंगी।

विवाह, प्रेम संबंध

ऐसे जातक अपने रोजगार, व्यवसाय या प्रेम, विवाह संबंध इत्यादि में ऐसी स्त्री का चुनाव करें, जिसका मूलांक 1, 4, 8 हो तथा उसका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीख को हुआ हो। ऐसी महिलाएं इनके रोजगार, व्यवसाय तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए भी श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होंगी।

अनुकूल रंग

इनके लिए गहरा भूरा, काला, गहरा नीला, ककरेजी रंग शुभ रहेंगे। यह अपने घर के दरवाजे, पर्दे, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप करें। यदि इनका स्वास्थ्य ठीक न हो, तब ये इन्हीं रंगों के कपड़े पहनें एवं रुमाल हर समय अपने पास रखें, जिससे इनका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य करते समय भी इन्हीं रंगों के वस्त्रों को धारण करना इनके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 9 हेतु

अनुकूल समय :

दिनांक 23 मार्च से 20 अप्रैल तक एवं 24 अक्तूबर से 21 नवंबर तक, पाश्चात्य मत से, सूर्य मेष तथा वृश्चिक राशि में रहता है। भारतीय मत से यह समय 13 अप्रैल से 12 मई एवं 14 नवंबर से 14 दिसंबर होता है। मेष एवं वृश्चिक मंगल की अपनी राशियां हैं। दिनांक 14 जनवरी से 13 फरवरी तक सूर्य मकर राशि में रहता है, जो मंगल कि उच्च राशि है। अतः उपरोक्त समय मूलांक 9 के जातकों के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

प्रतिकूल समय :

इनके लिए माह जनवरी एवं जुलाई तथा 15 नवंबर से 27 दिसंबर किसी भी नये कार्य को प्रारंभ करने हेतु अनुकूल नहीं रहते। इन मासों में इनके कार्यों में रुकावटें आती हैं तथा स्वास्थ्य में क्षीणता उत्पन्न होती है। आलस्य की वृद्धि, व्यर्थ की परेशानियां तथा भाग–दौड़ रहेगी। अतः इस समय में ध्यान रखना उचित रहेगा।

अनुकूल दिवस :

मंगलवार, शुक्रवार एवं गुरुवार इनके लिए ठीक दिन रहेंगे। यह यदि किसी भी कार्य को

करते हैं, तो इन्ही दिवसों में प्रारंभ करें और यदि इन दिवसों में अनुकूल तारीखें भी आ जाएं तो श्रेष्ठ फलदायक रहता है।

शुभ तारीखें :

इनके लिए किसी भी अंग्रेजी मास की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 29 एवं 30 तारीखें अधिक अनुकूल रहती हैं। इन तारीखों में महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार, व्यापार के कार्य, अधिकारी या विशिष्ट व्यक्तियो से संबंधित कार्य अथवा पत्र इत्यादि लिखना इनके लिए अधिक उपयुक्त तथा सफलतादायक रहता है।

अशुभ तारीखें :

इनके लिए किसी भी अंग्रेजी माह की 1, 7, 10, 16, 19, 20, 25, एवं 28 तारीखें, ठीक नहीं रहती हैं। इनके लिए पत्र इत्यादि लिखना या दस्तावेज लिखने हेतु अथवा विशिष्ट अधिकारी से मिलने हेतु या कोई भी नया कार्य प्रारंभ करना हो तो इन तारीखों में प्रारंभ न करें।

साझेदारी मित्रता :

जिन व्यक्तियों का जन्म 3, 6, 9, 12, 15 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों को, अथवा 13 अप्रैल से 12 मई एवं 14 नवंबर से 14 दिसंबर तथा 14 जनवरी से 13 फरवरी के मध्य हुआ हो, ऐसे व्यक्तियों से इनकी मित्रता अच्छी रहेगी तथा रोजगार, व्यापार के क्षेत्र में भी ऐसे जातक उच्चता के शिखर पर पहुंचेंगे। ऐसे व्यक्ति इनके लिए विशेष फलदायी रहेंगे।

विवाह, प्रेम संबंध :

मूलांक 3, 6, 9 वाली महिलाएं तथा जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 दिनांकों में हुआ हो वे इनके लिए विश्वसनीय सिद्ध रहती हैं। ऐसी स्त्रियों से ही ये प्रेम अथवा विवाह संबंध स्थापित कर सकते हैं, जो इनके लिए शुभ फलदायी रहेगा।

अनुकूल रंग :

इनके लिए अनुकूल रंग गुलाबी, गहरा लाल होने के कारण इनको चाहिए कि ये अपने घर में दीवारें, खिड़कियां, पर्दे आदि का चुनाव करते समय इन रंगों को ध्यान में रखें तथा यदि इनका स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा है, तब ये इन रंगों का रुमाल बना कर अपने पास हमेशा रखें तथा कोई भी रोजगार–व्यापार संबंधी कार्य करते समय इन रंगों के वस्त्र धारण करना न भूलें, जो इनके उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा रहेगा।

9. वास्तु वाहन व्यवसाय योग

मूलांक – भाग्यांक 1 हेतु

वास्तु एवं निवास : इनके लिए ऐसे राष्ट्र, देश, प्रदेश, शहर, ग्राम, बाजार, मकान, कॉम्प्लैक्स या फ्लैट में निवास करना शुभ रहेगा, जिसका मूलांक या नामांक एक हो। पूर्व दिशा इनके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः यह अपने शहर के पूर्वी क्षेत्र में, या भवन के पूर्वी क्षेत्र में निवास करें। इनकी बैठक पूर्व दिशा की ओर होना लाभप्रद रहेगा। इनके लिए पूर्वी क्षेत्रों, पूर्वी देशों, पूर्वी स्थानों में नौकरी, रोजगार, व्यापार करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय भूरे, पीले, सुनहरे रंगों का समावेश इनके कपड़ों में होने से इनके व्यक्तित्व में निखार आएगा। भवन, वाहन, दीवारें, पर्दे, फर्नीचर इत्यादि का रंग भी यदि यह पीला, सुनहरा या भूरा रखेंगे, तो इनके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली बढ़ेगी।

वाहन, यात्रा, होटल : यदि यह वाहन आदि खरीदते हैं, तो उसके पंजीकरण के लिए नंबर इनके अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना हितकर रहेगा। इनका मूलांक 1 है। अतः इनके लिए अंक 1, 4, 8 अच्छे रहेंगे। इसलिए इनके वाहन पंजीकरण क्रमांक का योग 1, 4 या 8 रहेगा तो अधिक अच्छा रहेगा, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5230 = 1 इत्यादि। इनकी यात्रा के वाहनों के अंक भी यदि 1, 4 या 8 हैं तो इनकी यात्रा लाभप्रद रहेगी। यदि ये होटल में कमरा बुक करवाते हैं तो उसका नंबर 100 = 1 इत्यादि होगा, तब वह कमरा इनके लिए हितकर रहेगा।

स्वास्थ तथा रोग : इनका हृदय पक्ष कमजोर रहेगा तथा हृदय संबंधी कोई कष्ट इनको अधिक उम्र पर हो सकता है। रक्त संबंधी बीमारियां भी यदा – कदा हो सकती हैं। वृद्धावस्था में रक्त चाप, 'हार्टअटैक' तथा नेत्र पीड़ा जैसे रोगों की संभावना रहेगी, जिसे ये सूर्योपासना द्वारा दूर कर सकते हैं। जब भी इनके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब इनको डिप्थीरिया, अपच, रक्त दोष, गठिया, रक्तचाप, स्नायविक दुर्बलता, नेत्र पीड़ा आदि रोग होंगे। उक्त रोगों से इनको हर समय सावधान रहना चाहिए। रोग, अशुभ समय, कष्ट तथा विपत्ति के समय इनको सूर्योपासना पर बल देना चाहिए तथा रविवार के दिन, नमक रहित, एक समय भोजन करना चाहिए।

व्यवसाय : इनके लिए हुकूमत, प्रशासक, नेतृत्व, अधिकारी, आभूषण, जौहरी का कार्य, स्वर्णकारिता, विद्युत की वस्तुएं, चिकित्सा, मेडीकल स्टोर, ज्योतिष, अन्न का व्यवसाय, भूप्रबंध, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, मकानों की ठेकेदारी, राजनीतिक कार्य, शतरंज के खेल, अग्नि सेवा कार्य, सैन्य विभाग, राजदूत, प्रधान पद, जलप्रदाय विभाग, श्रमशील कार्य आदि के क्षेत्र में रोजगार–व्यापार करना लाभप्रद रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 2 हेतु

वास्तु एवं निवास : इनके लिए उत्तर–पश्चिम में वायव्य कोण स्थान में रहना शुभ रहेगा। जिस क्षेत्र में ये रहते हों, यदि वह वायव्य कोण में स्थित होगा तो अधिक अनुकूल रहेगा। मकान के नंबर का योग यदि 2, 7, या 9 आता हो, तो ऐसा भवन इनके लिए अधिक सुविधाजनक रहेगा।

वाहन, यात्रा, होटल : इनके वाहन के पंजीकरण हेतु अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों को लेना अच्छा रहेगा। इनका मूलांक 2 होने से इनके शुभ अंक 2, 7, 9 रहेंगे। ये इनके वाहन इत्यादि के पंजीकरण क्रमांक के शुभ अंक भी रहेंगे, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5231=2 इत्यादि। यात्रा के वाहनों में भी इन अंकों का उपयोग करें, जिसके फलस्वरूप इनकी यात्रा सुखमय रहेगी। अगर ये होटल आदि में कमरा इत्यादि लेते हैं तो उसके लिए भी यही नंबर 2, 7, 9 इत्यादि लें, जैसे कमरा 101 = 2। तभी इनके लिए वह कमरा अच्छा साबित होगा।

स्वास्थ तथा रोग : जब भी इनके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब इनको कमजोरी, क्षीणता, उद्वेग, मस्तक पीड़ा, छोटी–छोटी दुर्घटनाएं, हृदय रोग, संवेदन शीलता, भावुकता, स्नायु दुर्बलता, कब्ज, आंत रोग, मूत्र रोग, गैस रोग इत्यादि होंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय इनको शिव उपासना पर बल देना चाहिए।

व्यवसाय : इनके लिए रोजगार–व्यापार हेतु ये क्षेत्र अनुकूल रहेंगे, जैसे द्रव्य पदार्थ, तेलीय कार्य, समुद्र यात्रा, मुख्यावास या उच्च स्थान प्राप्ति, पशु व्यवसाय, चीनी मिल, अन्न का व्यवसाय, तैराकी, रसपूर्ण पदार्थ, दूध, दही, घृत, कागज, जल, कृषि एवं चीनी के व्यवसाय एवं औषधि विक्रेता, भ्रमण कार्य, एजेंट, प्रतिनिधित्व, संपादन, लेखन, संगीत, अभिनय, नृत्य, भूप्रबंध, मकानों की ठेकेदारी, चिकित्सा, मोती, हार, मणि, माणिक्य, रत्न इत्यादि का क्रय–विक्रय, पत्थर तथा भूगर्भ इत्यादि के कार्य।

मूलांक – भाग्यांक 3 हेतु

वास्तु एवं निवास : इनके लिए ऐसे मकान में रहना शुभ रहेगा जिसका मूलांक या नामांक 3 हो। ईशान कोण दिशा इनके लिए हमेशा शुभ रहेगी। अतः ये शहर की ईशान कोण दिशा में अपना निवास बना सकते हैं। इस दिशा में रोजगार–व्यापार संबंधी कार्य करना शुभ रहेगा। पहनने के वस्त्रों का चुनाव करते समय, भूरे, पीले, सुनहरी रंगों के होने से इनके व्यक्तित्व में निखार आएगा और यदि दीवारें, पर्दे, फर्नीचर का रंग भी ऐसा ही रखें तो इनके पारिवारिक वातावरण में खुशहाली आएगी।

वाहन, यात्रा, होटल : ऐसे जातक यात्रा के दौरान कमरा इत्यादि बुक करवाते हैं, तो इनको चाहिए कि कमरे का नंबर इनके मूलांक या मूलांक के मित्र अंक से मेल रखने वाले अंकों का रहे। इनका मूलांक 3 है। मूलांक के मित्र अंक 6, 9 रहेंगे। इनके कमरे का नंबर 102 = 3 इत्यादि होना चाहिए और यदि ये वाहन आदि का पंजीकरण इत्यादि करवाते हैं, तब उसके लिए भी शुभ अंक 5232 = 3 रहेंगे। इनके लिए यही अंक यात्रा के वाहन के रहेंगे, तो इनकी यात्रा सुखमय कहलाएगी।

स्वास्थ तथा रोग : जब भी इनके जीवन में रोग की स्थिति आएगी, तब इनको चर्म रोग, दाद, खाज, खुजली, प्रमेह, ज़हरवाद, पित्त प्रकोप, शूल रोग, स्नायु निर्बलता, मानसिक उद्वेग, गुप्तेंद्रिय शैथिल्य, भोग के प्रति अरुचि, रक्त दोष जैसे रोग होंगे। रोग, अशुभता, कष्ट और विपत्ति के समय इनको विष्णु उपासना, पूर्णिमा व्रत, सत्यनारायण व्रत कथा श्रवण करना चाहिए।

व्यवसाय : इनके लिए वस्त्र उद्योग, ढाबे, रेस्टोरेंट, होटल, पान की दुकान, अध्यापन, उपदेशक, व्याख्याता, प्राध्यापक, राजदूत, मंत्री, कानून के सलाहकार, वकील, न्यायाधीश, सचिव, दूत कार्य, क्लर्क, चिकित्सा कार्य, बैंकिंग के कार्य, दलाल, आढ़त, विज्ञापनकर्ता, अभिनेता, सेल्समैन, टाइपिस्ट, स्टेनो, जल जहाज में कार्यकर्ता, पुलिस विभाग, दर्शनशास्त्री, ज्योतिष, प्रबंधक एवं जलीय व्यापार आदि के क्षेत्र में रोजगार, व्यापार करना हितकर रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 4 हेतु

वास्तु एवं निवास : इनको चाहिए कि यदि ये भवन, कॉम्प्लेक्स का चुनाव करते

समय दिशा का चुनाव करें तो इनके लिए नैऋत्य कोण दिशा अच्छी रहेगी। इनका शयन कक्ष नैऋत्त दिशा में होने से रोजगार–व्यापार शुभ रहेगा तथा फर्नीचर आदि का रंग नीला, धूप छांव, भूरा मिश्रित रंग रखेंगे तो इनके लिए अधिक हितकर रहेगा।

वाहन, यात्रा, होटल : इनका मूलांक 4 है। मूलांक 4 के मित्र अंक 1, 8 हैं। ये अंक इनके लिए सफलता के द्योतक हैं। यदि वाहन इत्यादि खरीदते हैं तो उसका पंजीकरण क्रमांक 1, 4, 8 अंकों में से रखें। उदाहरणार्थ वाहन क्रमांक 5233 =4 इत्यादि। इनकी यात्रा का वाहन नंबर यही होने से इनकी यात्रा सफल रहेगी। अगर ये होटल में कमरा आदि बुक करवाते हैं तो उसका नंबर 103 = 4 लेना चाहिए।

स्वास्थ तथा रोग : जब भी इनके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब इनको रक्तचाप दोष या जुकाम, छूत के रोग शीघ्र होंगे। रोग होने पर, अशुभ समय आने पर, कष्ट और विपत्ति के समय यह गणेश चतुर्थी का व्रत करें तथा गजानन गणपति की उपासना करें।

व्यवसाय : इनके लिए दारु, स्पिरिट, तेल, मिट्टी का तेल, अर्क, इत्र, रेल विभाग, वायुसेना, जलदाय विभाग, कुलीगिरी, तकनीशियन, रंगसाज, अभियांत्रिकी, नक्शानवीस, दर्जी, बढ़ई का कार्य, डिजाइन के छापे का कार्य, बाबू, टेलीफोन ऑपरेटर, स्टेनो, टाइपिस्ट, शिल्पकार, पत्रकार, संग्रहकर्ता, विद्युत कार्य, वक्ता, उपदेशक, राज्य कर्मचारी, खनिज मजदूर, ठेकेदार, मोटर चालक आदि के क्षेत्र में रोजगार–व्यापार करना हितकर रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 5 हेतु

वास्तु एवं निवास : इनके लिए उपयुक्त दिशा उत्तर है। इसलिए इनके लिए ऐसा मकान, या फ्लैट शुभ रहेगा जिसका मूलांक तथा नामांक 5 हो। उत्तर दिशा इनके लिए हमेशा शुभ रहेगी। यह अपने घर की बैठक उत्तर दिशा में ही करें एवं घर के फर्नीचर आदि का रंग खाकी, सफेद चमकीला होना चाहिए, जो इनके लिए अच्छे फल देने वाले होंगे।

वाहन, यात्रा, होटल : अगर ये स्वयं का वाहन खरीदना चाहते हैं तो उसके लिए पहले अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करने वाले अंकों के अनुसार पंजीकरण क्रमांक लेना इनके लिए हितकर रहेगा। इनका मूलांक 5 है एवं मित्रांक 3 एवं 9 हैं। अतः इनके लिए शुभ पंजीकरण क्रमांक 5234 = 5 आदि होना चाहिए। इनके

होटल के कमरे का नंबर 104 = 5 इत्यादि हो, तभी इनके लिए यह शुभ फलदायक रहेगा।

स्वास्थ तथा रोग : जब भी इनके जीवन में रोग की स्थिति आती है, ये चर्म रोग, स्नायु निर्बलता, मानसिक चिंता, दुर्बलता, शारीरिक कमजोरी तथा मानसिक दुर्बलता से ग्रसित हो जाते हैं। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय विष्णु की पूजा, पूर्णिमा का व्रत करके, केले का प्रसाद लें।

व्यवसाय : इनके लिए तार और टेलीफोन विभाग, ज्योतिष, सेल्समैन, डाकघर, पोस्टमैन, बीमा विभाग, बैंकिंग, बजट निर्माण, रेलवे इंजीनियरी, संपादक, तंबाकू व्यवसाय, रेडियो व्यवसाय, लेखक, पत्रकार, अनुवादक, राजनीति संबंधी कार्य, मुद्रणालय, संचार व्यवस्था, पुस्तक विक्रेता, पुस्तकालय, लाइब्रेरियन, यातायात संबंधी कार्य, इतिहास, खोज एवं पुरातत्व विभाग, आविष्कारक, मुनीम, पर्यटक एवं बुद्धि बल के समस्त कार्य आदि के क्षेत्र में रोजगार–व्यापार करना अधिक लाभप्रद रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 6 हेतु

वास्तु एवं निवास : यदि ऐसे जातक स्वयं का भवन निर्माण करने के इच्छुक हैं तो इसके लिए आवश्यक है कि ये सही दिशा का चयन करें। इनके लिए अग्नि कोण दिशा उत्तम रहेगी। मकान क्रमांक 3, 6, 9 हो तो श्रेष्ठ रहेगा। ये शहर के अग्नि कोण क्षेत्र या भवन के अग्नि कोण क्षेत्र में निवास करें। वह इनके लिए उत्तम रहेगा। अतः यह अपने रोजगार संबंधी कार्यों को करते समय भी इन्हीं दिशाओं का चुनाव करें, जो इनके लिए श्रेष्ठ फलदायक रहेगा। भवन का रंग, फर्नीचर का रंग हल्का नीला, आसमानी रखना श्रेष्ठ रहेगा।

वाहन, यात्रा, होटल : यदि यह चाहते हैं कि इनकी यात्रा मंगलमय हो, तो यात्रा के समय उन्हीं अंकों का चुनाव करें, जो इनके मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करें। मूलांक 6 के मित्र अंक 3, 9 हैं। अतः ये यात्रा वाहन, रेलवे सीट में इन्हीं अंकों का चुनाव करें और रहने के लिए कमरे का चयन करते समय नंबर 105 = 6 आदि होना उचित है। अगर ये स्वयं का वाहन खरीदते हैं, तो उसका पंजीकरण क्रमांक 3, 6 एवं 9 ही होने चाहिएं, जैसे अंक 5235 = 6 इत्यादि। ऐसा वाहन इनको अच्छा फलेगा।

स्वास्थ तथा रोग : जब भी इनके जीवन में रोग की स्थिति आएगी, इनको फेफड़ों से संबंधित रोग, धातु क्षीणता, स्नायु निर्बलता, सीने की कमजोरी, मूत्र रोग, कफ जनित

रोग, कब्जियत तथा जुकाम जैसे रोग पीड़ा प्रदान करेंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय इनको कार्त्तवीर्याजुन की पूजा एवं उपासना करनी चाहिए। स्त्री जातकों को संतोषी माता का व्रत करना चाहिए।

व्यवसाय : इनके लिए रेस्टोरेंट, होटल, ढाबे, भोजनालय, शिल्पकार, डिजायनर, महाजनी कार्य, संगीतज्ञ, उपन्यासकार, नाट्यकार, कहानीकार, बागवानी, वस्त्र व्यवसायी, अभिनेता, इत्र, तेल और अन्य तेलीय पदार्थो के विक्रेता, पुष्प विक्रेता, वस्त्राभूषण व्यवसाय, रेशम, टेरीलीन, टेरीन, ऊनी वस्त्रादि के विक्रेता, मिष्ठान व्यवसाय, घड़ीसाजी, नृत्याभिनय और काव्य तथा साहित्योपार्जन, ज्योतिष, सार्वजनिक कार्य, समाज सेवा, दास वृत्ति, यातायात, मुद्रणालय, खाद्य विभाग संबंधी समस्त कार्य आदि के क्षेत्र में रोजगार व्यापार करना अधिक लाभप्रद रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 7 हेतु

वास्तु एवं निवास : इनको ऐसा भवन, जिसका मूलांक या नामांक 7 हो तथा वह नैऋत्य कोण दिशा में स्थित हो, शुभ रहेगा। यदि ये मकान बनवाते हैं, या खरीदने के इच्छुक हैं, तो इनके लिए नैऋत्य कोण दिशा उपयुक्त रहेगी तथा यह अपने सभी आवश्यक कार्य इसी दिशा की ओर करें। अपने घर का फर्नीचर काफूरी, सफेद, हल्के नीले रंग का खरीदेंगे तो पूर्ण फलदायी रहेगा।

वाहन, यात्रा, होटल : यदि ये स्वयं का वाहन आदि खरीदने के इच्छुक हैं, तो उसके पंजीकरण के लिए इनके अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करने वाले अंक ही अच्छे रहेंगे। इनका मूलांक 7 है, तब इनके लिए शुभ अंक 2, 6, 7 हो, तो अच्छा रहेगा, जैसे पंजीकरण क्रमांक 5236 =7 इत्यादि। यात्रा के वाहन, सीट क्रमांक के अंक भी यही होंगे, तो इनकी यात्रा सफल रहेगी। यदि ये होटल में कमरा बुक करते हैं, तब नंबर 106 = 7 आदि अंकों का चयन ही करें। यही इनके लिए हितकर रहेगा।

स्वास्थ तथा रोग : जब भी इनके जीवन में रोग की स्थिति आती है, तब इनको पेट दर्द, छूत के रोग, पसीने की अधिकता तथा दुर्गंध, आमाशय दोष, कब्जियत, नींद न आना, भूख न लगना, गुप्तांग संबंधित रोग, वात तथा गठिया इत्यादि रोग होते हैं। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय इनको नृसिंह भगवान की पूजा एवं पासना करनी चाहिए।

व्यवसाय : इनके लिए तैराकी, अभिनय, फिल्म व्यवसाय, वायु सेवा, पर्यटन, ड्राइवर का कार्य, बाबूगिरी, जल जहाज के कार्य, पत्रकारिता, संपादन कार्य, रबर, टायर, ट्यूब, प्लास्टिक वर्क, ललित कला संबंधी कार्य, राज्याधिकारी, जासूसी, तरल पदार्थों का क्रय–विक्रय, जादू के कार्य, ज्योतिष, कूटनीतिक कार्य, नियंत्रक, भूमिगत पदार्थों का व्यवसाय एवं ट्रांसमीटर, रेडियो, अनुवादक आदि के कार्य क्षेत्र में रोजगार–व्यापार करना हितकर रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 8 हेतु

वास्तु एवं निवास : यह अपने लिए कॉम्पलेक्स, फ्लैट या मकान का चुनाव पश्चिम दिशा में करें। इनका मूलांक 8 होने से इनके लिए पश्चिम दिशा उपयुक्त रहेगी तथा भवन क्रमांक का योग 8 हो तो अच्छा रहेगा। अतः ये इस दिशा में फ्लैट या मकान खरीद सकते हैं। यह चाहें तो शहर में पश्चिम दिशा या भवन के पश्चिम क्षेत्र में निवास करें। ऐसा करना इनके लिए लाभकारी रहेगा तथा अपने आवश्यक कार्य भी इसी दिशा की ओर बैठ कर संपन्न करेंगे तो लाभ होगा।

वाहन, यात्रा, होटल : इनके मूलांक 8 के 1 ओर 4 मित्र हैं। अतः जब भी ये कोई नया वाहन इत्यादि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण का योग इन्हीं अंकों में से एक होना इनके लिए लाभप्रद रहेगा। उदाहरणार्थ वाहन पंजीकरण क्रमांक 5237 = 8। यदि वाहन में यात्रा करते हैं, तब भी इनके लिए शुभ अंक 1, 4, 8 ही रहेंगे और यदि होटल में कमरा आदि बुक करवाते हैं, तब उसके लिए कमरा नंबर 107 = 8 का चयन करना ही उचित रहेगा।

स्वास्थ तथा रोग : जब भी इनके जीवन में रोग की स्थिति आएगी, तब इनको वायु रोग, वात रोग, शारीरिक क्षीणता, अंध रोग, हृदय की कमजोरी, रक्त की कमी, मलबद्धता, कब्जियत, गठिया, रक्तचाप, सिर की पीड़ा, कुष्ठ रोग, मूत्र के रोग, गंजापन तथा कान–नाक में पीड़ा होगी। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय इनको शनि की पूजा एवं आराधना करनी चाहिए।

व्यवसाय : इनके लिए कसरत, खेल–कूद, कूद–फांद, पुलिस और सैन्य विभाग, ठेकेदारी, टीन चद्दर आदि का कार्य, कुलीगिरी, लद्यु उद्योग, वकालत, ज्योतिष कार्य, वैज्ञानिक कार्य, मुर्गी पालन, बागबानी, कोयला और लकड़ी का व्यवसाय, घड़ीसाज, न्याय वेत्ता, नेतृत्व,

नीति निर्धारक, धर्म–कर्म, यज्ञादि कर्त्ता, अध्यापन, संगीतज्ञ आदि कार्य के क्षेत्र रोजगार–व्यापार हेतु अधिक उपयुक्त रहेंगे।

मूलांक – भाग्यांक 9 हेतु

वास्तु एवं निवास : इनके लिए दक्षिण दिशा उत्तमकारी है। अतः इनके लिए मकान या कॉम्पलेक्स वही शुभ रहेगा जो दक्षिण में स्थित हो। अतः ये शहर की दक्षिण दिशा या भवन की दक्षिण दिशा का चुनाव कर सकते हैं एवं रोजगार–व्यापार की बैठक भी दक्षिण दिशा में रख सकते हैं, जो इनके उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा रहेगा। भवन के फ्लैट का क्रमांक का योग 3, 6 या 9 रखना लाभप्रद रहेगा।

वाहन, यात्रा, होटल : नये वाहन का पंजीकरण क्रमांक इनके मूलांक 9 या मूलांक के मित्र अंक 6 तथा 3 में से कोई एक लेना हितकर रहेगा, जैसे वाहन पंजीकरण क्रमांक 5238 = 9 इत्यादि होना चाहिए। यदि ये होटल में कमरा आदि बुक करते हैं, तो उसके लिए अंक 108 = 9 होना इनके लिए हितकर रहेगा अथवा ये वाहन द्वारा यात्रा करते हैं, तो सीट इत्यादि क्रमांक इनके मूलांक या मित्र अंक भाग्यशाली अंक साबित होंगे। इन्हीं शुभ अंकों के प्रभाव से ही इनकी यात्रा सफल हो सकती है।

स्वास्थ तथा रोग : जब भी इनके जीवन में रोग की स्थिति आएगी, तब इनको क्रोध, झल्लाहट, दुर्घटना, चोट, अंग शैथिल्य, हृदय रोग, रक्तचाप इत्यादि पीड़ा देंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय ऐसे जातक हनुमान जी की उपासना तथा आराधना करें, मंगलवार का व्रत करें और एक समय भोजन करें।

व्यवसाय : इनके लिए संगठन, संघ संचालक, नियंत्रक, चिकित्सा, ज्योतिष, धर्मोपदेशक, सैन्य विभाग, गोला–बारूद, आतिशबाजी का व्यवसाय, वकालत, औषधि विक्रेता, लौह तथा अन्य धातु संबंधी कार्य अथवा प्रभुता संबंधित कार्य करना अनुकूल रहेगा।

10. अनुकूल रत्न, जड़ी, हर्बलस्नान एवं दान

मूलांक – भाग्यांक 1 के लिए

अनुकूल रत्न

माणिक इनका प्रधान रत्न है। माणिक के अभाव में गारनेट, तामड़ा, लालड़ी, सूर्यमणि या लाल हकीक शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, सोने की अंगूठी में, लगभग पांच रत्ती का, दायें हाथ की अनामिका उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ, धारण करें।

जड़ी बूटी धारण

ऐसे जातक रविवार के दिन बिल्वपत्र की एक इंच लंबी जड़ ला कर, गुलाबी धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे, अथवा स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे सूर्य ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

हर्बल (औषधि) स्नान

इनके लिए प्रत्येक रविवार को, एक बाल्टी या बर्तन में कनेर, दुपहरिया, नागरमोथा, देवदारू, मैनसिल, केसर, इलायची, पद्माख, महुआ के फूल, सुगंध बाला आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से इनकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ सूर्य का प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्रदान करेगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वोषधि तथा लोध, इन सबको मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें, तो सभी ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

सूर्य की शांति हेतु योग्य व्यक्ति को सूर्य के पदार्थ गेहूं, गुड़, रक्त चंदन, लाल वस्त्र, सोना, माणिक्य आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 2 के लिए

अनुकूल रत्न

पांच रत्ती का मोती इनका प्रमुख रत्न है। यदि यह मोती धारण न कर सकें तो मून स्टोन, चंद्रमणि, दूधिया हकीक, सोमवार की सुबह दायें हाथ की कनिष्ठा अंगुलि में, चांदी की अंगूठी में जड़वा कर, लाभ के चौघड़िया मूहूर्त में धारण करें।

जड़ी बूटी धारण

सोमवार के दिन एक इंच लंबी खिरनी की जड़ ला कर, सफेद ऊन के धागे में लपेट कर, गले या दाहिने हाथ में बांधें, चांदी या गिलट के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे चंद्र ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

हर्बल (औषधि) स्नान

इनको प्रत्येक सोमवार को एक बाल्टी या बर्तन में पंचगव्य, चांदी, मोती, शंख, सीप और कुमुद आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से इनकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ चंद्र का प्रभाव क्षीण हो कर इनके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ देगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए इनको कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वोषधि तथा लोध, इन सबको मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें, तो सभी ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

चंद्र की शांति हेतु योग्य व्यक्ति को चंद्र के पदार्थ, चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चांदी, शंख, वंशपात्र, सफेद चंदन, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, दधि, मोती आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 3 के लिए

अनुकूल रत्न

पुखराज इनके लिए मुख्य रत्न है। यदि पुखराज न मिले तब ये सुनेला, टाईगर आई, पीला हकीक धारण कर सकते हैं। इसे सोने की अंगूठी में चार से पांच रत्ती का बनवा कर, दायें हाथ की तर्जनी उंगली को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

जड़ी बूटी धारण

गुरुवार के दिन एक इंच लंबी नारंगी या केले की जड़ ला कर, पीले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या स्वर्ण अथवा पीतल के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे गुरु ग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

हर्बल (औषधि) स्नान

इनके लिए प्रत्येक गुरुवार को एक बाल्टी या बर्तन में मुलेठी, सफेद सरसों तथा मालती के फूल आदि औषधियों का चूर्ण कर पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से इनकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ गुरु का प्रभाव क्षीण हो कर इनके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ देगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए ऐसे जातक कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वोषधि तथा लोध इन सबको मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें, तो सभी ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

गुरु की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को गुरु के पदार्थ, पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीले पुष्प, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि, छत्र आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 4 हेतु

अनुकूल रत्न

ऐसे जातक चांदी की अंगूठी में सात से ग्यारह रत्ती का गोमेद बनवा कर शनिवार के दिन धारण करें। गोमेद के न मिलने पर ये कत्थई या काला–लाल हकीक भी पहन सकते हैं। इसे शुक्ल पक्ष में शनिवार के दिन, दायें हाथ की मध्यमा उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

जड़ी बूटी धारण

शनिवार के दिन एक इंच लंबी सफेद चंदन की जड़ ला कर, नीले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या त्रिधातु या लोहे के ताबीज में भर कर, गले में धारण करें। इससे हर्षल/राहु के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

हर्बल (औषधि) स्नान

इनके लिए प्रत्येक शनिवार को एक बाल्टी या बर्तन में नागबेल, लोबान, तिल के पत्र, बचा, गडूची और तगर आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से इनकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ राहु/हर्षल के प्रभाव क्षीण हो कर इनके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए इनको कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वोषधि तथा लोध इन सबको मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए, स्नान करें, तो सभी ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

राहु की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को राहु के पदार्थ–अभ्रक, लौह, तिल, नीला वस्त्र, छाग, ताम्र पात्र, सप्त धान्य, उड़द, गोमेद, काले पुष्प, तेल, कंबल, घोड़ा, रबड़ आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 5 हेतु

अनुकूल रत्न

इनके लिए पन्ना शुभ रत्न है। उसके न मिलने पर उपरत्न मरगज, ओनेक्स, ग्रीन पेरीडॉट धारण करें। इसे सोने या चांदी की अंगूठी में तीन से छह रत्ती का जड़वा कर, बुधवार के दिन, शुक्ल पक्ष में, दायें हाथ की कनिष्ठा उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

जड़ी बूटी धारण

बुधवार के दिन विधारा की एक इंच लंबी जड़ ला कर, हरे धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या सोने या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे बुधग्रह के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

हर्बल (औषधि) स्नान

इनके लिए प्रत्येक बुधवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, गोमय, चावल, गोरोचन, स्वर्ण, आंवला और मधु आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से इनकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ बुध का प्रभाव क्षीण हो कर इनके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त

होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वोषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए, स्नान करें, तो सभी ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

बुध की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को बुध के पदार्थ, कांसा, हाथी दांत, हरा वस्त्र, मूंगा, पन्ना, सुवर्ण, कपूर, शास्त्र, फल, षड्रस भोजन, घृत, सर्व पुष्प आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 6 हेतु

अनुकूल रत्न

ऐसे जातक हीरा धारण करें। यदि यह हीरा नहीं खरीद सकते तो ओपल, सफेद पुखराज, झरकन धारण करें। इक्यावन सेंट का हीरा शुक्ल पक्ष में, शुक्रवार के दिन, लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, प्लेटिनम या चांदी की अंगूठी में, दायें हाथ की अनामिका उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

जड़ी बूटी धारण

शुक्रवार के दिन एक इंच लंबी सरफोंखा की जड़ लाकर सफेद धागे में लपेटकर दाहिने हाथ में बांधे या प्लैटिनम या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे शुक्र के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

हर्बल (औषधि) स्नान

इनके लिए प्रत्येक शुक्रवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, आंवला, इलायची, केसर और मैनसील आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से इनकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ शुक्र के प्रभाव क्षीण हो कर इनके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए इनको कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वोषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें, तो सभी ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

शुक्र की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शुक्र के पदार्थ, चांदी, सोना, चावल, घी,

सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, हीरा, सफेद अश्व, दही, गंध द्रव्य, चीता, गौ, भूमि आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 7 हेतु

अनुकूल रत्न

इनके लिए लहसुनिया प्रमुख रत्न है। इसके न मिलने पर यह पीला हकीक भी धारण कर सकते हैं। इसे शुक्ल पक्ष में, शनिवार के दिन, शुभ चौघड़िया मुहूर्त में, चांदी की अंगूठी में तीन से पांच रत्ती के लगभग, दाहिने हाथ की कनिष्ठा उंगली में, त्वचा को स्पर्श करते हुए धारण करें।

जड़ी बूटी धारण

बुधवार के दिन एक इंच लंबी असंगध की जड़ ला कर, आसमानी धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे नेपच्यून/केतु के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

हर्बल (औषधि) स्नान

इनको प्रत्येक बुधवार को एक बाल्टी या बर्तन में सहदेई, लज्जालु (लोबान), बला, मोथा, प्रियंगु और हिंगोठ आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से इनकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ केतु/नेपच्यून के प्रभाव क्षीण हो कर इनके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए यह कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वोषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें, तो सभी ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

केतु की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को केतु के पदार्थ कस्तूरी, तिल, छाग, काला वस्त्र, ध्वजा, सप्तधान्य, कंबल, उड़द, वैदूर्य मणि, काले पुष्प, तेल, सुवर्ण, लोहा, शस्त्र आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 8 हेतु

अनुकूल रत्न

इनके लिए नीलम सबसे अधिक लाभकारी रहेगा। इसके न मिलने पर बैंकॉक नीलम्,

लाजवर्त, काका नीली इत्यादि धारण कर सकते हैं। इसे शनि के रोज, शुक्ल पक्ष में, चौघड़िया मुहूर्त में, त्रिधातु या चांदी की अंगूठी में सवा तीन से सवा पांच रत्ती का नीलम बनवा कर दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली की त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें। यह इनके लिए शुभ फलदायक रहेगा।

जड़ी बूटी धारण

शनिवार के दिन एक इंच लंबी विच्छु की जड़ ला कर, काले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या शीशे या लोहे के ताबीज में भर कर गले मे धारण करें। इससे शनि के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावो में वृद्धि होगी।

हर्बल (औषधि) स्नान

इनके लिए प्रत्येक शनिवार को एक बाल्टी या बर्तन में सुरमा, काले तिल, सौंफ, नागरमोथा और लोध आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से इनकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ शनि के प्रभाव क्षीण हो कर इनके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए यह कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वोषधि तथा लोध को मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए, स्नान करें तो सभी ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

शनि की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शनि के पदार्थ तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, कुलथी, काली गौ, काले पुष्प, जूता, कस्तूरी, सुवर्ण आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

मूलांक – भाग्यांक 9 हेतु

अनुकूल रत्न :

ऐसे जातक मूंगा धारण करें। इसके न मिलने पर संगसितारा, लाल हकीक, लाल मून स्टोन धारण कर सकते हैं। इसे मंगलवार के दिन, शुक्ल पक्ष में, शुभ चौघड़िया मूहूर्त में, तांबा, सोना, मिश्रित धातु या चांदी में छह से नौ रत्ती का मूंगा बनवा कर, दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में त्वचा को स्पर्श करते हुए धारण करें।

जड़ी–बूटी धारण :

मंगलवार के दिन एक इंच लंबी अनंतमूल की जड़ ला कर, लाल धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे मंगल के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

हर्बल (औषधि) स्नान :

इनके लिए प्रत्येक मंगलवार को एक बाल्टी या बर्तन में सौंठ, सौंफ, लाल चंदन, सिंगरफ, माल कांगनी और मौलसरी के फूल आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से इनकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ मंगल के प्रभाव क्षीण हो कर इनके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए इनको कूठ्ठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वोषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए, स्नान करें तो सभी ग्रहों की शांति और सुख–समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ :

मंगल की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को मंगल के पदार्थ–तांबा, सोना, गेहूं, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चंदन, लाल पुष्प, केसर, कस्तूरी, लाल वृषभ, मसूर की दाल, पृथ्वी, विद्रुम आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

11. पूजा उपासना द्वारा उपचार

यहाँ पर 1 से 9 तक के मूलांक एवं भाग्यांक वाले जातकों के लिए पूजा उपासना, मंत्र आदि द्वारा ग्रह कष्ट निवारण एवं ग्रहों को अनुकूल बनाए रखने के उपचार दिये जा रहे हैं।

मूलांक – भाग्यांक 1 हेतु

अनुकूल देवता

मूलांक एक के जातक सूर्योपासना करें तथा उगते हुए सूर्य का दर्शन करते हुए, नित्य एक लोटा अर्घ्य जल, रोली, चावल जल में डाल कर ग्यारह या इक्कीस बार सूर्य गायत्री मंत्र का जप करते हुए, सूर्य भगवान को प्रदान करें। सूर्य जीवनदाता है। अतः इस क्रिया को करने पर इन्हे विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्ति मिलेगी। यदि यह संभव न हो सके तो माणिक जड़ित स्वर्ण अंगूठी के नित्य प्रातः दर्शन किया करें।

व्रतोपवास

इनके लिए रविवार का व्रत रखना लाभप्रद एवं रोग मुक्तिकारक रहेगा। एक समय भोजन करें । भोजन के साथ नमक का सेवन न करने से यह विशेष फलदायक रहता है। व्रत के दिन भोजन करने से पूर्व प्रातः स्नान के पश्चात सुगंधित अगरबत्ती जला कर 'आदित्य हृदय स्तोत्र' का पाठ करें। तब इनको स्वयं अनुभव होगा कि ये विभिन्न बाधाओं से मुक्त हो रहे हैं एवं बीमारियां इनसे दूर रहेंगी। यह व्रत एक वर्ष, तीस या बारह रविवारों को करें। व्रत के दिन लाल वस्त्र धारण करें, सूर्य गायत्री मंत्र से सूर्य को अर्घ्य दें। तांबे का अर्घ्य पात्र लें। उसमें जल भरें। जल में लाल चंदन, रोली, चावल, लाल फूल एवं दूब डाल कर, सूर्य भगवान का दर्शन करते हुए, अर्घ्य प्रदान करें। पश्चात् सूर्य के मंत्र का यथाशक्ति, सूर्य मणि माला पर जप करें।

गायत्री मंत्र

इनके लिए सूर्य के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु सूर्य के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

ऊँ आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।

ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर ऐसे जातक सूर्य का ध्यान करें, मन में सूर्य की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महा द्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

ग्रह मंत्र

अशुभ सूर्य को अनुकूल बनाने हेतु सूर्य के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान साठ माला का है।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।। जप संख्या 6000।।

ग्रह यंत्र

सूर्य को अनुकूल बनाए रखने हेतु निम्न यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या लाल धागे में, रविवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

मूलांक – भाग्यांक 2 हेतु

अनुकूल देवता

ऐसे जातक चंद्रोपासना करें अथवा भगवान शिव की आराधना करें। भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र 'ओम् नमः शिवाय' का नित्य जप करें। प्रति सोमवार को कम से कम इक्कीस या एक सौ आठ बेल पत्री भगवान शिव को अर्पित करेंगे तो इस क्रिया को करने पर ये विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान शिव के चित्र का नित्य प्रातः दर्शन करें।

व्रतोपवास

जिस दिन सोमवार को चित्रा नक्षत्र हो उस दिन से चंद्रमा का व्रत प्रारंभ करें। विधान के अनुसार चव्वन सोमवार तक अथवा न्यूनतम सात सोमवार व्रत आवश्यक है। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करें एवं श्वेत वस्तुओं का दान करें तथा चंद्रमा के मंत्र का यथा–शक्ति, मोती की माला पर जप करें।

गायत्री मंत्र

इनके लिए चंद्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु चंद्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

ऊँ अमृतांगाय विद्महे कला–रूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।।

ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर ये चंद्र का ध्यान करें, मन में चंद्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोमुकुटभूषणम्।।

ग्रह मंत्र

अशुभ चंद्र को अनुकूल बनाने हेतु चंद्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सो तीस माला का है।

ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः।। जप संख्या 13000।।

ग्रह यंत्र

चंद्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु निम्न यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, चांदी या गिलट के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, चांदी की जंजीर या लाल धागे में, सोमवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

मूलांक – भाग्यांक 3 हेतु

अनुकूल देवता

ऐसे जातक बृहस्पति ग्रह की उपासना करें अथवा विष्णु भगवान की आराधना करें। भगवान विष्णु के द्वादशाक्षरी मंत्र 'ओम् नमो भगवते वासुदेवाय' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णमासी के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो इस क्रिया को करने पर ये विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान विष्णु के चित्र का नित्य प्रातः दर्शन करें।

व्रतोपवास

बृहस्पतिवार को बृहस्पति अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। बृहस्पतिवार को पीले वस्त्र धारण कर व्रत करें। पीला भोजन ग्रहण करें एवं पीले पदार्थों का दान करें। यह व्रत तीन वर्ष, एक वर्ष या सोलह बृहस्पतिवारों को करें। यथाशक्ति पुत्रजीवी की माला पर गुरू मंत्र का जप करें।

गायत्री मंत्र

इनके लिए गुरु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेत गुरु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

ऊँ अंगिरसाय विद्महे दिव्य–देहाय धीमहि तन्नौः जीवः प्रचोदयात्।।

ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर ऐसे जातक गुरु का ध्यान करें, मन में गुरु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

ग्रह मंत्र

अशुभ गुरु को अनुकूल बनाने हेतु गुरु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान सौ माला का है।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।। जप संख्या 10000।।

ग्रह यंत्र

गुरु को अनुकूल बनाये रखने हेतु निम्न यंत्र को भोज पत्र पर अष्ट गंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या पीतल के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में गुरुवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

मूलांक – भाग्यांक 4 हेतु

अनुकूल देवता

ऐसे जातक राहु ग्रह की उपासना करें अथवा गणेश भगवान की आराधना करें। भगवान गणेश के अट्ठाईसाक्षरी मंत्र 'ओम् श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजन मे वशमानय स्वाहा' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा चतुर्थी के दिन व्रत करें एवं भगवान गणेश को मोदक भोग लगाएं। इस क्रिया को करने पर ये विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि ऐसा संभव न हो सके तो भगवान गणेश के चित्र का नित्य प्रातः दर्शन करें।

व्रतोपवास

शनिवार को हर्षल अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्यावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तैल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। राहु मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

गायत्री मंत्र

इनके लिए राहु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु राहु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

राहु गायत्री मंत्र–ऊँ शिरो–रूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नौः राहुः प्रचोदयात्।।

ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर ऐसे जातक राहु का ध्यान करें, मन में राहु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

अर्धकायं महावीर्य चंद्रादित्यविमर्दनम्।

सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह मंत्र

अशुभ राहु को अनुकूल बनाने हेतु राहु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ अस्सी माला का हैं।

ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।। जप संख्या 18000।।

ग्रह यंत्र

राहु को अनुकूल बनाए रखने हेतु निम्न यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर,

चांदी या तांबे के ताबीज में, धूप दीप से पूजन कर, चांदी की जंजीर या काले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

मूलांक – भाग्यांक 5 हेतु

अनुकूल देवता

मूलांक 5 के जातक बुध ग्रह की उपासना करें। भगवान लक्ष्मी नारायण की आराधना करें। भगवान लक्ष्मी नारायण के चतुर्दशाक्षरी मंत्र 'ओम् ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी वासुदेवाय नमः' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो ये विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त रहेंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान लक्ष्मी नारायण के चित्र का नित्य प्रातः दर्शन करें।

व्रतोपवास

बुधवार को बुध अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। पैंतालीस या सत्रह बुधवारों को यह व्रत करें। हरे रंग के कपड़े पहनें एवं हरे पदार्थों का दान करें। तुलसी के पत्ते खाना एवं चढ़ाना लाभप्रद रहता है। पन्ना या मरगज की माला पर बुध मंत्र का जप करें।

गायत्री मंत्र

इनके लिए बुध के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु बुध के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

बुध गायत्री मंत्र ऊँ सौम्य–रूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नौः सौम्यः प्रचोदयात्।।

ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर ऐसे जातक बुध का ध्यान करें, मन में बुध की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणांप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह मंत्र

अशुभ बुध को अनुकूल बनाने हेतु बुध के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान नब्बे माला का है।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।। जप संख्या 9000।।

ग्रह यंत्र

बुध को अनुकूल बनाए रखने हेतु निम्न यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, बुधवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

मूलांक – भाग्यांक 6 हेतु

अनुकूल देवता

मूलांक 6 के जातक शुक्र ग्रह की उपासना करें अथवा भगवती दुर्गा की आराधना करें। भगवती दुर्गा के अष्टाक्षरी मंत्र 'ओम् ह्रीं दुं दुर्गायै नमः' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा अष्टमी के दिन व्रत करें एवं दुर्गा सप्तशती का पाठ करेंगे तो इन्हे विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्ति मिलेगी। यदि यह संभव न हो सके तो भगवती दुर्गा के चित्र का नित्य प्रातः दर्शन करें।

व्रतोपवास

शुक्रवार को शुक्र अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। इकतीस या इक्कीस शुक्रवारों को शुक्र का व्रत करें। सफेद वस्त्र धारण करें एवं सफेद वस्तुओं का दान करें। यथाशक्ति शुक्र मंत्र का स्फटिक माला पर जप करें।

गायत्री मंत्र

इनके लिए शुक्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु शुक्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शुक्र गायत्री मंत्र – ऊँ भृगुजाय विद्महे दिव्य–देहाय धीमहि तन्नौः शुक्रः प्रचोदयात्।।

ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर ये जातक शुक्र का ध्यान करें, मन में शुक्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

हिमकुंदमृणालाभं दैत्यानां परम गुरुम्।

सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह मंत्र

अशुभ शुक्र को अनुकूल बनाने हेतु शुक्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ साठ माला का हैं।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।। जप संख्या 16000।।

ग्रह यंत्र

शुक्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु निम्न यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या लाल धागे में, शुक्रवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

मूलांक – भाग्यांक 7 हेतु

अनुकूल देवता

ऐसे जातक केतु ग्रह की उपासना करें अथवा नृसिंह भगवान की आराधना करें। नृसिंह भगवान के मंत्र 'ओम् ह्रीं उग्रं वीरं महा विष्णुं ज्वलंत सर्वतोमुखं नृसिंह भीषणं भद्र मृत्युं मृत्युं नमाम्यहं ह्रीं' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो ये विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त रहेंगे। यदि यह संभव न हो सके तो नृसिंह भगवान के चित्र का नित्य प्रातः दर्शन करें।

व्रतोपवास

शनिवार को नेपच्यून अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले या नीले वस्त्र धारण कर इक्यावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तेल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। केतु मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

गायत्री मंत्र

इनके लिए केतु के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु केतु के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

केतु गायत्री मंत्र ऊँ पद्यं–पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नौः केतुः प्रचोदयात्।।

ध्यान मंत्र प्रातःकाल उठ कर ऐसे जातक केतु का ध्यान करें, मन में केतु की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह मंत्र

अशुभ केतु को अनुकूल बनाने हेतु केतु के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ सत्तर माला का हैं।

ऊँ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।। जप संख्या 17000।।

ग्रह यंत्र

केतु को अनुकूल बनाए रखने हेतु निम्न यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले या काले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

मूलांक – भाग्यांक 8 हेतु

अनुकूल देवता

मूलांक 8 प्रभावित जातक शनि ग्रह की उपासना करें अथवा इनके लिए बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहेगा। ये नित्य रुद्राक्ष की माला पर बटुक भैरव के मंत्र का एक सौ आठ बार जप किया करें। इससे इनकी सभी समस्याएं, रोग इत्यादि दूर होंगे। बटुक भैरव का मंत्र इस प्रकार है– 'ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु–कुरु बटुकाय ह्रीं'। यह इक्कीस अक्षर का मंत्र सर्वसिद्धिदाता है। कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहता है।

व्रतोपवास

शनिवार को शनि अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर, इक्यावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तेल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

गायत्री मंत्र

इनके लिए शनि के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु शनि के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहता है।

शनि गायत्री मंत्र– ऊँ भग–भवाय विद्महे मृत्यु–रूपाय धीमहि तन्नौः शनिः प्रचोदयात्।।

ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर ये जातक शनि का ध्यान करें, मन में शनि की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

नीलांज्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।

छायामार्तंडसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

ग्रह मंत्र

अशुभ शनि को अनुकूल बनाने हेतु शनि के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान दो सौ तीस माला का है।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनयै नमः।। जप संख्या 23000।।

ग्रह यंत्र

शनि को अनुकूल बनाए रखने हेतु निम्न यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चन्दन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले या काले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

मूलांक – भाग्यांक 9 हेतु

अनुकूल देवता :

ऐसे जातक मंगल ग्रह की उपासना करें अथवा हनुमान जी की उपासना करने से इनके सभी प्रकार के अरिष्ट दूर होंगे। ये प्रति मंगलवार एवं शनिवार को सुंदर कांड का पाठ किया करें। साथ में हनुमान जी के मंत्र का नित्य एक सौ आठ बार मूंगे की माला पर जप किया करें। हनुमान जी का मंत्र इस प्रकार है। 'हं हनुमत रुद्रात्मकाय हुं फट्'। मंगलवार को एक समय भोजन करें तथा चने एवं मिष्ठान्न का प्रसाद हनुमान जी को अर्पण करने से इनके सभी कार्य बनेंगे।

व्रतोपवास :

मंगलवार को भौम अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। यह व्रत पैंतालीस मंगलवार या कम से कम इक्कीस मंगलवारों को करें। लाल वस्त्र धारण करें एवं लाल वस्तुओं का दान करें। यथाशक्ति मंगल के मंत्र का मूंगे की माला पर जप करें।

गायत्री मंत्र :

इनके लिए मंगल के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु मंगल के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

भौम गायत्री मंत्र ऊँ अंगारकाय विद्महे शक्ति– हस्ताय धीमहि तन्नौः भौमः प्रचोदयात्।।

ध्यान मंत्र :

प्रातःकाल उठ कर ये जातक मंगल का ध्यान करें, मन में मंगल की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत–कांतिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह मंत्र :

अशुभ मंगल को अनुकूल बनाने हेतु मंगल के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान सौ माला का हैं।

ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।। जप संख्या 10000।।

ग्रह यंत्र :

राहु को अनुकूल बनाए रखने हेतु निम्न यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप–दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

अंकों के देवता जपादि तालिका

अंक	देवता	धातु	रंग	दिशा	वस्तुएं	धान्य	पदार्थ	मंत्र	जप संख्या
1	सूर्य	स्वर्ण, ताम्र	भूरा, पीला, सुनहरा	पूर्व	लाल वस्त्र, केसर	गेहूँ	घृत	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	7,000
2	शिव	रजत	श्वेत, हरित, काला	वायव्य	शंख, कपूर, श्वेत चंदन, श्वेत वस्त्र	चावल	दही	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	11,000
3	विष्णु	स्वर्ण	चमकीला, हरा, गुलाबी, जामुनी	ईशान	हल्दी, पुस्तक, पीला वस्त्र	चना दाल	घृत	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	19,000
4	गणेश	शीशा	नीला, खाकी	नैर्ऋत्य	कंबल, सात अनाज, उड़द नारियल	खिचड़ी	तेल	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	18,000
5	लक्ष्मी नारायण	स्वर्ण, पीतल	खाकी, श्वेत, चमकीला	उत्तर	साबुत मूंग, कस्तूरी कांसा, हरा वस्त्र	साबुत मूंग	घृत	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	9,000
6	देवी	प्लेटिनम रजत	नीला, आसमानी	आग्नेय	मिश्री, दही, श्वेत चंदन, चावल, श्वेत वस्त्र	चावल	दूध	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	16,000
7	नृसिंह	अभ्रक, सप्त धातु	श्वेत, हरा, काफूरी	नैर्ऋत्य	सप्त धान्य, नारियल, शस्त्र, धूम्र वस्त्र, खिचड़ी	सप्त धान्य	तेल	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	17,000
8	भैरव	लौह	गहरा नीला, काला, ककरेजी	पश्चिम	सरसों तेल, काला वस्त्र, उड़द	उड़द	तेल	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः	23,000
9	हनुमान	ताम्र	गुलाबी, गहरा लाल	दक्षिण	लाल वस्त्र, केसर, रक्त चंदन, ताम्र	मसूर	घृत	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	10,000

मूलांक के अनुसार भिन्न – भिन्न मूलांक वालों को शुभ दिन, मास तथा शुभ तारीखों का कोष्ठ चित्र

मूलांक	स्वामी	जन्म तारीख	महत्वपूर्ण दिन	महत्पवपूर्ण मास	महत्वपूर्ण वर्ष	अनुकूल रंग
1	सूर्य	1, 10, 19, 28	रविवार, सोमवार	21 मार्च से 28 अप्रैल एवं 21 जुलाई से 28 अगस्त	1, 10, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73	भूरा, पीला, सुनहरी
2	चन्द्रमा	2, 11, 20, 29	रविवार, सोमवार, शुक्रवार,	20 जून से 27 जुलाई एवं 21 अप्रैल से 21 मई	2, 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74	सफेद, हरा, अंगूरी, काफूरी
3	गुरु	3, 12, 21, 30	गुरुवार, शुक्रवार, मंगलवार	19 फरवरी से 21 मार्च एवं 21 नवंबर से 21 दिसंबर	3, 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75	चमकीला, गुलाबी, हल्का जामुनी
4	हर्षल	4, 13, 22, 31	रविवार, सोमवार शनिवार	21 जून से 31 अगस्त	4, 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67, 76	धूपछांह, नीला, पीला, भूरा मिश्रण
5	बुध	5, 14, 23	बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार	21 मई से 27 जून एवं 21 अगस्त से 23 सितंबर	5, 14, 23, 32, 41, 50, 59 68, 77	खाकी, सफेद, चमकीला
6	शुक्र	6, 15, 24	मंगलवार, गुरुवार, शुक्रवार	20 अप्रैल से 27 मई एवं 21 सितंबर से 27 अक्टूबर	6, 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69, 78	नीला आसमानी
7	नेप्च्यून	7, 16, 25	रविवार, सोमवार	21 जून से 27 जुलाई	7, 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70, 79	हरा, सफेद, काफूरी
8	शनि	8, 17, 26	शनिवार, रविवार, सोमवार	21 दिसंबर से 20 फरवरी	8, 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71, 80	गहरा भूरा, काला, नीला ककरेजी
9	मंगल	9, 18, 27	मंगलवार, गुरुवार, शुक्रवार	21 मार्च से 26 अप्रैल एवं 21 अक्टूबर से 27 नवंबर	9, 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72, 81	गुलाबी, गहरा लाल

डॉ यूनाइट क्रॉस के मतानुसार
भिन्न – भिन्न भाग्यांक वालों को शुभ दिन मास तथा शुभ तारीखों का कोष्ठ चित्र

भाग्यांक	शुभ वार	शुभ मास	शुभ तारीख
1	रविवार, गुरुवार	जनवरी, मार्च, मई, जुलाई और अक्टूबर	1, 10, 19, 28
2	सोमवार, बुधवार	फरवरी, अप्रैल, अगस्त और नवंबर	2, 4, 8, 11, 16, 20, 22, 26, 29, 31
3	मंगलवार, शुक्रवार	मार्च, मई, जुलाई, जून, सितंबर और दिसंबर	3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27, 30
4	बुधवार, सोमवार	अप्रैल, फरवरी और अगस्त	2, 4, 8, 13, 16, 20, 22, 26, 31
5	गुरुवार, शनिवार	मई, जनवरी, मार्च, जुलाई	5, 10, 14, 19, 23, 25, 28
6	शुक्रवार, मंगलवार	जून, सितंबर	6, 9, 15, 18, 24
7	शनिवार, गुरुवार	जुलाई, जनवरी, मार्च और मई	7, 14, 16, 25, 28
8	सोमवार, बुधवार	अगस्त, फरवरी, अप्रैल	4, 8, 16, 17, 26
9	मंगलवार, शुक्रवार	सिंतबर, मार्च, जून	9, 15, 18, 24 27

12. अंक विद्या और यंत्र

पाश्चात्य ज्यौतिषियों ने ही अंको को शुभ या अशुभ माना है यह बात ठीक नहीं है। अनादि काल से कुछ अंको या अंकों के समूहों को शुभ मानने की परम्परा भारतवर्ष में चली आ रही है। सेफेरियल नामक अंग्रेज ज्यौतिषी ने लिखा है कि 9 वर्गो को 9 कोष्ठों में निम्नलिखित प्रकार से 'पूर्णता' का प्रतीक है देखिए (अ) (ब)

(अ)

4	9	2
3	5	7
8	1	6

(ब)

3	1	9
6	7	5
2	8	4

(स)

8	1	6
3	5	7
4	9	2

सेफेरियल के विचार से यह पूर्णता अथवा ईश्वर का प्रतीक है। यद्यपि अंगरेज ज्योतिषी इसे शनि से सम्बन्धित मानते हैं किन्तु भारतीय ज्योतिष के अनुसार यह (स) 15 का यंत्र अनेक काम तथा आपत्ति निवारक प्रयोगों में किया गया है और विधिपूर्वक अष्टगंध स्याही से भोजपत्र पर लिखकर सोने, चांदी या ताँबे के ताबीज में बन्द कर शरीर पर धारण करने से अनेक शुभ प्रभाव दिखाता है। इस सन्दर्भ में पंचदशीतंत्रम् में निम्न श्लोक में 15 के यंत्र को बनाने का विधान दिया है।

चन्द्रनेत्रे तथा वह्निर्वेबाणरसास्तथा।

मुनिनागग्रहा ज्ञेयाःपस्ञ्चदश्यास्तु मध्यगाः।।

पंचदशी के महायंत्र के मध्य में 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 ये नौ अंक इस पंचदशी यंत्र के मध्य में ये योजित किये जाते हैं।

पंचदशी यंत्र

6	1	8
7	5	3
2	9	4

उपरोक्त पंचदशी यंत्र अति प्राचीन है, हमारे देश में प्राचीन काल से ही पंचदशी यंत्र को दीपावली पर दीवाल पर लिखने की परंपरा रही है। इसे दुकानदार दुकान में, गल्ले में तथा तिजोड़ी पर शुभ लाभ लिखते हुए बनाते हैं। अतः सेफेरियल से पहले भी इसका प्रचलन था और चूकिः सेफेरियल ने यह विद्या भारत आकर किसी महात्मा से सीखी थी उसी का उसके ऊपर प्रभाव रहा। हिन्दी तंत्रसार, मंत्र महोदधि, मंत्र महार्णव तंत्रराजतंत्र, यंत्र चिन्तामणि आदि प्राचीन पुस्तकों में यंत्रों के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। नीचे सभी ग्रहों के यंत्र दे रहे हैं। जो कि पंचदशी यंत्र से प्रभावित हैं। पंचदशी का जो यंत्र है वही सूर्य हेतु धारण करना बताया गया है। अन्य ग्रहों के यंत्र

एवं शास्त्रानुसार इन्हें बनाने की पद्धति किस अंक को कहाँ लिखना है यह बताया जा रहा है।

' **रसेन्दुनागा विलिख्य धार्य गद–नाशनाय वदन्ति गर्गादि महामुनीन्द्रा** '

अर्थात् इन यंत्रों को धारण करने से रोगादि उत्पाद शांत होते हैं, ऐसा गर्ग आदि महा मुनीन्द्रों का कथन है।

चन्द्र यंत्र– नगद्विनन्दा चन्द्रकृतारिष्ट विनाश्नाय धार्य मनुष्यैः शशियंत्रमीरितम्।।

अर्थात् चन्द्रमा जनित पीड़ा को दूर करने के लिये इस चन्द्रमा के यंत्र को धारण करना चाहिये।

मंगल यंत्र– गजाग्निदिश्याथ भौमस्य यंत्रं क्रमतो विधार्यमनिष्टनाशं प्रवदन्ति गर्गाः।।

अर्थात् गर्ग ऋषि कहते हैं कि जब गोचर से या अनिष्ट राशि या स्थान में होने से मंगल अपनी दशा, अन्तर्दशा में पीड़ा करे या सन्तान कष्ट, रक्त विकार आदि मंगल जनित दुष्प्रभाव हों तो इस मंगल के यंत्र को धारण से लाभ मिलता है।

बुध यंत्र– नवाब्धि रुद्रा विलिख्य धार्य गदनाशहेतवे वदन्ति यंत्रं शशिजस्य धीराः।

यदि बुध जनित रोग, पित्त प्रकोप, चर्मरोग, व्यापार हानि, मित्रों से विरोध आदि दुष्ट फल घटित हो रहे हों और उनका कारण बुध ग्रह का अनिष्ट प्रभाव हो तो बुध के यंत्र को धारण करें।

गुरू यंत्र– दिग्वाणसूर्या शिव विलिख्य धार्य गुरुयंत्रमीरितं रुजा तद्बुधाः।

अर्थात गुरू गोचरवश या महादशावश रोग आदि कष्ट कर दे रहा हो तो इस यंत्र को धारण करने से शांति होती है। गुरू बृहस्पति को कहते हैं।

शुक्र यंत्र– रूद्रांग विश्वा भृगो कृतारि विनाशनाय धार्यं हि यंत्र मुनिना प्रकीर्तिता

अर्थात् मुनियों ने कहा है कि शुक्र जनित पीड़ा को दूर करने के लिये शुक्र का यंत्र बहुत उपकारी है।

शनि यंत्र– अर्काद्रि विलिख्य भूर्जोपरिछार्य विद्वत् शनेः कृतारिष्ट निवारणाय।

शनि के यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर धारण करना चाहिये। शनि के महाप्रकोप से कौन त्रस्त नहीं होता ? शनि की साढ़ेसाती किसे परेशान नहीं करती ? अनिष्ट शनि की दशा, अन्तर्दशा तो मानहानि, द्रव्यहानि, शारीरिक क्लेश, मानसिक त्रास, अनेक व्याधि उत्पन्न करती है। उसको शांत करने के लिये अंक विद्या, यंत्र विद्या का आश्रय लेना उचित है।

राहु यंत्र– विश्वाष्ट तिथ्या विलिख्य यंत्रं सततं विधार्यं राहोः कृतारिष्ट निवारणाय।।

राहु जनित पीड़ा को दूर करने के लिये सदैव राहु यंत्र को धारण करना चाहिये।

केतु यंत्र– मनुखेचर भूपा विलिख्य यंत्रं सततं विधार्यं केतोः दुःखनाशकराः।।

केतु जनित पीड़ा को दूर करने के लिये सदैव केतु का यंत्र धारण करना चाहिए।

अंग्रेज ज्योतिषी जिस यंत्र को बहुत ही थोड़े शब्दों में बताते हैं, वही बात हमारे प्राचीन ग्रन्थों में सुस्पष्ट और विस्तृत रूप से मिलती है। हमारे प्राचीन ऋषि–मुनियों ने कैसे यह ज्ञात किया कि इन अंकों को इस क्रम से लिखने पर विशेष शक्ति या प्रभाव उत्पन्न होता है। इसका रहस्य समझ से बाहर है। उनकी यौगिक शक्ति और से इस प्रकार का ज्ञान संभव था। हम तो केवल उनके चरण चिन्हों का अनुसरण करते हैं और अंक विद्या से लाभ उठा सकते हैं।